मूमल

लेखिका

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

रावतसर

प्रकाशक

राजस्थानी संस्कृति परिषद्

जयपुर

पाँचो संस्करण
सन् १९६१

दाम ७)

मुद्रक
मैथमस प्रिंटिंग प्रेस
जयपुर

राजस्थानी मामूली फरक सूं एक ही भासा री है। इण भासा ने आज रा गुजराती 'प्राचीन गुजराती' रा नाम सूं बोलै राजस्थानी है ने जिणस आ प्राचीन राजस्थानी कवि। राजस्थान रा जालोर रा कान्हडदेप्रबंध जको जालोर रा हीज एक कवि री रच्योड़ी है वा गुजरात में बी ए० रा कोर्स में पढाई जावै। गुजरात वाळा इण भासा ने आप री प्राचीन गुजराती मानै। वास्तव में पन्द्रहवीं सदी सूं पैंला राजस्थान अर गुजरात रो सामाजिक अर सांस्कृतिक सम्बन्ध एकाकार हो। अंगरेजां रै आयां राजनीतिक ढंग सूं यां ने अलग करया सूं ये आज न्यारा न्यारा व्हीया। सिंध अर पंजाब सूं ही राजस्थान री सीमा अड़ै। रात दिन रो आवणो जावणो हो। आज सिंध रो थरपारकर रो घणोकरो हिस्सो रहियां सूं जोधपुर राज रा ही अंग रहयो हो। अठै अबै ही राजस्थानी बोली जावै। जैसलमेर वाली सिंधी भासा रा घणा ही सब्दां नै काम में लावै। उत्तरी बीकानेर वाली पंजाबी रा सबद घणां मिलै। सीमा मिलै जठै सूं सबदां रा मिलणा कायदा री बात है। ये सब छूटां थकां ही यां वातां में ठेठ राजस्थानी भासा है। आपां राजस्थान में ई सुणां सूं की कूवां तक यां रा प्रचार है। मिल्योड़ी मिल जाही जावै। विशेष विशेष वर्णां री बोली रो कैयां में लिखावट में थोड़ो घणो फरक पड़ै चाहीं यां री आत्मा अर सरीर में कोई फरक नीं।

म्हारी कलम सूं लिख्योड़ी ऐ वातां जो पोथी में छप री है यां री पूरण गरीमा है वा तो राजस्थान री धरती री उपज है भासा अर भाव विभूति मातृभासा राजस्थानी री सम्पदा है। म्हारी कलम अर म्हूं तो निरमाणा रै मूं ढाई यांने राखणा मे निमित्त मात्र हूं।

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

पहली संस्करण
सन् १९६१

दाम ४)

मुद्रक
मेजमस प्रिंटिंग प्रेस
जयपुर

राजस्थानी मामूली फरक सूं एक ही भाषा री है। इण भाषा ने आज रा गुजराती "प्राचीन गुजराती" रा नाम सूं बोले राजस्थानी ई ने डिंगल या प्राचीन राजस्थानी कैवे। राजस्थान रा जालोर रा कान्हड़देवरी ख्यात जका जालोर रा ही एक कवि री रच्योड़ी है वा गुजरात में बी० ए० रा कोर्स में पढ़ाई जावै। गुजरात वाला इण भाषा ने आप री प्राचीन गुजराती माने। वास्तव में अट्ठारवीं सदी सूं पैंला राजस्थान अर गुजरात रो सामाजिक अर सांस्कृतिक सम्बन्ध एकाकार हो। अंगरेजां रै आया राजनीतिक ढंग सूं दो नै अलग करवा सूं ये आज न्यारा न्यारा व्हीया। सिंध अर पंजाब सूं ही राजस्थान री सीमा अड़। रात दिन रो आवणो जावणो हो। आज सिंध रो नगरपारकर रा थलोकरा जिको सदियां सूं जोधपुर राज रो ही अंग रियो हो। अठै अबै ही राजस्थानी बोली जावै। जैसलमेर वाली सिंधी भाषा रा घणा ही सब्दां ने काम में लावै। उतरी बीकानेर वाली पंजाबी रा सबद घणा मिलै। सीमा मिलै जठै सूं सबदां रा मिलणा स्वाभाविक बात है। ये सब म्हनै थका ही यां कांठा में ठेठ राजस्थानी भाषा है। भाषा राजस्थान में ईं पूरबा सूं भी गूधा ठक यां रा प्रचार है। लिखणोड़ी मिल व्ही जावै। विशेष विशेष जगां री बोली रो कथा में लिखवा में थोड़ो घणो फरक पड़ जावै। यां रो आतमा अर सरीर में कोई फरक नीं।

म्हारी कलम सूं लिखयोड़ी ये बातां जो पोथी में छप री है या री रूप परीमा है वा तो राजस्थान री धरती री उपज है भाषा अर भाव विभूति मातृभाषा राजस्थानी री सम्पदा है। म्हारी कलम अर म्हूं तो जिरमाना रै सूं डाबै मौन साधना मैं निमित्त मात्र हूं।

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

राजर्षि महाराज चतुरसिंहजी का परिचय

राज्य कुलों में वैभव के बीच विलास के उपकरणों के मध्य पोषित होकर भी कई व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टिकोण को अपनाकर भक्तरूप में संसार के सामने आए हैं। राज्य-मुकुट के स्थान पर वैराग्य के गेरुए रंग में रंगे वस्त्रों को ही उन्होंने पसन्द किया है। महात्मा बुद्ध इस श्रेणी के परम श्रेष्ठ व्यक्ति हैं इसी प्रकार राज-जोगनी मीरा को भी रंग महल की शय्या अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर सकी, वृन्दावन के वनों की गली-गली वहीं सांवरा "रंग राची" का सन्देश कहते हुए पवन के साथ फैली रही।

भक्तमाल की रचना भी सिंहासन पर बैठे-बैठे एक भक्त-राज ने कर डाली थी।

उन्नीसवीं शताब्दी ने भी राज्य-कुल में एक भक्त कवि को उत्पन्न किया जो जीवन भर, विलास के कुल में जन्म लेकर भी मीरा के समान गाते रहे। उनमें योगी की सी निष्ठा भक्त का आत्म-समर्पण कवि का हृदय साधक का स्वर और राजपुरुष की मर्यादा थी। मीरा के स्वर में अपने उपास्य को प्रेम-पीड़ा सुनाने मीरा की धरती पर ही और मीरा के ही वंश में मेवाड़ के राज्य घराने में उन्होंने जन्म लिया,—

वि० संवत् १९३६ को महाराज चतुरसिंहजी का जन्म करजाली की हवेली उदयपुर में हुआ। इनकी रुचि बचपन से ही आध्यात्मिकता की ओर झुकी हुई थी। अध्ययन का इन्हें जबरदस्त शौक था। संस्कृत हिन्दी गुजराती मराठी अंग्रेजी तथा उर्दू का अभ्यास इन्होंने उक्त भाषाओं में लिखे ग्रन्थों को पढ़ने के लिये कर लिया था। आध्यात्म विषय पर लिखी पुस्तक कदाचित् ही आपके अध्ययन से वंचित रही हो। हिन्दू धर्म के वेद-वेदान्त शास्त्र उपनिषद पुराण तो आपने पढ़े ही पर अन्य धर्मावलम्बियों का धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये बौद्ध, जैन ईसाई, सिक्ख मुस्लिम-ग्रन्थों का भी आपने अच्छा अध्ययन किया। आपका पुस्तकालय था जिसमें अनुपम पुस्तकें थीं।

आपने अपना जीवन योगाभ्यास में तथा पुस्तकें लिखने में ही बिताया। आपने कई पुस्तकों की रचना की जिनमें से कई प्रकाशित भी हो गईं तथा उनके कई संस्करण निकले। उनमें से कई ये हैं। कई अभी तक अप्रकाशित भी हैं।

गीता मेवाड़ी समश्लोकी भाषा में
योग-सूत्र (राजस्थानी तथा हिंदी टीका सहित)
चतुर-चिन्तामणी (राजस्थानी में)
मानव-मित्र रामचरित्र वार्ता (राजस्थानी में)
महिम्न समश्लोकी वार्ता (राजस्थानी में)
अलख-पचीसी-वार्ता (राजस्थानी में)
दुर्गा-अष्टपदी वार्ता (राजस्थानी में)
काव्य-प्रकाश

भूतां प्रेतां मांत रा विषय माथै लिख्योड़ी है। देवी देवता पण ठिकार मूत प्रतां री सूवर माहुर रा मगरां री सिकार करती मांत री कई किस्सा करीजै जो बरणन वां बातां में घणो विस्तार सूं करीज्योड़ो है। सूवर नै एक सूरमा रो प्रतीक मान सूवर अर सूअर री बातचीत में एक वीर पुरुष रा मन री इच्छा री अर विचारां री तसवीर मो लेवी है। बाळापणियां री हिम्मत री बातां चोर अर ठगां री चतराई री बातां घणी सुहावणी है। चोर अर ठगां घणो घणी सफाई सूं आप री कला रा हाथ बताया घणो रोचक है। अरजण सांपरिया चोर री घणी बातां माथै। एक सूं एक बढ़िया चालाकी अर चोरी री तरकीबां री।

पन्नां रो ही टोटो नीं। घणी घणी पन्नां होरी है के सूळ पै मचल्यो माथै। चमत्कार वतारिया सेठ साहूकार, पशु पंछी डरप्या जीमल्या सांगणा चोखता इन्दर री परियां टापरा री बातां वगैरा पढ़ी है के बारे पार नीं। बरम नीति री बातां ने ही घणी मनोरंजक बणाय दीधी के सुणनां चोरणो नीं चावै।

सूरवीरां री अर रणगढ़ां री बातां कैंवतां जैंवतां तो राजस्थानी थके धाप्या ही नीं। वीर रस रे सागै रो सागै शृंगार बातां प्रेमी प्रेमिकावां री बातां रा तो खजाना भरया। ए बातां घणी मनभावण है क्यूं कि चित हरणावण वा रै कैवा रो ढग है। कैंवा रा ढंग घणा जानदार चटकदार अर सुहावणा है क सुणणा वाळो सुणतो हीज रै जावै उठणा रा चीत नीं करै। वा बातां रो बरणन मनिर्धा मजब रा है बात चाई कैंव विस्तार उतार द। कोई बात रा कहण्यो कै अर बात बणावै नीं बखत सुणणा वाळा नै सूं नाम बातें हुआ लोक में तरा मिला

हां। एक पल मैं हुंकारौ, दूजा पल मैं रोवणौ आवै तीजा पल मैं रीस सूं भ्रूकटियां खींचण लागै। वीरता रो बरणण करै तौ कम कम ऊभौ व्है जावै। एक दांव तौ कायर री हाथ सूं तरवार री मूठ ई छूट पड़ै। प्रेम री बातां सुणतां कौ सुणणियां बाळा बतराम री फूलड़ियां व्है ज्यूं ऐंठा ई जावै। एक जणौ बात कै बठै जणो हीं सारै हुंकारो देवणियो चावै। हुंकारा बिना बात नहीं फीकी लागै नंगारा बिना फौज।

'बात मे हुंकारो फौज मे नंगारो'

बात सुण करणा रा न्यारा न्यारा ढंग व्है। कोई बात सुणणूं करै

बातां हुवा मामला दरिया हुंदा फेर
लांबिया कहै उतावळी दे दे दूसर फेर
केताक नर सोवै केताक जागै
जागतां रै पागड़ियां ढोल्यां रै पागै
रूपलां री पागड़ियां धार गुड़ां मे मागै

बात ईसी एक पूरी कळा है। बात कक जणो कदे कम पड़ना रा दूसरां मैं ई करै म सूं डाकै रागै बाप बातक देस रिया हां। बात रा बखत ही बाप व्हे बारो न्यारो न्यारो पाई बो बखेणो करतो जावै। एक पल में नां ता बा ढाळणी री लाई बाबड़ हुंगाळो पंच पूगाड़ा बोल दियो हो दूजै ही पल सुं ग बारीकुमा नगर पे बंधी कटार लेबणा मैं हाथ मेलता दीसै बात रा बरताव उजार रै मांई पूरो अभिनय करते।

सीयाळा री रातां गांवां में धूणी बाळ दे धूणी रै चारूं मेर दाना बूढा जुवान मोट्यार, छोरा छापरा सगळा भेळा व्है जावै तापबो करै। गांव रा दाना बूढा आपा मिनख डीगा घावै उपरै बैठ जावै एक मोटा डीया पै बात कैवण्यो ही बैठ जावै पछै पछै बात री रात आधी बापर नी पड़ ।

म्हारे पिताजी देवगढ़ रावतजी विजैसिंघजी रै बात कैवण रो सोक सैणो ही हो जो किणी रो रहण सहण ई अडंग रो हो। धूणी बरसरा रै मायनै म्हारे मठे हा बात कैवा वाळा रैवता मोर हो पुगी भाखो करता। म्हारे मठे रैवा वाळा में एक तो मूळजी रावत दूजा मोरजी बडवा बसी ठाठदार बात जमाता के कांई कैवणा। हुंकारो वाळा दूहा कवित्त पूरो पिरथीराज रासो मूं ई याद जाणो मी एक बाजो चाकर। वां री चाकरी बात कैवा री ही। सांझ पड़तां ही रोशनी रा मुजरो करतां ही बात जमती म्हा सगळा जणा भेळा व्है बैठ जाता। एक जणा हुंकारो देता दाना बूढा हाथां में माळा लीधा बीचै बीच माथो हिलावता "वाह भाई वाह कांई कही बात" री दाद देता बात रा मारग मैं धूर्णा कर देता। सियाळा में सिगड़ी भरी ताप भर भरै धाम आती धाप बापनी रैती। सुणवा वाळा विगाम ज्यूं बैठा सुणता रैता। चौमासा मैं झरमर झरमर छांटा पड़तां मस्ता मर्द मै म्हारे पिताजी हुकम दिया करता "आसरा उम्म री बात कैवो।" आसरा उदम री बात जमती मारै मारै दूहा रा चटकारा लागता। एक तसवीर खिंच जाती पावणा नै हाथां में थाम लिया है गोरा हलफनाय लिया है हाथी चरखाय दिया है दगा बिना युद्ध धूम किया है। चटारियां घोड़ियां नै नाचती यूं निपज री है वारी मरोका में धू

मैंदी रा रच्योड़ा हाथ मिळ्या है। सुणतां सुणतां डोकरा हुक्का री नैच ने छोड़ डाढ़ी पै हाथ फेरवा लागता। श्रोता रोमांचित व्हे जाता म्हां टाबर आंख्यां फाड़्यां आप रो आपो भूल जाता।

यूं तो वात कैवण्यां री कोई खास जात नी। कैव जाणे वो ही कैवे। पण रावळ मोतीसरा भाट, चारण राणीमंगा ढाढी मंगणियार सरीखा जात कौम में वात कैवण्यां ज्यादा मिळे पीढ़्यां सूं याने वातां जबानी याद व्हेती आवें। एक नी अनेक छोटी नी मोटी मोटी वातां सैंकड़ा दूहा सुदी याने जबानी याद रे। अण्णा पढ़्या नी पण करामत मारो महारो जबरजस्त के कांई कैवो। वात रे सार्रे मौका मौका पै दूहा बोलता जावे। यां दूहा रे बोलता जाणा सूं वात री रसवेद और ही चोगणो व्है जावे। परसण पै गावता ही जावे। छोटा छोटा बाळक एक एकलपू भरती रो साथर नी राखवा छपर काटवा ने जाय सूता जावे। वातां रा कैवण्यां मिणगरा ने राजा माराजा घाली इज्जत ने रोजगार दे सार रे घरे राखता। यां री घणी चूक ही सभा ने रीझवाने ने आपरी वस्ता वदाता इतिहास ने ख्यातां री जाणकारी वो यां वातां सूं घणी जागी व्हे जाती।

यां ख्यातां वातां री भाषा प्राचीन राजस्थानी है। पाड़ासी राज्यां री भाषा रा ही यां वातां में असर है। पंजाबी सिंधी गुजराती भाषा रा शबदा ने काम में लीधा है। यूं तो पन्द्रहवीं शताब्दी तक गुजराती ने

---

१ राणीमंगा एक जात व्है जो सिरफ राणियां ने ही ज वातां जात री वही में लिखवा रा पीढ़ीवार नाम मांडे। राजा माराजां सूं कांई नी लेवे। राणियां रा आश्रय रहवा सूं ए राणीमंगा बाजवा लाग्या।

समर्पण

राजस्थानी पद रा उद्धार करणिया
पूज्योड़ा भगत वर योगी
जगख्याता गुण धारणिया
जो राज महैलां सूं उतर जणां जणां रा मन मंदिर में बस गिया
ज्यां री पोथ्यां आज वांई मेवाड़ रा घर घर में
गीता भागवत ज्यूं बांची जावे
ज्यां रा बणायोड़ा भजन गांव गांव में मोरमीरां री नांई गाइजै
वां महाराज श्री चतुरसिंघजी री पावन पादपारी ने
नमो भाव सूं भेंट

भूमिका

मांयली राजस्थानी भासा राजस्थान री धरती पर इतिहास री नईं ही न सबद में लखदाखाव है। आपरा दौलत पर मींठड़ा अगरा गीरव उजागर है अनोखा परम मरी बलाओं पर बाजा है। राजस्थानी साम्य मो अगम बाबा है देस विदेस री बधी नवी भाषावां में राजस्थानी काव्य रो अनुवाद व्हीयो है पण अब लाम्बो ध्यान ही नी दीयो है वास्ते राजस्थानी गद्य रा धुप मोलां री आप में धामा बावें बस्ता माया नीं।

राजस्थानी बातां री नैमी पारदा बंश री अनोखी है। ई पोथी में म्हारी आधुनिक राजस्थानी में लिख्योड़ी ए मौलिक बातां नजर कर री हूं। राजस्थान री जूनी परंपरा अर इतिहास न इणरो राग में बातां लिखणो तो एक राजस्थानी लेखक खातर अनुभविक ही नी पण अणगांसणो भी मानें। राजस्थान री संस्कृति अर परंपरा अणरी मोल सू भरपाड़ है के कोई बात लिखें अर औमें दा रो परतबंध नी आवई तो वा बात राजस्थान सू न्यारी न्यारी अर अणहोणी लाग। राजस्थानी री तो एक एक आखर इतिहास है। बात बंधा रो पर निगरा रा म्हारो जुना कोड है। हाल ताईं अणरी बातां म्हैं लिखी है वै सगळी राजस्थानी संस्कृति अर राजस्थानी लोगां सू बण्योड़ी है।

राजस्थान में सूरमां अर सतियां ही न थी बठा रा वो बाड़ाबंदियां रा ही चरित्र रो दर्शो एक मजब लियो है। भारत में राजस्थान रो घणो महत्वपूर्ण स्थान है जिस्यो ही स्थान भारतीय भाषावां में राजस्थानी भाषा रो है। राजस्थानी रा एक एक सबद रे लारै एक एक इतिहास बोलै पीढ्यां रो परापरम बोलै।

म्हारी लिख्योड़ी बातां में सू चोखी सी बातां छिपवाणा रे खातै मेल री है। बां रा उपमान, उपमेय विशेषण विशेष्य चरित्र अर वर्णन शैली वगैरा सगळी राजस्थान री धरा री अर माटी री परंपरा री है। पंई, बां बातां रै गात भिन मांयनैं घरां में बोलण री भाषा में लिखी है। राजस्थानी में बातां केवा री अर लिखबा री परम्परा घणी जूनी है। राजस्थानी पद्य में लिख्योड़ी बातां अर ख्यातां सोळवीं सताब्दी सू मिलै। सतरवीं अर अठारवीं सताब्दी में तो बात केवा री अर लिखबा री कला बराबर तरक्की करती री घणो परचार व्हियो। बो बातां डींगळी चारणी भाषा में हजारां बातां लिखी थी।

आजकाले हिन्दी में जो कहाण्यां या गल्पां लिखीजै वांरी बहुती बंगाली अर अंग्रेजी भासा सूं लीनी है। बंगाली भासा में जो बातां लिखी गी वांरो ढंग सूधो अंग्रेजी सू लियोड़ो है। अंग्रेजी रै रिवाज बंगाली में ई तरै सू बातां लिखणी सरू व्हीगो बंगाली री नै अंग्रेजी री नकल हिन्दी में कीधी जद राजस्थानी बातां री शैली अर ढंग बिलकुल ही नष्ट अर जूनो है। मुख्य कथा री अंग गौण कथा रो आपड़ी बरणन करवा री प्रथा सबड़ी री नकड़ी साचली है कोई दूजी भासा री छाप कोयनी। राजस्थानी में तीन भांत री बातां व्है। एक तो गद्य में, दूजी पद्य में तीजी भांत री बातां गद्य पद्य मिल्योड़ी व्है।

नित्यानुष्ठान क्रम प्रयोग-पद्धति
दान षडश्लोकी सन्ध्यावन्दन-प्रयोग
तान्त्रिक त्रिकाल सन्ध्या-प्रयोग
सप्तशती न्यास ध्यान-विधि
पितृ-तर्पण वैश्वदेव प्रयोग
तान्त्रिक-गायत्री

गीता की कई विद्वानों ने ज्ञान-विज्ञान तथा पाण्डित्य पूर्ण नाना प्रकार की टीकाएं की है। पर महाराज साहब की राजस्थानी भाषा में की गई समश्लोकी टीका एक अनूठी वस्तु है। जिस प्रकार के छन्द में गीता का मूल श्लोक है उसी छन्द में राजस्थानी भाषा में अनुवाद प्रस्तुत बन पड़ा है जैसे—

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु॥

उसी छन्द में भक्त-कवि ने कितनी सरलता से अपनी मातृभाषा में कह डाला—

पवित्र गन्ध पृथ्वी में अग्नी तेज हूं म्हूं ही।
जीवां में जीवणो आप तपसी में म्हूं ही तप॥

बड़े से बड़े प्रश्न को इतनी सरलता तथा सादगी से ये निपट डालते या समझा देते कि साधारण ज्ञान व्यक्ति के लिये भी वह कोई रहस्य नहीं रह पाता।

एक दिन मीरां ने प्रेम विह्वल होकर प्रार्थना की थी,

म्हाने चाकर राखोजी
चाकर रहस्यां, बाग लगास्यां।
नित उठ दरसण पास्यां॥

यह तो मीरा की भावना थी हार्दिक कामना थी वह "चाकर" रहने को आकुल होकर बिलबिला रही थी उस 'चाकरी' की कल्पना के मीठे स्वप्नों में डूब रही थी। पर चतुरसिंहजी तो अपने उपास्य की 'चाकरी' में लगे हुए ही हैं। उनकी अपनी अनुभूति थी

म्हूँ तो छा थी चाकर थांका म्हूँ तो ठेठ जनम जनमां का
आज राज मीला रे म्हूँ तो थारा पायक लायां।

भीगे रंग में हुमराज पर सवार अपने इष्ट के पावन में [illegible] पैरों को पकड़ दौड़-दौड़ कर वे चाकरी बजाते जा रहे हैं।

मीरा ने "म्हाने चाकर राखोजी" कह कर नारी-हृदय को खोल कर रख दिया तो महाराज साहिब ने "आज राज मीला रे, म्हूँ तो थारा पायक लायां" कह कर राजस्थान की वीर भावना को अंकित करने की शब्दों में चित्रित कर दिया।

मुजरा मालुम नित करस्यां ठोकस्यां दो थमनां पर।
अलूरणा तू ही बागव थां मालण सब मदमां पर॥

ऐसा समार का परिचय है अगम इष्ट ना ? वास्तव में बन्दाज में ही इन अन्तःपुर की सूरमे ड्योढ़ी दरवाजा को जानने वाला ही इन पंक्तियों को लिख सकता है।

राजस्थानी में इतने बड़े हुए क्या गद्य और क्या पद्य इतने मधुर इतने प्रभावोत्पादक हैं मानों अपनी आत्मा ही बोल रही है और उसकी ध्वनि कानों में गूंज रही है। गाफिल मन को चेतावनी देते हैं।

यूं कांई पड्यो पसरनै डावी धार कणी अवा[illegible]ावा री
कठै मसरली कठै पसरली कठै पागली म्हारी।
टिपर टैम,री बजर (बाज भी कटपी घाट टकारी॥
घर बांध यूं भीगे गाफिल रैन घणी दोरा की।
कई पगी में पड़ उतरली मा है रीत मठा की॥

सामन्ती घर में जन्म ले और उसी आचार-विचार में पल कर कुमार्ग की ओर सामन्तों को बढ़ते देख उन्होंने इस वर्ग का भविष्य उसी देख लिया था। बुरी सोहबत में फंसे हुए जो तीव्र शब्दों में फटकारते हुए पतन का चित्र उघार आंखें खोलने की चेष्टा की।

मनवारां में प्याला, बोला धारा कठै पूटग्या गोया।
धाजारोक्ष बोड़ स्वारथ री कोई बोन यूं खोया
कैन मतो यूं नाठ बपसो ई दांडा में रोया ॥२॥
समा समा, चैनां कर ले मर्म-मर्म कर बोया
बोण्णपणां में ऊवतो मिष ढक्यो मारग खोया।
डाठा टीटी कर मूंई पर, भारा बाब डबोया
बढ़ बिना बरसण विचारी पटक पछाड़ निचोया॥
राज-बरम में आड़ बीतरै राड़-बरम में बोहुला
बरमा नाम पकड़ी छाती पर दई मणी में दो पा॥

• • •

ममता रा सुभारा सूं नहीं है दुनिया रा सुभारा सूं मीठे ।
घड़-घड़ छोटी ममता में नाम मधा सूं भर दीवे
माथा में पाई समता। मिस नर में नार मिलाव मोड़े ॥१॥
सुपनपण के लिये सुरपण पण हुवो रे छम दीवे
हाथ-पसारे पाटा वांधे सुता रे धैवी दीवे ॥२॥
मात-पिता सूं करै दुवरप्पा नारी है निस-दिन दीवे
ई रवां रा ई वाचां रा पानां पास सदा रैवे ॥३॥
ई फांफल्या पंथ बनावै क हुवा पंथी मोहे
वैनत रो मन मन री पावै सुपनां री ममता दीवे
बल-बल करै बडाई मिन री पीरां री बल्ती दीवे ॥४॥
पाछी पाछ रात-दिन रै ई रा बी सूं रावी धोवे ।
पर रां सूं लो नई रैत्र मे वाहरमा री लाव लीवे
पुरष नाम पढ़म ने तोड़ करै नहीं पण ई दैवे ।

महाराज साहिब चतुरसिंहजी ने नारी का सदा सम्मान के साथ देखा तथा संबोधन किया। मातृ जाति के लिये सर्वथ उनका मस्तक झुका रहा। स्त्री मे उन्हें शक्ति दिखलाई दी। भूल हुए नारीत्व को फिर से प्राप्त करने के लिये उन्होंने बीर हुंकार भी की। आत्मबोध कराते हुए नारी के मुंह से उन्होंने कहलाया।

"वैनां थारा चोखो की हां।"

राजस्थानी कवि के कहे हुए, "निमण नार निचरी" की पुनरावृति उन्होंने नारीत्व को लक्षित कर धारण करती रहने पर भी उस शक्ति से मर्यादित नारी को स्मरण कराते हुए था।

"नारी हां तो कोई म्हीयो म्हें नारां री नारी हां"

हम नारों से (सिंहों से) उत्तम नारी (सिंहनियां) हैं।

वह तो नारी के उस स्वरूप को देखने के लिए लालायित थे अब आत्म विश्वास से ओत प्रोत हृदय उन्हीं के शब्दों में मातृ शक्ति ऊंचा मस्तक कर, पुरातन राजस्थान की वीर ललनाओं की भांति फिर से कह उठे,

सूरां पर जनमी हां मायां सूरां रैं परणी हां।
सूरां री जननी हां मायां पीछे ही पूगी हां॥

यह जिक्र करते करते एक घटना याद आ गई।

इससे स्पष्ट हो जायगा कि महाराज साहिब का स्त्री जाति के प्रति क्या दृष्टिकोण था?

उनकी पत्नी का युवावस्था में ही देहान्त हो गया था। वह एक बालिका छोड़ गई थी। महाराज साहिब युवक ही थे। यों ही उनका मन पहिले ही आध्यात्म विषय की ओर मुड़ा हुआ था अब तो उनका सारा समय ही वे पुस्तकावलोकन में काटने लगे। उनकी बढ़ती हुई एकान्त-प्रियता को देख मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा फतहसिंहजी को जो इनके रक्त-सम्बन्ध में नाना थे भय हुआ कि कहीं भतीजा वैराग्य ही न लेले। एक दिन महाराणा ने अपने पास बुलाकर आज्ञा दी— 'तुम विवाह करलो।"

महाराज साहिब पहिले तो मौन रहे फिर महाराणा के दोहराने पर हाथ जोड़ कर दृढ़ता से बोले

'थारो बखाण मरण करवारो है तो पुरुसाँ रो जस वारंवार भर जातो तो म्हारी सुगाई कांई करती ? या रंडापो काटती कै दूजो ब्याव कर लेती ?

समाज ने जो नियम तथा मर्यादाएं बनाई हैं उन्हें केवल स्त्रियां ही क्यों निभाएं पुरुष भी क्यों न निभाएं ?

उनकी दृढ़ता तथा सिद्धान्त की सत्यता को देख महाराजा ने फिर कभी उनसे विवाह कर लेने का आग्रह न किया।

उन्होंने पत्नी की मृत्यु को दैव का वरदान समझा और भक्ति-रंग में गहरे रंगते ही चले गये।

महाराज साहिब के काव्य पर विद्वानों ने समालोचनाएं की हैं अभी उनके भक्त जनों के मुंह से उनके लोकोत्तर कार्यों की व्याख्या सुनी जाती है।

उनके पदानुसार सरल पद-गद्य वाणी ने भक्ति योगमार्ग ज्ञान दर्शन, तर्क मीमांसा के साथ भी बड़ी सरलता से प्रश्नोत्तरों के द्वारा ही उनके समझा देने की महिमा तथा गुणों के वर्णन किया करते हैं। पर मेरे लिये तो उनके घरेलू जीवन की घटनाओं का जिक्र करना ही ज्यादा उचित तथा सहज है। क्योंकि उनके घरेलू जीवन का स्वरूप ही मेरे अधिक समीप है उनके बौद्धिक जीवन की अपेक्षा।

भक्त कवि चतुरसिंहजी रिश्ते में मेरी जीजी के देवर थे। मेरी जीजी महाराज साहिब हिम्मतसिंहजी की पत्नी थी। वे दोनों सगे भाई थे। मैं अपनी जीजी के यहां प्रायः जाती ही रहती। मेरी ही समवयस्का,

मौसीजी के चार बच्चाएं थी। हम लोग वहां साथ-साथ खेला करती। बहिनें कहती "बासो [काकाजी (हमें काम न रमां।" हम महाराज साहिब के पास जाकर खेलने लगती। उनके पास बसना बड़ा अच्छा लगता था वे बच्चों के साथ बड़ा स्नेह रखते हम लोगों के साथ मिल कर खेलने लग जाते कभी सतरंज की चालें सिखाने लगते। मोहरे के चमने के हाथ पर पीर ऊंट की तिरछी चाल नहीं सीखी। चौपड़ की गोटों को मारने के लिये हाथ में पासे लिये "पदवाँ पासा पौबारा सतरा के अट्ठारा" का हम सब सम्मिलित स्वर में पुकार करती हमारे साथ वह भी खिलखिला कर हंसते। आज भी उस समय का वह शुभ शान्त हास्य स्मृति में कभी कौंध जाता है तो प्रकाश की रेखा सी खिंच जाती है। रेजी (खादी) का कुर्ता ऊंची-ऊंची धोती तथा जयपुर की बनी देशी जूतियां वे पहिने रहते थे। आभा से दीप्त उनका मुख-मंडल आनन्द की अनुभूति से चमकता रहता। हम उस समय समझ नहीं पाती थी कि एक योगी भक्त कवि तथा दार्शनिक हमारे साथ खेल रहा है। हम समझती नहीं थी फिर भी बिलकुल ना-समझ भी नहीं थी। उनकी राजस्थानी में लिखी रामायण हम पढ़ लेती थी और इतना अवश्य समझती थी कि साधारण मनुष्यों से ऊपर वे विशिष्ट व्यक्ति हैं। उस समय के अपने ज्ञान के अनुसार हम लोगों में जिज्ञासा भी थी मस्तिष्क में प्रश्न-सूचक चिन्ह भी था। एक बार मेरी मौसेरी बहिन रामकु वर ने पूछा

"दाताजी सायर कु वर बीजी मरया जदी आप रोया ?"

सायर कु वर उनकी पुत्री थी जिनकी विवाह के उपरान्त मृत्यु हो गई थी।

महाराज साहिब ने सहज गंभीरता के साथ उत्तर दिया जो मेरे कानों में आज भी झनझना रहा है "आपछो म्हीजी । सायर कुंवर मरजी । म्हारो चोटो मनो संयम हो कोई हुवण्यो ।"

माँ तो उनकी भक्ति की बातें हुए सुनती थी और थोड़ा-थोड़ा मतलब का अर्थ भी समझती थी । हम पोल उनसे प्रश्न करती

'आपने भगवान का दर्शन कर्‌ ? आपने दरसण कर्‌ अठै म्हाने ई करावजो ।"

वे बड़े स्नेह और सरलता से हमें उत्तर देते—"हां देसोवा थांने भगवान दरसण दे जद्दी ये ई म्हानें ही करावं देवजी ।"

हम सभी विश्वास के साथ इस बात को मंजूर कर लेती । हम बहिनों की मानस में भोली मिलती आनन्द के साथ "कैसे मर्द प्रथम बहू सूचना [redacted] का अवसर किसे मिलता है ?

महाराज साहिब चार भाई थे जिनका बड़ा परिवार था । जैसा कि प्राय राजपूत सामन्त के घर होता ही था दोनों समय के भोजन में मांस भी बनता था मदिरा का व्यवहार भी होता था शिकार आदि के कार्यक्रम भी चलते थे । इस वातावरण में महाराज साहिब की जीवन चर्या देख हठात् मन-मस्तिष्क वाली उक्ति याद आ जाती है । घर में पत्नी थी । दो बालिकाओं का जन्म भी हुआ । गार्हस्थ्य जीवन का निर्वाह कर रहे थे । फिर भी निर्लिप्त रहते थे ।

राम का भोजन करते समय कभी-कभी हमारी पत्नी जनानी पोशाक घ घाघरा कपड़ी आदि पहिने इनके पास में बैठती । इस भांति की जनानी पोशाक पहिनना राजपूतों के प्राचीन सामन्त-युग में पीड़ित

रहा थी। रामकथा में दाम्पत्य जीवन की सरस झाँकियों की सृष्टि होती थी। मध्य-युगीन राजपूत वीरांगनाओं ने जो युद्ध भूमि में तलवार का जौहर दिखलाया था वह तो अब पर्दे और रूढ़ियों के भारी बोझ के नीचे दब गया था। फिर भी उस युग के ओज और शक्ति की धुंधली याद अब भी राजपूत रमणी के मानस में थी। वह अपने शयन-कक्ष की एकान्त में वह वीर-गाथा सुन कर उन शौर्य-भरी घटनाओं का अभिनय ही कर अपने को सन्तुष्ट कर लेती। पतियों को भी पत्नी का वह वीर-रूप रुचता था।

आपके इस लम्बे जीवन का सारे परिवार पर गहरा प्रभाव पड़ा। जिन अपनी भौजाई बहिनों का मैंने जिक्र किया है उनमें से दो तो आजन्म आध्यात्मिक क्षेत्र में तथा अपने काकाजी के साथ पर अच्छी आगे बढ़ गई। यों तो इनके परिवार में धार्मिक प्रवृत्ति पीढ़ियों से चली आती है। चतुरसिंहजी के पिता महाराज साहिब सूरतसिंहजी का जो कि मेवाड़ के महाराणा फतहसिंहजी के बड़े भाई थे भव्य स्वरूप मेरी बाल-स्मृति में प्राचीन ऋषियों के स्वरूप की कल्पना करा देता। धवल व मसनदी के ऊपर लहराती स्वच्छ धवल दाढ़ी बच्चों का सा सरल हास्य। कवि रवीन्द्र के पिता महर्षि देवेन्द्र का कभी चित्र दिखलाई देता है तो मुझे हठात् ऋषि तुल्य व्यक्तित्व वाले महाराज सूरतसिंहजी की याद आ जाती है। वह दृश्य भी बड़ा अद्भुत था जब बीसों बन्दरों से घिरे हुए, हवेली का चौड़ा जीना चढ़ने जाते और बन्दरों को रोटियाँ खिलाते जाते। चारों ओर बन्दर आगे पीछे उनसे रोटियाँ छीन रहा से रहा और पीछे पीछे बालक बालिकाओं का समूह इस दृश्य का आनन्द लेते हुए चलता। बन्दरों से निपट कर इस बाग

समूह को पुस्ती इत्यादि बांटने बैठ जाते ।

गुरु पिता के जीवित रहने तक तो महाराज साहिब उनकी सेवा करते रहे, उनका देहान्त होते ही जयपुर से उत्तर-पूर्व में सोलह मील की दूरी पर गलता ग्राम के समीप वाव में कुटी बना कर रहने लगे। पौराणिक इतिहास के अनुसार यह स्थान विश्वामित्र के पूज्य ऋषि का आश्रम था। इसी पावन स्थान पर बैठ कर ही संवत् १९०८ को पौष शुक्ला पूर्णिमा को आपको आत्म साक्षात्कार हुआ। इसी स्थिति में आपके द्वारा भजन पच्चीसी गुहिलाष्टक और अनुभव प्रकाश नामक पुस्तकें लिखी गईं।

राजर्षि ने १९९१ आषाढ़ कृष्णा नवमी के प्रात काल इस पंच-भौतिक नश्वर शरीर को त्याग दिया।

बीकानेर के महाराज पृथ्वीराज की भांति ही देह त्याग के पूर्व आपने भी एक पद बनाया जिसका अन्तिम चरण इस प्रकार है—

'चातुर" और चाकरी रो जग में अपनाय लिखो। वे ही चारी काम
जी।

फेरिस्त

मूमल

(राजस्थानी री मौलिक वातां रो संग्रह)

लेखिका

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

रावतसर

"मुगा री माफी। छोरी नासमझ नादान है। दीन दरसी रा बादसा रो हुकम नी मानैला तो की री मानैला। म्हनें समझावा देवावे। सवार वरमां में नाम पड़ू। हुजरत नीचे पधारे। म्हूं समझावूं।"

जैमरवा मां रे बेटी रनी ओड़ बारै निकळ लियो। जवाहर कंवळ ने समझावा लागी।

"थे सा थूं ही बाई दुखी है। गुजरात रो बादसा थने 'घम्मा घम्मा' कर रियो है थूं मिजाज कर री है। बाई लछमी ने ठोकर देय री है। भगवान टूटियो है वठ बादसा रो हुकम बजा गुजरात रो राज कर, सीव रा लाखा ने। बेटी ने पल्ला पीळा जिनसी में बडी बडी रा घोड़ा ही पावे।"

कंवळ बोली "थूं बाई म्हूं एक री व्हैसी। व्हैसी जिरी व्हैसी। थर्ई दुनिया रो बादसा व्हैतो म्हारे काई काम रो?"

जवाहर चिड़गी "एक री व्हैसी एक री व्हैसी कांई पण लगाय राखी है? थूं गवार री बेटी है। एक रो बुढो भी पैर राखियो है।"

कंवळ तमड़ती बोली "थारा बावरिया थई ने बावरियां थोर। म्हूं बां पैवती कोयनी। थूं कांकळ रा सामा री पवार ही बीरा नाम ई पासी कमर री के नी? म्हूं ही अरणा री बेटी हूं। एक रा नाम री कमर बाढूं ला।"

जवाहर बोली "मिनख तो देस। थर्ई तो बारियां री कंवर मेहर लिय थर्ई थो गुजरात री बणी। थी रा बस्या हूं रे ईडरा सदैसार है। मेहर री ईमत थो गुजरात रा थणी री मरजी बिना बांकड़ो कर के? थो मूठ मूठ बनामां करै रोज।"

सुणता ही कदक कमक थी माको सुणी बोली

मेहूरियो गम मत्थ किमो, सोम्हूरियो सिरदार
थे टीमरियो मादक, (तो) कोड़ कोड़ धिकार ॥

म्हूँ तो मसल मोन्हेरी मोहल्या माहर मे गळमत्थ कीमो है। पर्ण भी म्हूँ टीमरिया (मच बैसरिया) मे मादक छौ म्हने कोड कोड धिक्कार है।"

मैमदसा माळ में ऊभो मुमरियो म्हू ही माप धाक "टिमरियो" मफत सुण्यो तो मपक न मांमने मायो। वोता री फटकरियां मींमती बोलियो, "थारा पोम्हेरी मार मे सांमळ मु पड़ पीवरै म्हारू पारा मामे मी लागु तो म्हूँ टीमरियो।"

बी व मगत मवाहर मे हवेली मामा रो मीम दीवी। बंगळ में बी व महल में मंद दीवी। फतूमाजान मे इन्तजाम पै बीम बवाना रो पैरो मगावा रो हुकम दीवो।

मैमदसा दूजे दिन दायान, बनात रोशन बक्खर ससीम वस्ता वास लास मर्दां मे बुमाय मेहूरनिम न पकड़वा रो बीड़ो भेलावा न उठायो

यो बीड़ो मैम यो बारियां रो पहोपावे।

भड़ एक दूजा रा मु डो देखवा लागिया। जूनागढ़ तो मुरार मोमरियो पासनपुर न हैदर शाह मीधी बीजापुर पै ममीम रो मबजो हो ही व। मोम री बांमी में हाथ कोण मणी मुण हेरै? अमान सारो मांम्हो एक मजर म्हारू मू छ पै हाथ द मुछ मुमरो कर बीड़ा भेल्यो। सीतळा माता रै दिन माबरमती नदी में बमोलेड़ करवामे मुमाय परड़वारी ममाह म्ही।

साबरमती नदी पै मीतळा माता रो मेळो भरियो। बाहर रा मर मारी

मैला व्हिया। मैमदत्ता ही हाथी पर मेळो देखवाने आयो। मेळो देख नदी रै काम आमरियो वठै थियो बाप री महलात में उतरियो। नदी रा किनारा रै मेहम बन रिया मेहमा रा खजा पौसाा नदी मार्थ मुस्करिया। नदी री छटा देख मैमदत्ता बोलियो "राज रो दिल तो अठै ही रैवाला बंबलो करावांला। वा हवेलिया बाग बीच घू ठ पाछा मैला आवजावो। आई केहर सुणियो है वां री पाछा दीह हो। राज वारी वक्तैड रैवांला। पाछा मैला आवजो।"

कंवरजी बीजवा रै बैठ्या कठरे में जो मैमदत्ता रो बुलावो राज ही दियो "झट पधारो बीजा री त्यारी है। केहरसिंह पूरा बीजिया री बीजिया झट बोले चढ़िया। कटाव रै साथ कंवरजी मेटा रै मह आया। कारिया री होली बोवा आय बोह न केहरसिंघजी रै दूरवा री तारीफ रो दूहो दीवो केहरसिंघ री मकरी नै दुवरियो जिवने हरख ही भी घूप वणिया।

मूम सत्ळ पावस गळ पाळ पाग पड पोय
केहर झूलो मझूड़ी झूरे हररा न कोय ॥

दूहो सुण मैमदत्ता माथो धुणियो। केहर नै धकेला आया देख बीच राजी व्हियो है वो ही चोखो व्हियो हमेला सांवजी चवदी लार्ये रै वो राज मार्थे भी आया।

मैमदत्ता बोलियो "आवो बंबलो करां।" दोई पगां हाथा चोटी कर पाणी में उतरिया। दुसरा मरजीवाम सूं दूपने पाणी में पड़िया। मेळ रा दोरा नाम व्हिया।

पारव वो निकालोरो ही भी न। पाणी में केहरसिंघ सूं दुबकार करता नामो ढ़ारा देरा लामो धरूजरा लामो। केहरसिंघ आपी वा वळ देव भी वा ती सराई है। रीत में राज पारव सूं अपरवा लागिया। पाणी

मैं मचाका मामवा मागिया । कोई तैर कोई बळ युद्ध रा १
भापमा भाठा कोई पवान कोई रीस मैं मरियोड़ा । बाजम बाम क्रैरिया
पू कारा मारदिया । पाणी री ममरमच्छ मिळिया । साबरमती रो पाणी
मळ मजाय गियो । उठग पछ गुळग पड़ै मुजकी मार मई मास
पकड़ै ग्राय दूरा बाय निकळ । पाणी रा हिलोळा पाय रिया ।
रुकरां सूं पाणी गदळ रियो । बल्लूम रा बाक दाव बळ कांड
कांटा बाक मेह कांड केड बाक एक दूजा नै नपायरिया । मारव सरीर
बळ में सो केहरसिंघ बो सू सनीव हो पण पाणी रो तैक उमनीव ।
मारव रो सांस भरणियो केहरसिंघ एक हाथ सू बाथो पकड़ दूजा हाथ
सू मामा में मुक्का मारता माया । मारवजी पछाट बाम बाम पड़ियो ।
केहरसिंघ बी मैं बीच में पास मुक्की मारी बी मैं बीच हवाम फू कारो
मारतो पकेमो केहरियो डू गर ऊपरे पायो ।

मैमरमा मीरो भी देख बाव सम्भाळी केहर को पूठ पै थापी दीबी
सावास मरदो मुणियो मरमो ही मने देखियो । ममती मारव री ही ।
दीयो जसमो भी पायो । कोई बात नी ।"

मंवर मैं पत्रम री कटी पैराव खोल दीबी । सिवगढ़ को पट्टो दीयो ।

मंवर भी हवेली बाय मोमजी सगमी मैं बाव री सारो बरणाव कियो ।
थांपबी बोलिया "ई मैं छळ है । मारव ने मारवा बाळा मै कटी
सिरोपाव मू दीमा मायरिया है ।"

निपट कठी दूगों मर्मे बीतो सिमू मो मार

मेनमी बहियो "सिवगढ़ री पट्टो देवमो पाळ है । मामव में पाय मै
ही ती सिमत मरे । बाम रा मोम मे पाय मंवरो बपै हवली रा
मोम में पाय मवकर हाथी मांवटा मै करै दीवा रा मोम में पाय

मूमल

परंपो बर्ड । मैं पड़पंच सारा कोमळ री बात रै ओळखिया है । मर्दं धारयो ऐलो ठीक नी । मरे बाबा री काणे सीख मांगतो ।"

दूजै दिन नवार की सीख मांगी । मैमदसा बीगो एक पाय दम न बाळो । रहम रै दिन पाय पाणी । रावळा रा चौक में बाय राखी । बना धाणा पसर र मुजरा ने दीवान कर दीना । छमछमा दीना मनू ही इशारो सूँ मेहर रै हूट पड़्यो पण कबरदार कोई मारु मत करजो । जीवता ने पकड़ लीजो ।

धेवती सांपनी ने मारे बीना मेहर पायो । "अमामा पाप है मोत सांप मान्न ने मेवो भो मारे डोडी रै ढेठे यू देवतो मैमदसा मेहरसिंघ रो हाथ पकड़िया रावळा में नाखियो ।

फिरै डोडी रै पास मैमदसा पाय लवाय ने पापरा हथियार उतारिया मारे मेहरसिंघ ही उतारिया । हथियार उतारता ही डोडी री सांकळ लागगी । मैमदसा बोलियो

"नूं बापु दूरता ने मैं पचार बापु ।" नाव बड़ बापसी सांकळ बड़ ऊपर रा सम्प दे बड़ मैमदसा ललकारियो

"पकड़ो पकड़ो मेहरसिंघ बाबा नी जावे ।" बवाल हुए बत्या । मेहरसिंघ पहेमो । व मदारा बणा ठोक बिरधिया । मल्लयुद्ध ऐसा नाखियो । दुम्मी रा हाथरा ही सेना में प्रवीण मेहरसिंघ बखाणण खोल दू राजन ने मार पछाड़ियो । एजबक देवलणाय धमरत्ना ने पछाड़ियो । बपो घोर रो युद्ध बीनो पण पहेमो नरतो नाहैं । मेहर ने पकड़ मोड़ री अंधीरा में बगड़ दीजता में बड़ दीनो ।

मैमदसा बखत ने नाय बीमता में बीना मेहर ने बगाय गुपाला नाखियो

"कैद कीदो ? थारो प्रतम सोन्"री पींजरा में पड़ियो है। ईं नाहर पै ही म्हूं गुमान करती ? यो साम्हुरी थारो घर रियो है। थारे केहर पांखिया खोस, पठीने म्हांक। मूंडै तो बोल चीम म्हूं बंधती है थारी। छूटणों चावै तो कंवळ ने कै थारा मूंडा सूं कै म्हारो हुकम बजावसी। बोल कठांजरा बारै निकळणों है तो पड़ पगां।"

कठांजरा में मचमचाय न केहर बोलिया

"थारे जिसा म्हूं कठांजरा में हूं पटरे हूं ही दुनिया री हवा खायसी। जिं दिन पींजरा बारै निकळियो थनै चोर में पोहाय दूं ला। यो तो कठांजरो है पण म्हारा वास्ते किसो ही कठण नीं। ईं में तोड़ न निकळूं ला। जो थनै नीचक री मोत नीं मारियो तो म्हारा बाप रो बेटो नीं।"

मैमरदा बोलियो "रस्सी बळगी पण बळ नीं गियो।"

पींजरो उठाय कंवळ रा मैहल कनै मेलाय दीयो कंवळ री नै बंदीगत में देखबो करे ज्यूं।

केहर तो मनमन मीपा कठींजर में पड़ियो। नीं खावै नीं पीवै नीं मांस छोले। वी री या मन रैस कंवळ री मनपम मय सोयसी। भायरो जाय मैमरदा ने दिया कंवळ भूखी तिसी बैठी है।

मैमरदा चामियो बठै ही मंवळ मर नीं जावै। वी ने केहरसिंघ ने खाय पीमाया री इजाजत दीधी। कंवळ हरराय जीमण बणाय कठींजरा कनै गी। केहर तो पांखियां मींचियां सूतो। थनी मनवारां कीधी हीमत बंधाई पर पांखियां नीं उघाड़ी। कंवळ बोली

गंमरण मद भर मंज डाढ़ाळ भंजण हकूर
पंजरण मिंदारिया पूज किसो न चोपे केहरो।।

पहोंचो बाई। थे पड़पच छोरा कंवळ री बात में भेळिया है। थारै पांवणों रैणो ठीक नीं। थारै आवा री काल सीख मांगसो।"

दूजै दिन कंवर जी सीख मांगी। मैमदखा वीजी एक वार रम न जावो। दसम रै दिन फाग रमी। रावळा रा चौक में फाग रमी। सगा घणा धारा पगड़ा उ गुमानां ने तैनात कर दीवा। समझायां दीवा मू ही इसारो नी मैहर नै टूट पड़जो पण अणरहार कोई बात मत करजो। चीवता ने पकड़ लीजो।

खेलती सांमजी ने सारै सीधा मैहर आयो। "अणाणा फाग है थारा सांप बाल्ला ने हेरो जो थारे होळी में बैठे। यूं कैवतो मैमदखा मैहरसिंघ रो हाथ पकड़िया रावळा में नाखियो।

सिरै होळी मे धाप मैमदखा धाप बसत ने आपरा हथियार उतारिया सारे मैहरसिंघ ही उतारिया। हथियार उतारता ही होळी रो सांकळ लागयी। मैमदखा बोलियो

"यूं आयू हुरमा ने मैं पकार आयू।" मास पड़ लागजी सांकळ बाद ऊपर रा बाप्प नै पड़ मैमदखा ललकारियो

"पकड़ो पकड़ो मैहरसिंघ आया नी पावै।" कयाम हुर पड़िया। मैहरसिंघ पकेमो। मै मगरा घणा रोळ किरविया। मस्तपुड़ खेला लागियो। सुग्नी रा सतारा ही सेना मे प्रवीण मैहरसिंघ रव्यातम सांच हू रावण ने मार पछाड़ियो। रावळ देवनसाय सम्बरसा ने पछाड़ियो। थपो और रो सुद दीदो पण मवेसो कन्यो नाहि। मैहर ने पकड़ लोह री जंजीरां में जकड़ पींजरा में कर दीवी।

मैमदखा वचन ने साथ पींजरा मे घालिया मैहर ने बगाय गुपारा नाखियो

मय तो भो छोड़े भो मसाण साय कीधो कई के मठ री या सामन री हत्या कीधी वहे। थें तो य कम हुये कतरा ही मनुखां ने मांगिया है। थु मन्न मघु छोड़ दियो है ? अठ मुछ मरोड़ थारा कोम ने पूरा कर। मैमरखा के कीचक री मौत मारवा रो प्रण थे कीधो वो प्रण प्रण ने सजियां पूरो किस तरै करैला ?

अरे केहर, थनें म्हां सवरां बिना सिखाई कीरो काम थई पड़ियो है। तलवार रा धार विस्फोट रा पूरा ताव न छिविया के कर काम आवेला ? दूरवा री वठा में थु मजरंग रो मवतार है। ईं य मवतार रा किमा ने दूस मैमर ने मार थारी परतिपिया पूरी कर।

कामम सुणतां ही केहर मुछ पे हाथ दीधो 'धाणीं मंसा जरूर आवु ला किमा रा कांपता दूर न जावु ला।

कंवर जी ने कीमाय कंवळ ही कीमी। केहर ने माय कीमाया साक दो महीनां री कब्बळ मैमरखा सु रवा मांगी। वो महिमा रो कोम ने मैमर इजाजत दीधी।

कंवळ कीमाबानें पाछे वर बारे निकमतो का सम्मानूत करे। पैरा बाला कडूनाया ने हुमा मठी ने मठी ने कर बातां में मरजायें।

"माय ममावस री रात है मूं कंवर जी माड़ी ने आवु। हुमां दो घड़ी ईं कडूनाया ने यु विसवाय ने तो मठीमो काम मूं करलु।

दूमां बोली नवीन रो। कडूना ने तो मूं मठी ने करकना भी हु। माती माती रे वो ता यु ही हाथ बोड़ पमां री पूज पानिया रे मपाये।

माठी दाटण कोम हू पांवर यो परदाट

मदमस्ता हाथिया री बब उतार देतिनी आदाबो सूवरां ने हाकर न मारीयो सिकारिया रा मुण्ड में पकाय देतियो मेहर घाविया मोत रोये म्हू की है ?

कंवर की तो भी चोप्या वा भी चोप्या। कपड़ा मे मोच नाखी भागरी दासी दूला ने कहियो

"अब काई करां ?

दूला बोली पांता रा कैवा सू मैं भी काई आमजी चेतसी थांने हौमत बंधावे सो म चोखी।"

"बापजी ने कैवाया किया ?" कंवळ सोच में पडी। दूला बोली "हूं री फिकर मत करो छमना भाई ने खसता देखावे बापू ना पर भी रे सारे समाचार पे ब दूला पर संभाळ मूं ला। कंवळ राजी व्हैगी 'ठीक है।

• • •

छमन डोडी पे आयो कंवळ दूला ने नास्तो देवणे कहियो। दूला रसोवड़ा में जाय पकवान्यारी का बास्तो भर भट जाय छमना में बास्तो पेमायो दीधो भी म्हू छमना रा हाथ सूं कागज ने मुट्ठी में दबायो। रतन रावत बांच देहर बर्ने थी।

"बापजी गमली चारई चरमी नजर चराई है।" ला सुणता ही मेहर चमको गोमी "कई है ? सूल नायो ?"

कंवळ रतन बांच सुणावा लागी। तेजसी बापजी लिखियो

थर्रे कुणल देहरी थारा कुंवर पृथ्वीराज ने थारी मात बन री मावड़ मरा में हांच तहुनाला में घालियो घाविया ने लड़ी चढ़ाई। उण हालत में ही पृथ्वीराज मन भी छोडियो जीभी ने मार न गरियो। थे मन म्हू घालियो ?

मन हो वो छोड़ै वो मसाण काम कीयो व्है के गढ़ री का कामण री हुक्म कीधी व्है। थें तो पेमल इणी कतरा ही छछुंदा में मांगिया है। थू मन्न क्यूं छोड़ दियो है? उठ मूंछ मरोड़ थारा काम में पूरा कर। मैमदखा ने चीतल री मौत मारबा रो प्रण थें कीयो वो प्रण मन में हविया पूरो किण तरै करैला?

थारे मेहर, थनैं म्हा सतरा विद्या सिखाई जीरो काम नहीं पड़ियो है। तलवार रा वार विपोट रा पूरा दांव थ सिखिया है वद काम आवैला? दूजा री मदद में थू मकरंद रो अवतार है। ईं थ मसाणता रा किला में घुस मैमद ने मार थारी परतिग्या पूरी कर।

कामज सुणतां ही मेहर मूंछ पै हाथ दीयो "राखूं मया अकर आवूं मा जिणा रा कांवरा घुर न आवूं मा।

कंवर जी ने कीमाय कंवळ ही दीधी। मेहर ने साथ कीमाया साफ रो महीनां री कमळ मैमदखा सूं रजा मांगी। वो महिना रो कौल ले मेमद इजाजत दीधी।

कंवळ कीमायानैं पाछे घर बारै निकळती वा सल्तामूल करे। वींरा माळा पहुंनायां ने दूजा घड़ी ने घड़ी में कर मूंछा में वरमावैं।

"मान अमावस री रात है मूं कंवर जी वाड़ी में जावूं। दूजा दो घड़ी ईं पहुंनायां ने थूं विसमाय ने तो वडीनो काम मूं करूं।

दूजा बोली "अर्पीन रो। पहुंना ने तो मूं घड़ी में सरदवा नी दूं। पाछी आती रे वो ता थूं ही हाथ जोड़ पगां री धूड़ पांखियां रे लगावैं।

माटी दाम्य बीम दू पांवर यो परहाट

सामनी बेठसी बैठिया वां सू बाय मुजरो कीधो। दोई जणां समझीस्यां केहर नै डमो देख सकराय गिया। दीठ न छानी रै समायो भट मिलरापक कीधी।

"केहर थारे बिना काळजा रा केहर, कंठणरा सू पजब पड़न मापी।"

कहरिया बिन काळजै करे जिसा करतूत
मसत कठांसर हू उडर पायो गजब ममूत ॥

कठो सो महो किम सरे मामा ?"

सारी बिपत मांड न सुणाय केहर बोलियो

"कागा सा मैलो धर्वे गठै बाबा। सभी जणा ठाडी पडै बैठ मुजरान रा बोला था। मैमर मे साढा सू एम दिन मीं बैठया था।"

महमी कहियो 'काहरियां रो पट्टो तो बमाय न मिलसियो। सवार रा मातां बिस्ता रा साथी मेवाड़ रा मंगरा में जाय रयां। वठै सू घोड़ा मांड़ा मस्या घोड़ा मांड़ा के साथी दुयरात मे हिलाय रा मगरा में रेय ने घोड़ा करां के बरसां ताई मारणी बानो थानें।

बीनू पणा मनमा बोला पीर महरमशाह रा दरबाजा पूगतां रै मारें मारें निकळगिया।

निकट पहाड़ां में खेला कूप चाळ थापा। भीलां रो मुखियो यांने मपायत कीधा। भीलां रा दुपमठ पाल मुखिया गांमा रै हेठै। बीरा बिना हुकम रै पत्तो नी हाल।

माने कहियो 'मूं थर म्हारा दुपमठ पाल रा भील रावळी चाकरी में। हुकम रै सारे भाषा हाजर है।"

काम पड़ तो काळा नाग ने कील दूं पजूणो तो बिचारो परभाटो सांप है। नाग री जैर पोट म भाई है' मबाक छाय फजूमा ने पासू।" मुमख

कजळ केहर रा कटपीजरा जम वाप। रांघळी में सूं एक कटारी सर रेती काड मजर सीधी। पुणी रैं सिमकी नपके ज्यूं केहर रेती सीधी। कटारी ने हरख छाती रै लगा"।

'साबास कजळ साबास।"

रेती सूं पारा नाम काटिया। कटपीजरा रा कपाटां रा फाट फाट दरका दीधा।

कटपीजरा बारै निकळतां ही नाम पटकारियो। कपोट कम "जै जै बजरंग' कर वन्द देनिया।

महारसी दूजा भाई "कजूमिया ने थोन नलायक बापणी हूं। पोवरी में महाक बारणां री नोतरा समाम दीधी है। मपीता पार पधारो। भाई मटको सी।

केहर बजरंग री स्तुति कर

महावसी मारुत वेग वीर मपा पुत्रो पय महावरोरं
पाहिमाम गोतम पुत्रो पूता देवाधि दवो रघुनन्दन पूता।

पोतरा में थानिया। पोतरा रै नीचे पाणी री बावड़ी भरी "जै जै बजरंग बली" कर बावड़ी में तीन वाण ऊपर सूं दूदियो। बावड़ी सूं निकळ दिना रा पोट मार्थ वह न कहगिया। नीचे पाणी री भाई है एर मरकटा में धरगियी। ए बारी रात छांटा छिड़को केसरियो बान में मामुना रा मना हेठे वैगो मदर में बळगियो।

।

बागमो चेतमी बैठिया थां सूं बाथ मुजरो कीधो। दोई जणां समर्थोंरा केहर ने ठमा देख बकराम सिया। बीच न धाणी रै सणामो सट मिठरावट कीधी।

"केहर मरे बिना काळजा रा केहर, कंठजरा सूं गजब ढहण पाम्यो।"

केहरिया बिन काळजै करे जिसा करतूत
पसल्ल कठोजर हूं उडर, पायो गजब सपूत ॥

कैंयी तो सही किम हरे मामा ?"

सारी विगत मांड न सुणाय केहर बोलियो

"काका मा देवा पर्छ बढे बाबा। पछी जथा ठठा पछै बैठ दुसराण रा बीड़ा दो। मेवाड़ नै ताता सूं एक दिन भी बैठवा दो।"

नेठही कहियो 'काहुणियो रो पहो की अमाण मे बिलसियो। बवार का मांरा बिना रा साथी मेवाड़ रा मंगरा में जाय बसो। पछै सूं बीड़ा मांडा बस्या दोड़ा मांड़ा कै पाणी दुसमण नै हिमाय का मगरा में रेख नै दीठा करां के बरसां ताई आपणी बातां चालै।

दोनूं जणां जम्मा बोढा पैन महलपनाह रा दरवाजा सुणता रै मारै मारै बिलळियिया।

बिगट पहाड़ां में ऐठा बहुण पाळ बाबा। बीमां रो सुणियो पाले बणायण कीधां। बीमां रा दुसमठ बाल सुणिया गांमा रै हेठै। बीमा बिना हुकम रै पणा नीं हाण।

नाथे कहियो 'म्हूं थार म्हारा दुश्मठ पाण रा बीज राखटी चावरी है। हुकम रै मारै बाबा हाजर है।"

कंवर री रोवा मांडिया। रात बिरात साही बाजा नै बाप खडकावै। चांदेसर दैमीलसार, बिरादरां में वेवियार नी मेले। बीको मिलै पछै ही मारै पाछो जाय बहूण पाख पै सोवै। पाछो फिरतां आपणा भाई बन्धा सूधी पैरो देवै। पर्थ जगां दूंकिया बैठाय दीधा। बाहुरिया रा पड़ मैं मूवो बलाल बोलकै। गैले चालतां साही सवारां रा बीच बड़के। सारी गुजरातरा मेहरसिंह रा नाम सू कांपै। बलाल रै घर मेहर रै बीच रोज भड़ाका मार्वं। मेहर रो घोड़ो कोई एक बलाय हो। हाथियां रा होदा पै डाकतो ही रैतो। इसकीज ही बात री फिरत में पिटियोड़ो भी पटियाला रा बाया पोल रै मुकाबला मैं पाली गुजरात में बाजो नी। वो घोड़ो मेहर री राज मौत रीसा मतरै भी रा दीस रोकणियो कोई नी। बा लोच बलाल भरिया दरबार मैं बोलियो

"जो कोई मेहर रो घोड़ो ले आवै वो पट्टो उमराव रो पावै।"

अठै ही कंवरजी रो डोली धीरिया ऊभो सुण रियो हो। वी बड़ाबड़ो मूं कहियो "घोड़ो म्हूं ले आवूं ना पण पट्टो उमराव रो मिलणो चाहै।"

बलाल हां कीवी।



मेहरसिंह मामजी लेजमी ने सारै बीती बातां में नियमिया। बाहुरिया रने बिरदा ने बाया तो कंवरजी ने बात पार्ई। "आप ऊजळी मारेज है। मामापुरा देवी रै थोक दे आवूं। पा पावो म्हूं आयो।"

सेलजी बोलिया "थोक दर्शा ही सफरा कर पाछा आप बळदा।"

मेहर मामापुरा रा डिवर मैं आय थोक दे बाहो निकळियो पुजारी

भी मे देखियो तो दौड़ परमारी रो दारू माग दीधो। परमारी रो दारू पांच मेहर पीवतो ही विहयो। पीवता रो नसो धायो।

मठी मे पीरियो दोनी निकळियो दस कंवरजी भाका वाता काम रिया है।

पीरिये मट मुमराज रेय विरवायो

"मेहर कवर, वे थाज मुका पे पासमान तोन राखियो है। सारी मुमराद थारा नाम सु पूर्ण मना जमामियो थंम गजाड्या वे।"

कंवर पांच रिपिया वयस घोड़ा मे मुराम रै मार्थ बढायो। पीरियो तो माड़ो फिर सोरठो बोलियो

> महण गुम्मर भर मोम, मेहर तिमगळ रूप कर
> जवना तणो जहाज, मळो हळहळो मोमवत ॥

मुमराद रा समंदर में तिमंगम रो रूप कर जवना री जहाज मे भीम रे वैरे मेहर हळमळाम दीधी है।

सोरठो मुणता ही तो कवरजी घोड़ा मे मोड़ियो। राजी व्हे बोलिया, "माग मांग।"

पीरियो बोलियो "थारो पीवड़ो पाळा फिरे। बाप! बगसीस करै तो ई घोड़ा री कर।"

कंवरजी तो दूणी मस्ती में उगर घोड़ो देय दीधो। पीरियो तो मट उगाळी नमाय घोड़ा पे रामपाळी।

मेहर बोलिया घोड़ा वाटी तरवार तो देतो जा।"

पीकरो घोड़ा रै एक लगातो बोलियो "कमर रै बन्धी है जी ने ही ले बेगा पधारो।

आ सुणता ही तो कंवरजी रो सारो नशो उतर गियो। अब उतर गई पछतावण रा सागर में डूबिया। बाहुरियो नजीक दुसमण छाती पै। घोड़ा बिना कठै जावे ? काई करें ? पलाण री मूरती बिगड़ा कंवरजी ऊभा।

पलपल में थारो कालतो डूमरजी आयो। कंवरजी ने देख मुजरो कीधो "म्हूं जाणतो साहजी हो। अब थे घोड़ा बिन आया थारो काल नेट बण। आप अठै बाहुरियां रा घेरया में बिना घोड़ क्यूं ऊभा ? काई बात है ?"

"म्हारी मत मारीजी। घोड़ो पीकरो खोसी लेगियो।

डूमरजी कहियो "कष्ट करो म्हूं ले जाऊं अठै पधारो। घोड़ी छीकरी हू बड़ो पूठे चली जगत है।"

कंवरजी ने थारा रा पूठा री जाजम में ले जाय छिपाया। ऊंन थलठे पीनारे जाजम ने छिपता देख लीधा। पीकर जाय घोड़ो दीधो। बाहुरियां रा घेरया में बिना घोड़ कंवरजी! कस्यो धीको पाछाने गई ? अतान घोड़ा नचाया। पीनारे जाजम ने छिपता री वारतिया देखी जबर जाय दीधी।

बगाल ने घोड़ा जाय थारा रा पूठा री जाजम में फेरी। ललकार दीधी

"निकल बारे निकल। मायने पीर क्यूं छिपियो क्यूं पैठियो है।"

पठाण मूछ पूछ देर तलवार ने बेठ्र काढियो।

बलाल मालो बाहियो। बार मे टाळ दै'र रो बचस केहर री माई लपक केहर ढोली तरवार री। बलाल रा दो बटका व्है नीचे पड़िया।

"बस बाप बस बाप" केवतां ही केहर री बोमी पे बमियोड़ो घोड़ो बर्मियो। पकड़ लगाम देतां ही पायड़ा में पग घोड़ा ने राना नीचे दीनो। घोड़ो पगां नीचे आयां पछै कांई? बलाल रा साथी केहर रै माथे टूट पड़िया बालो रा मचाका लागणा लागिया। वार बाचतो घर पाछो मारतो केहर घोड़ो कुदाय निकल आयियो। दूणखी पीकड़ा रा तरवार सू दो ढोल कर दी रो घोड़ो ले केहर रै मारे री मारे दपटियो।

सांगजी लेवती वणी वेर रा मायोड़ा पहुंचाय दिया। माला भांत रा वैम मन में घाय दिया। वैस तो मोहियाँ सू सवांवर व्हिया कंवरजी घाय दिया। पीठ में घाय लेवती माथो घूमियो। कोप में भर करड़ा बोल बोलिया।

क्रूम्झयो आतां ही अंगां आयो कट कन्न अंग
मह् मामो बहुणो निमल रगो टकसा रग ॥

घोळ रंगा कगळ चुवत, तंगां चुवत तुरंग
नग चुमत माहे रोमे, रगो टेबला रंग ॥

आवतां ही मन में मूंभियो। पन घम गटायन आयो। बाल बांम चर्न समझायो पण रती भर भी माने। रग है थारी जिद्ने।

'रतन में लपपच व्हेयरियो है। बकार नेमा घ मरतो मोहियां सू चुर्यारियो है। घोड़ा रा नख सू रतन टपकरियो है। थारी बार तरवार मोही बंमरियो है। रंग है जिद्दी थने रंग है।

भाभी सू माँग्यो पकरायोड़ो केहर जबाब दियो "थारा बोल म्हारे भाभा रे मूण ज्यू लागरिया है। म्हारे बाप म्हनें …। नै कोई भलां नै भली मढायो। मूँ मौत सू लड़ न आयो हूँ। थां भाभा ही बाप रै मूण तमाम दिया हो।"

बाबजी धीमा स्यूं बोलिया

यो सालिय सू धेकलो, जुलमो मूमल जमाम
पतग जैम दूद र पड़यो सड़पो न तज मूं नाम ॥

म्हारा बाप ! मू एकलो यो जमाम जुलमी घर बोयो। पर्वत ज्यूं यू दूर न बड़गियो। म्हारा नाम तज मूं यू भी सहियो।"

या सुणतां ही हूं मरती बोलियो

"ओ जुलमी जमाम मै उबारो जुलमी भलां मूमी एक पुत्र री बाला यू जबान न यो लायो है।"

सुणतां ही भाभजी घर गजमी रा मुंडा री घोर ही रंगत धावगी। हैसियो तो केहर रै डील रै घाव चोड़ा नजर आया। झट कोई जणा सुमरो घर नजर दीनी।

तीनूं जणां तो दुनराज रा डीला पीर ही ओर रा मत पीधा। बोलिया रो मन मूट भीनो रै ठैरे माही जाजां मूटे मरीजां रै बाटे।

जमाम रै मरणा री खबर मूण मैंगदमा रै लाय लागगी। इणी चोज रै वारिया रै वास्तै इन्तजाम करायो। जणां जणां बाजा रै बाणीरा र इनाम/ध्यार कड़िया। केहर रै बखत यी रै लाग रो धन्धो नार लावे जिण रै इन्तजाम हजार रो घर जिण न पकड़ावै जिण नै पचीस हजार रो पट्टो मिलसी। पाम चौकाड़ तक भी रै भोगणा।

सोवणा जाति रा भू जणा रै मन में लोभ आयो । बारेई मजलो बाजतो रैवै । कंवरजी रैती खाटे मिले जद घरै आपा री मनवार करै पण वै नी रैवै । एक दिन धुंधळा रा जापो मार मठी मे निकळिया । भुगगे-दुपट्टा पारचियां रा पगमंडणा बिछाया । पछी कैंव न मनवार कीधी । मामजी तो नटिया पण केहर मानियो नीं । जरै आप घोड़ सू उतरिया । मठी मे तो मां मे जीमणो चु ठायो करारियो मठी मे पांगा मे जहर भेळ दीधी । रिसाळो आय कोटडी रै बीटो दे दरवाजे ढेळो मारियो केहर सिंघ बारे आव ।"

तीनूं जणा हड़बड़ाय घोड़ा पै चढिया । भाला उठाय हिरणफाळ लगाई । पांगरा सूधी ढेडो पूर बारै निकळिया । पिण्ड मापतो देख भगराउ रिसालदार घोड़ो बढ़ायो "अरे केहर थे हिरण ज्यूं कांई भाग रियो है पाछो तो फिर । मरद व्हैतो एक हाथ बता ।"

सुणता ही केहर बाग मोडी एक पूराण में तरवार रो जोरो हाथ मारियो जो मसखड रो माथो धरती पै पड़तो ही नजर आयो । तीनूं ही घोड़ा उडाय भागिया लिया ।

मूमल रो सारो कडूम्ब भेळो व्हैगियो ।

"भरथार ! भरथार !! री बोलियां चाक लागी भरवणा लागी ।

मूमल री मां पेट कूटती बोली "म्हूने आशाभेष रै अपन ही नवरं पड़जाणी कै पत्थो गोडीजो म्हारी पेट में है तो हूं रो मार ही नी नेमती ।"

मूमल री भुजाई गुणगुणा लागी "म्हनें तो डेभरियां में ही खबर पड़ जाती ई रा माजना री तो बचिये मोड सु वारी रै जाणी पण ई बेनी पगलती ।

दाई बोली "म्हारा थां मूमल री म्हने खबर पड़ जाती तो समझियो थारी छ्ळी आपरी जगा ही मरा तक मन माय भरने परी मारियो मेलतो।"

•

•

•

कंवल मेमरया रे पछे जिता में तो रे पण ज्यू कंवल पाणी में रेवे ज्यूं रेवे। ऊपर थी रा दौरा सुख मन बणो हरखावे। जिता सू निरदय रा मनसूबा बणावे। अपना माई री सेन ने सुलाय नौकरी में राखी। बणो इनाम इकरार देव थी ने मरजीवाना में कोयी।

"बगासन थारा घर री म्हने एतबार है। कंवरजी ने कागज भलको है।"

बगासन बोली "कागज लिखो। आप रा बगास ने मंजू कागज री बगार लेर पाछो आवे।"

कंवल कागज लिख थी ने ऊपर लगाय चमोते थैली कीयो परछी लगाय बगासन रे हाथ दीयो।

कागज में लिखो "म्हारा कामदार मूमल। र थान अजमेर सू आमरी है। वा मुठी भी आवे भी थान ने भेजे थान अमरावार रा शहर में पधार जावो। पछे जलसान कीयो तो म्हारा मनोरथ पूरण व्हेला।"

अजमेर सू अमरावार जातरा जावे थी मार्ग एक मोटा बड़ला री छाया में पांच रजपूत हथियारा सू सजियोड़ा बैठिया। पांचू ही एक सू एक बणाया। अजमेर सू आगावा री बाट जाय री। बाट सू आवे एक बडी छाया री बाट देखण ने लाग्यो। बड़ला री छाया में वो पांचू सिरदारां

ने देख बठी पटकियो । आसीरवाद देय भई आप ऊभो । पेमा तो केहरसिंघ सगळ कायदो कीनियो पतराई सूं ठिकाणों पूछियो तो मौर नाम सुन मन राजी वियो । भी आ चढ़ी बीड़ सेठ ने कहियो 'आपां मैं केहर कंवर रो डर घणो है । म्हूं तो परदेस पै पांच सौ रजपूत लेयर आपो चालिया हा पण आर पांच सिरदार म्हूं प्रघार देख ने आयो हूं । पचास बरस री उमर बैस लीधी पण अस्या कठैं ही देखवा मैं नीं आया । वां रजपूतां मैं जाण मैं से लो तो केहरसिंघ रो आपां मैं रती भय नीं । वांने मारै लियां पछै माल लूट जावै तो म्हनै बठी ही मत जाण जो ।"

या सुण मनचो साहू बीर ने साथ वा सिरदारां रै पगां लगायो । बन मोहरा पगां मैं मेल बीर बोलियो 'म्हूं थ मदावाद परखाय लावो । वेंठा मैं केहरसिंघ रो डर है ।"

सेठजी बोलिया "अमीरो रै । म्हारै अठीया केहरसिंघ हाथ आवे तो सूरज आथूणों ऊगे ।"

बाल रै भेळामेळ केहर सिंघ प मदावाद में आय बढ़ियो ।

अंबड़ रै नामदार सूं बड़े अंडाजन बाल ने सीधी । आछी आछी ठवां धर्मशाला रा डेरा दीधा । दूजां सूं परा री हवेली आई बोरो देख सांगजी गोसमी सूं यो बात करली ।

सूं मड़ बाद मेमानां ने बधाई दीवी अंबड़ हुकम री तामील करवानें राजी है । पण मरज रूप है दस्तूर सारा हिन्दुवां रा व्हेला ।"

मेम" कहीं "अंबड़ कंवेला वसू ही करला । जो थाणैं कागज पै लिखाय ला ।

परज पगमां री पटर लिखाई १ माड़ा री समारम पे बम्बाक री बैठपां चाहे । २ मायनीय लोग अंगठीक बताया चाई । ३ चौड़ा री

पूगल

रात नीवळवाळो वार्ड। ४ मैला में माड़ पधारे जी। जपड़ मालमवाळी ठोपां हूबे। ५. पुन्यज विलम्यी में मारो रेवास व्हे। ६ म्हारी ओडी में पामा री कोई आसामीर नै रोक नी व्हे। ७. म्हारी वां म्यानां में पेई न पावै।

पैवरना पापर पड़ पारी कलमां नै वाबित कर दीनी। ज्योतिषियां नै बुलाय पूछ्यो पैरवारो मोरत ल्याओ। मोरत पारीका नव रो आयो।

मोरत रै दिन सारा पड़िया ल्यायो नै नवाजमो नै हुंता बवादर नै लेवा नै भली। पारी रैहरनिप ससरां सूं अजिमीड़ा मस छिपा बैठा। ओपां नै एक वाळी बदवाय चंवरजी नै म्यानां में बैठ्या री अरज कीनी। चेतनी हमेसी में ले पुन्याळ पवन दीनी मंवड़ नै बाद, उकरली पूर्व कर लेवा आवजो।"

ओपजी कहियो "नेमरवा नाम्नी पवाड़ है। सम्प रो मेपी है करती री मेरी है। मपरो अपरमो मनरो व्हे। कद हरिया पूर्ण पायोला जद पीओ तो पवन हूं आवेला।

पपी पपी म्यांवना लेन मंवर नै म्यानां में बैठायो मावा अफिमा नगाया। म्यानां रा उपाटया बाद ओडी म्हाफ ओडी बन्द कीवा। वाबवा होनां हुंता वेहर नै मंवर रा लिखा में दाखिल कीवा। मंवर रा बैना रा चौक में म्यानां नै उवराय सारां नै भीतर ओढ़ोरा किवाड़ां री भोवळ लगाई। वेहर नै पुन्याज विलम्यी में ले आप बैठगो। चंवट सम्पूं बातचा कीवा। वेहर फिर फिर लड़ाई रै नायक पणी हेनी मंवर नै बुलावा री पावत कीनी। मंवर री मन पर पुनी पाछो पड़ण री। भगवान कांई करसी।

जद मी मैमर पुन्याज में आयो। हुंता सामा सामा करती लाई पानी। रोक न मुजरो कीनी।

दूलो बोलो "हजरत री कमर खोलू । हथियार सवार ठिकाणै राखू ।"

मैमद सा नटियो "दरकार नीं ।"

दूलो बाद वारै हुकम दीधो "बादसा मैल पधारिया । म्हातसकानी छूटै तोपां रा फेर व्है ।

तोपां रा फेर रा धड़ाका व्हेवा लागिया न केहर कूद नै मैमदसा पै पड़ियो ।

दोई भिड़िया बाथै बीच भर जरासन्ध भिड़िया । घड़म धुरम मल्लयुद्ध व्हेवा लागियो । वां रा पगां रा धमाकां सूं धुम्मट धूजवा लागी । वां री डकार सूं कांगरा कांपवा लागिया । बठी नै तोपां रा धमाका व्हेवारिया । जिणसूं नै तोपां रा धमाका बारै धुम्मट मैं व्हेवारिया धमाकां रो पतो नीं लागियो । बारै आतम बाजियां छुट री, धुम्मट मैं घुरवां रा प्रहार व्हेवारिया ।

केहर न चालियो देख, कोकळ मैमदसा न ललकारियो "अरे टीमरिया देखी केहर री हामळ । म्हूं आई हूं ई लोग्हेड़ी नै मनै मारवानै ।

टीमरियो देखतां ही वो मैमदसा केहर नै छोड़ कोकळ नै मारवा नै लपकियो । अतरैक पाछा सूं केहर मैमद री टांग पकड़ लेवी । टांग पकड़ न पछाड़ियो वा मैमद रा साथळो फाटगियो । छाती पै चढ़ घोड़ियां सूं धूप म्हारियो । मैमद रा टाबर टाबर मोडियां सूं पोटड़ी भर धुम्मट री नीव पै नाखियो

"म्हूं केहर, ई मैमद नै मीचर री मौत मार कबजे नै आयरियो हूं ।" दूलो भट प्याला में केहर नै भर कबड़ नै बैठाय भायां नै हेलो पाड़ियो जवाहर बाई नै पाछा डेरे पधरावो ।"

चावती मयी हुकम देती थी की मैमदखां रो हुकम है भारी रात मयार धुमर्स
जाणो बारी चोबाड़िया चुप ।

घोड़ा कलियोड़ा डेरा में त्यार हा कमाल मे पूठ पाई डेहर बाजी डुना मे
सांचली बांध घोड़ा मे जहर पनाह रो हंडो डुवाओ ।

नागजी

लोगां री निजर आसमान साम्ही लागियोड़ी कठै ई बादळी निजरसी दीसै। गूरीमो पवन बाजै न बीजळियां में चासा चमक बाजै 'सूरीबी बाजिया है अब मेह आवैलो।" किणी ने पूछा में समोठ करती देखै तो घणै डोकियोड़ा आदमी नै बावळी करनै बतावै चिड़कलियां धूळ में न्हाय री है बरसा आवैला। आभा साम्ही आंखियां पसारी दुनियां ऊभी।

ताती बळती लूवां आयोड़ी बैठ लोही पीवै। मीठ मीठ पसाड़ पायो। पसाड़ सूं पगी पाछा ही। लोग बाजरी बीजण नै उमगाय रिया हा। आभा साम्हीं देखता देखता पताळ ई उतर गियो। सावण उतरता भादवियो। लोगां नै गाढ घणै ऊभो दीसणा लागियो। ढांढा भूखा मरणा लागिया। पीवा रा पाणी रा सासा पड़गिया। पांच पांच कोस दूरां सूं पीवा रो पाणी लावा नै ऊंटा री चीलकरी चाल री। आंखियां आग न परी में बाग लीपा। उधारो देवै नीं। जैं बाबा किण नै ई उधारा दे ई दे तो दूणी बाढी मांडे। निजरां रा भूखा चिड़ा सूं चीणा पड़रिया। लोग हाथ पै हाथ दीयां बैठो। काम कोई नीं आकास साम्हो भालणा पर राउ री बातां करणो। चोवटै दे बाळा रा घर रा मोटा मायं पांच सात जणा बैठ भारे पोतणा रोवता रोवता दे।

"पड़ूलियो काळ पड़सी।"

मुघम

"माज मुरीको काभियो तो ही भगवान करै भली तो हास नाई मोडो है।"

"बळजाणो मुरीमी एक घड़ी नीं काभियो र बमणियो।"

"एक दांण तो बरस ही ही। कोई कु बारी तो राड़ नी छेला।

"मैंपसो छोकरा डंकतो धाका तीज नै मुघम तो चोखा लिखा।"

चोखा कै बाळो बाजर हिमाळता बोलतो, मुघम चोखा छै र मारा छै। मन्न तो बाकै मंजमियो।

परभाते गहु डंबरा दुपैरा तपन्त
रात्यू बाजै बायरा, बैसा करा मघत॥

मैं समदा महनाम मन्न रा है।"

"सांची बात है बा पैंग पड़ता मार्यां तो दिन बहत्तर मार्यां। देसमो पूरा बहत्तर दिन लागैला।"

'बहत्तर दिन लाग्या तो मर जावांला थू ही मौत। बस मरण लाग ही मियो। रोज तड़ बो एक दो डांगर मरिया नीमर्ई। म्हारी मरर माय घाय डेनरिया बकरी। टक रो हेर माठ दुब देती हो।"

"म्हारी मूरी मोटी मोड। टेक दीवा। दो दैत रा बिमायोड़ीज है।"

मुघम बरता दुघ मोड़ा भी देवै। बै मयरी डेनरिया गइ मा।"

बाबा अर्दू माघु बम मैं बरतारा मैं चांवर मैं दगमा नै मरी ई चीमो थामी भी। धारा दाणियो चरियो है। सोई थू रमां वाछो वापै बरी दा म मो है बड़ बाठो, चारी दाणियां थू मांघु बट।"

गायां रै धांसियां सूं धोसू पवना री माम लेता ई मोटा मैं बैठियोड़ा समझ रै बीच मैं चमकवी चापणी । हुक्का री फूक खेंचती बापजे रै बाढ़ी बोलियो "मऊ तो मना ई मरसी । डामर मसाणन बाजसी औं मैं कोई । बातरा वैना निकळ आया बाजरी जिमावरा री नैर है ।

बाबा बूढ़ा छपड़ा ई हू कारो भरियो 'मऊ तो हालमा ई पड़सी ।

पाप धाप रै पत्ता मिनख मऊ काळजा मे गाव छोडण लागिया । कोई मऊ माळवे चालिया कोई मायरे सगा परमंगी रै गुवाड़ वाड़ी बायमा जाम बैठिया । बोवळरै मे ठा लागी पाटण मैं जमाणी चोखो । समाद मे मारवच बरसता निकळिया । घाटा काठा रै ठावै महाराजाजी मे समाचार भूलता "बैठो थो पोम सात महिना पाटण धाम आवा । म्हाराजोजी यावड़ रै रो सूनो निजर । माड़ा हेत । अपाजी रा पना भेस नावे करियोड़ा । बाबड़ोजी मनो घणी सिवी । समाचार दीसता जवान रै सारे मट भेजिया ।

धाम आयो थारो घर है । म्हाराजजी मीतरे थारो कमो है । गुवार लेणी पे दड़दार भर री है । नाळिया मैं पाणी मनोहर साव रियो है । बाड़ा ढोर चराव मौका रैला ।'

बोवळरै बाढ़ो वैना ई आगती कै पाटण सूं समाचार कोई आवेला । बाबा बूढ़ा जद राधिया हो हुक्का री फूंक नव हेलो पाड़ियो "आवजी ।"

हाथ दे पळतीगो भोखा बोवळा एक री बापड़ो धाम कमो रियो । नावर पाड़ड़ दार्ड दम बदव रियो बोड़ि घटी कदी डाळी कढियोड़ी मरीर । मावा दैं पैंडो निरा घाटा घड़ियोड़ा ।

मरे मायजी म्हाफर्ड बैना नाटण हालनो है । मैं वीनै घाटी बाबी

है। टीके ठीके गैसो काटणो।

बायड़ रा झटका रै मारे 'हो' कैतो बको नागजी जि मस्त बास सू बामरा मारो बी अ बास सू हाथा मे पड़लोआ है पछाड़ियाँ भाया रा बाथा मैं परौमिया।

• • •

म्यावड़ोयाँ बाप में बाप भास बांबसरै सू मिलियो। हीरा रै मुलक पर मांलिया मे मेहू बरिया पोळ में मेजाब बैठाया। नागजी रा माथा पै हाथ फेरियो। "बर्न मतराग भाटा ने देखियो। बांबळजी बाद है? ई रै गोर मैं गीसो जडी ई म्हारी मू छां पबर छाणी बो।"

कोई छोकरा हाथै हुनिया। नागजी री मुछां पबर न बचाई जैनू बमरत करै कै नी?

मुछां री मिजबियां बडी भयी। बांमळी नानी बायें मोह रै बड़ी गई। गळियोड़ी मुछां रेग राती व्हिया। पूर रै बाली दीयी।

रैबाने पर बताम दीयी। डावर बांबका मे बाको रैव दीयो। बाम करवाने मेव मनमळाव दीयो। नागजी गल म बाव दरै। बांबळरे घर म्यानरोयाँ छाता मे माथा बाम न बैठिया बाता रा बटकारा मारै दूसरा रा मटवारा लेवै।

दो' छोकरा 'प.छाया गो पाछणो दीनो बमडूतीम रा बचा ग।

नागजी री मामाई जिमोबबा करै, बाबा हूवे बबतो दुहारो करे। गटियो पीव नागजी माक गल रै मायो न बावै। नागजी गल मे बाकी गाम राजियो माळा रै बैठिया भटमोगी बचावै।

धमरायी री बेटी नागबती। बरन महाराज री। बारह बरसां रा'प रै रंगा रा बार लियां बाबा दुवा मैं बैठे बरी भटकनी बोटी में

प धारा में मेळ मेळावां माळू जरप चावें वे ऊठे ई वासक नाप वो नीं चढ़ दियो है। भाटो पीमणतो भळा नैहूँ री कोष र बीरा हाथां रो रप एक मिल जावें। मटी फेरती जाती माधवंती मणिहारों गावती री खेत में मळिमोड़ा हरियिया मरना छीड़ ढाणी रै पच्चाड़ नाय ऊभा रै जाता। माधवंती रै घर मापजी री भौजाई रै नवां हेत मेळिया। दोई जणिया साथ बैठी पीसती जावे घर गावती जावें। वठी एक पीस न चाबरे। एक बिसायलों करे दूजी जांवळिया बोवे।

मागजी री भोजाई पांगळे मे बीमाय पु ळय दही री हांडी र रोटिया मार्थे मेल खेत में मागजी ने भातो देवाने जाती।

माधवंती बोली "थाज म्हूं ई थारू था रै सार्थ।"

"चालो।"

दोई जणिया खेत जाती। हरी कच जुवार ऊभी। कावर मतीरा री बेलड़ियां पसर री फळियां फूट री। तिलां रा मीठ गैहगाय रिया। माळा रै डौड्यो मागजी मळमोता पे मस्त चिड़ियां चैजो उड़ाय रियो। नागजी रा भाई मस्त खेत रिया। जुवार रै बीं राप में मस्त चिड़ियां फ्रोमा धाम री। हिरण मस्त चिड़िया चूग रिया। ये दोई जणियां माथे भातडी जावें ज्यूं बायरा मे बरियाळी मस्ती री लहरां मा मैं ई मस्त करती जावें। बावड़ी मने नै भाई सो नागवंती री निजर पड़ी पूळा में लाल रंग रा पग मींड्योड़ा। वा अचम्भा सूं देखता नामी "ये पग कुण आंकिया चसपा?"

मागजी री भौजाई हंसी "पग आंकिया नीं। ये तो नागजी रा पग है।"

"नागजी रा पग? लाल रंग रा।"

"हैं। नागजी जावे जद कुंकू पगलिया मंडता जावें।"

है। ठी ठी बैसो कारलां।

थावड़ रा भटका रै मारे 'हो' कीतो बको नागजी जि मस्त नाम सू बामतो बायो बी न नाम सू हाथां मे पतयोमा के बमाळो मामा रा बासा मे परोसिया।

• • •

मतरूोमा बाब सं बाव बाम बांवतरे सू मिलियो। होटा रै मुळक पर यारिसां न बेह बरिया पोळ मैं सिजाय बंटायो। नागजी रा मामा रै हाप फेरयो। 'मनै पतराव माटा मे देखिया। बांवळजी पाव है? ई मैं पोर न मीमो बड़ी ई म्हारी मू बां पकड़ धेंची बो।

दीई होमरा साथे हलिया। नागजी री भुवा पकड़ न ववाई मैनू समरल करें ही बी?

भुवा री मिसलिया बड़ी मनी। पावली माली बावं मोह रै बड़ी बी। बट्टियोरी भुवा देरा रावां लिया। भूठ रै बाली दीधी।

रैंबाने पर बपाव दीधो। डामर बाधवा मै बाड़ो देय दीधो। बाब रस्वाव मव नमस्कार दीधा। नागजी पेव मे नाम करै। बांवळजी पर प्यागरोळी डाळा मे मापा बाम मे बीडिया बाबां रा बटकाव मारै हुवा रा बटवारा मन।

दा॰ डाबरा 'परबावां री पोड़वां दीधा समफ़ोला' रा मना ने।

नागजी री मीमाई बिलोवणा करै, मामा हूरे बचारी बुहारो करै। नंदिया बीर नागजी माग गान रै बागो न बाबे। नागजी गान में बाली गाम बतिमो भाळा रै बंदिरा बटमोमा बमाई।

चापरानी ऐ बेटी नापवनी। बाल पहुराव बी। बारळ बापा रम रै दैना रा बार लियां बामा हुरा में बैठी बरी नरबनी चोटी में

)

प धारा री हेत रेसमी धाता बरस ज्यां री पड़ै रै बालक नाम तो नी पड़ दियो है। माटो धोमणती बैठ्या गेहूं री सौप र बीरा हाथा रो रस एक मिल जावै। यहीं फेरती बाली मायवंती मणियारो गावती हा बोल में बणियोड़ा हरियाला बरता छौर हाणी रै पछवाई धाय ऊमा रै साठा। मायवंती रै घर मागजी री भौजाई रै मना हेत म्हेमिमा। घोई बणियां साथे बठी पीसती बाव घर गावती जावै। वही एक पीव न हांवरै। एक बिनायबों करै दूजो बांवलियां चोवै।

मागजी री भोजाई बोबळो मे बीमाय पु हाय वही री हाेरी र रोटिया मार्ग अंत वन में मागजी ने माठो ईपाने चाली।

मायवती बोली "थाज म्हूं ई बामू था रै सागै।"

"चालो।"

घोई बणियां सत चाली। हरी कच जुवार ऊभी। कावर मतीरा री बेलड़ियां पसर री कलियां फूट री। तिलो रा पौड़ पीहमाय दिया। माळा पै बैठ्या मागजी बळगोजा पै मस्त व्हियां हैडो बजाय रियो। मागजी व वाई मस्त मेव दिया। जुवार रै भी राम मे मस्त व्हियो धोला धाव री। हिरण मस्त व्हिया झूम रिया। ये दोई बणियां भावे बागती बाट म्यूं बाजरा मे भरियोड़ी मस्ती री लहरा मा मैं ई मस्त करती जावै। बागड़ी बने ब बाई मा मायवंती री निजर पड़ी पुठा मे लाल रंग रा पग मांडियोड़ा। मा यचरजा सू देखवा लागी "ये कप कुण मांडिया भाया ?"

मागजी री भौजाई हंसी "पग मांडिया नी। प तो मागजी रा पग है।"

"मागजी रा पग ? लाल रंग रा।"

है। मागजी जावै कर बहुरा परणिया मंडता जावै।"

"ए हैं हैं हैं। मानवंती हँसी।

"सांची वा मानो भी।

नाम री पनाल्या सू बैरागी नारी बोली "आबा वो म्हने ईं बैरी कर रिया हो। मरवा पांरा हेवर म्हारा हैं।

"मैंनी म्हू कर री हूँ। सांची बात है। मानवी समाय कर न सिरजे अर बंदुरा पवनिया मंह।"

"भूठ कहा रा हूँ।"

"म्हूं भूठी भी। वा भूठ।

"सार्वनाव वा भूठा हो। बहुरा पवनिया मंह ? बती मसक बारी है।

"सावी हीड मारो। कोई देखोगा।"

"वो मैंनी को हूँ।"

जो थे हार्तसमा तो पानें म्हारा बबर में परनाम देवूंला।" मोवाई सुहर। मरवा को पांरा हेवर प्रेमा री वरप बानू ला।"

मानवी पारारी भुज वे मरन उजतोवो बजाय दियो। मोवाई बाप हैनो वाल्मो। मानवी मोवे उमरिया। माना रा मुहा हुन दिया एक मन समाय में मटप री पुर्जिनोड़ा मंच। बणारो सीम घन घन बजियोड़ो। मान्यता में लालचो बांरी मानवी रो सरीर सांचा रै हिंड्योड़ो है।

मोयाई बोली, "थाणो पैला सनान कर आवो पछै पछमू ।"

मामजी बावड़ी में जाय सनान करवा लागो । मोयाई मागवंती नै सारै लवाय बड़का मीर्च ऊभी री । मागजी सनान कर निकळियो । सूरज नै नमस्कार कर चालियो तो उण रा पगलिया पंकुरा मेल्ता आवै ।

मामजी री मोयाई मागवंती री पगलिया में झांकती बोली "बोलो हारी कै जीती ?"

"मैं जीतिया" । मागवंती नीची नाखली पग रा पहुंटा सूं भोम कुंचती बोली ।

"मर्द होड मारी था पूगी करो ।" मामजी री मोयाई मागजी साम्ही मांचर मुळकी ।

"कुणी होड थामी ?

"था तो मामवंती नै पूछो ।"

मामजी मामवंती साम्हो जोविया । मामवंती भाव सूं राती पड़गी । पसीनो छावर्गियो ।

"मागवंती होड मांडी कै थारै देवर रा पगे पहुंचा पगलिया करे तो मूं परण जासूं । होड मैं हारगी जो थारै थारै परणसूं ई मैं ।"

मामजी मागवती साम्ही जोविया । मन में लागियो थारै हीरो मन मामवंती रा हेला में अटक गियो । हाथर गिया में डूब गियो । एक पल मांय दोवां री निजर एक व्ही । मन रै एक पल में ई कोई पनां रा मार समझ गिया जो पणगारा मन मन में ई नी समझै ।

"तो वचन पूरा व्है थारै ।" मागजी रा हाथ पणजोड़िया रै पगरो मार

हुक्को मँगायो।

मूमल

हुक्का री नेज ने मुंडा रे तमाम बाळ ओर सूं सटकारो भैंस माळदाजी ने मँगायो।

मूमल ने कटोरी में केस चांपली भर न छाटा देय अँजारो कर मूमल ने रंग दीनो।

रंग रामा रंग लक्षमणा, रंग दसरथ रा कँवरांह।
मुझ रावण रा भाणिया मासोजा भंवरांह।।

मारे रो मारे माळदोजी अनाठो दीनो। अँवारा री ठौर अमाठो माळदोजी मोता ने मूमल भर न रंग दीनो।

रंग जैपुर रा राजा नै
रंग हर नगर रा राजा नै
रंग मंडोवर री बाड़ी नै
रंग कोटड़ा रा कोट नै
रंग मेड़ता रा ममराजा नै
रंग राठौड़ मल्लिनाथ री पाघी नै
रंग सीता रा सत नै
रंग लछमण जती नै
रंग बीरमदे री वाण नै,
रंग मामधारी री अबाम नै
रंग हमीर रा हठ नै
रंग महाराज रा हरख नै

रंग रो लोबो माळदोजी आळा रै होठां रै लगायो पूरा साथा ने

चहुामन बाळ मूमल री नर कीनी भवसाजी रै मूला रै लगायो।
दोई मना बेचारा कीधा।

कमू बा रा ध्य ना मैं नजर नकाय बाळै मूमल ने रंग देवों बाठी धांसयो।

जै कांई हानाच्यी करो तो
मयरेव घुमार कीनी ज्यूं करजो
जै कांई थोरादीडायो तो
वनड़ावलां दीड़ाया ज्यूं दीड़ावजो।
जै कांई सुगाई मान परख बीच परणो तो
पातसाह री साहबादी परणी ज्यूं परणजो
जै कांई सुगाई परांसता सूं मन धाड़ो तो
पद्मा वीरम रै नै कहियो ज्यूं कै दीजो

दोई डावरा मूमल री एग एक बातो नवता बोमिया

रंग मधु मालती मेह मिलाप निभाया
रंग बीरमदे रजपूत निरै बिणयामी मन भाया
रंग मीठा बाळा रांण मायन पर बैठा धार्ड
रंग ढोला रजपूत परमण ढाक धाई
पदम पुमी रंग रो पना लोचन बीरम री भांमिया,
लाला बाबो मीठ मैं मान मरी नैं भामिया।

दूसरा बीर लिया धैवारा नर लिया कमू बा री कमवारी बात री।

"म्हारी सार लिम तर मारी?" सुगाई रा सार री कमवारो दोवा

रै ई काना में पड़ियो। सारै रा सारै भाखरी रो मोड़ घुमिजियो मुमस

पी मैं भारी।"

"री धाई कठी ?

पीवारा पड़िया पांवटरै बाटा री माथ।

'भागड़ेजी री पांव जो थारै पीवारा पड़िया है। सामो म्हारी सार।"

सार बोमती री बुढ़िया नाचरी। भागडोजी पर बाळा दोई बर्साम्या। धूप ? नामजी पर नागवंती। रीस में भर न बाळो काढ़िया नागी नपटियो। सारै भाराडो भी भागियो। नाग नामजी भर नागवंती सार री भोला रार्मा कर दिया। नामजी सार नै देख ईक बार न मानियो बाळै वा न धना दांणी करता देसिया दो लेड मूं हाथ लियो। घटीनै बठीनै भाजियो हुवा मैं हैसड़ो पड़ियो उसायन काढ़िया नामजी माथ। नामजी बाबा रै मीन पार्वनियो।

रीस करै भकोळिया हाथां छुटया सेस।
मीगरगारा भाग है, पामी भाग्या बस॥

बाळो मैंन उगाय बाळी मारता लागियो बठै भागडोजी पार बाळा रो हाथ पकड़ियो "मत कर। ई नै क्यूं मार दियो है। मारजो है ता चोरी मैं मार। नैणा में क्यूं वाहै ? नैणा री काई दोष जो बैरी वी रै बिगु न कार ?"

बाळा बाढ़ै सेस नैपसी मैं बाढ़ मतो।
नपसे नहीं ज दोस नपै बिमू को देसड़ो॥

नागजी गयाँ आटणियो। मागवंती मीर्च उतरगी। बाझो पीस मैं ऊभो ऊभो मू माडा मार रियो। होठ चाबियो। "नागजी रो मझो मीच दू। नामायक ईं घ बार मै रैय न थे करम।"

हाई होतरा धमधमा बैठिया। बाझो दुखी वको बोलियो "नागजी कपूत निकळियो। मरयो ई मैं नी जाणियो। एक तो मा रै बारै प्राण मवरी देवा नै रिया। ईं घोमबयारै दुख रो बदलो यो दीधो।"

भायरोजी मीठो छाटो न्हाखिया "दोस नी नागजी रो है नी मागवती रो। दोस थांरा दोना रो ई है। थारा स्याणा समझणा व्हैता तो ने घर बागडी मे एक ठोड़ भेळो नहीं राखी।"

बाढी बोलियो 'वा' रो करार कर देणे मे ई सार है। नमाई कुमो ही है ही ज। फेर देर क्यू ?"

उण ईज दिन बामण मैं बुलाय वैद मू बेडो नाखो देतास मिच मे मूमरा वर्म वैस दीधो। ब्याव री बात बगो छक कीधो। मागवंती रो मन आणों चाव दीधा।

मीरो देग नागजी री ओलाई रै मारै एक दिन मागवंती गई नी। मागवंती पूछियो

"थारा नाना किण लिया ?"

"हां दिन दस ढारा लिया है।" मूनियोड़ी बीन मू मागवंती बोली। ना थे बोला रा ढंगरा मिलता है। घर्ड मू मधु बोलवा लागी। मूमरा रै मारै आवना।

"मीं नागजी मू दूं घाटी जो बाटी म रैबू ला।"

"रहिमा, गुवाला रा नाई भरोसा।" मूमली मीठो मसम मूं मरीब मालमी।"

"लागली प्रीत ममीर में घर गरीब में मी हेरी। नागवती मटमली मुपी।

"कमुमो मर म मोना री पणो पावेमा जदी मी मालमी दीसैला मर मीं मा प्रीत।" मालजी मु रो मरोड मीमी मागियो।

मागवंती री पांगियां मैं पाणी मायगियो य बोल मही बोल, मालजी। मन मेळू मिमयो जा मिमगियो। दुनियां मैं पणा ही बणा है मप मा मु मन थोड़ो ही रह।"

> मागा नागर गयाह मन मेळू मिलिया नहीं।
> मिलिया भवर पणाह आ गू दिम रळिया नहीं॥

मालजी बोलियो मन मळ र तन मेळू। ईंका री बाना है। मालमी धीरे धररै बीरी गुगाई। मरियो न पराया री पैनी देर मी लमार्य।"

> दाडी नैण र दाम, गिर ही माथे धालमी।
> (पग) छुरी पल्हारी मार मुबा पर पर मालमी॥

मालजी री करती बाता गुप मागवती राय दीयो।

"मालमी दम्यो करडा मत बार। थे गुगाई बुरी केला। मालमी गुगाया रै मारै वर्ई है मरिया? थे गुगादा है य रो बा मारै प्राण है है। मैं पारमी ज पम्पा भी जा गुगाई रा बगान रो बामदी मी मुखै मप्र पैमी बुरी मराव करन। बरा पैनो नागवती रो मटो पूवरा लागियो।

"थूं म्हारा बिना नीं रै" ? नागजी नीमछिया नैणां सूं पूछियो ।

"कदई ई जीवती नीं रैवूं थां बिना ।" नागमती री आंखियां सूं आंसुड़ा छूट गिया ।

नागजी रीस में नागवंती नै थारी थागती बताई । थ नागजी रा पल्ला आंसू पूंछिया ।

"रो मत । मून धून जा । करम में योगी लिखियां थांरा है । थूं म्हारी हालत है । म्हारी जिन्दगी तो थारा बिना मसाण व्हैगी ।"

रोय धोय नागवंती घरे आई ।

बो दिन ई आयगियो । मूमल री जान आई । तोरण बंधियो चंवरी रची । तोरण मार मूमल चंवरी में आयो । जालजोगी बैठी रो हाथ मूमल रा हाथ में दीनो । हथळेवो जोड़ियो नागवंती पातसाग री मुरली ज्यूं ऊभी । मनवारो पंगायो । हम हथ ढोल बाज रियो सुहागी गीत गाय री । माथा में मो' बांध्यां मूमल मुळ में रैय रैय बंट बैठ गियो । बामण मंतर बांच रियो । मांगा बिलख रिया थो लड ऊदरी । फटकती लागी थारे । नीर रै बनै पड़िया लागा मांगा लागती मूमल रा माग री थाळ सूं थाटो भीयो । सुहागी हंसी ।

मूमल नै याद नीम "थोट लागा मनै ई पन्थ परम करै ।" पण थूं बाहलाई बरदेगू लागती टोपी ऊदरी रै जो दूजी बरई बारही । ऊदरी मार न मूमल री मुठ में हाथ दीया । सुहागा हंसता मांदगी (पगराव में मामूली लाया । ऊदरी नै बरी देख न आंसू रोको न बारै जो यमदूत दूरगायो ।"

"राङ्या, मुगायां रा काई भरोसा। मुमरो मोटो मतन म्हूं गरीब मारमी।" मुमल

"मामजी प्रीत अमीर में पर गरीब में भी हैवै। नागवती मदमती भूली।

"बापूरो भर न सोना री बंधो पावसा जदी भी मामजी दीवांना भर भी या प्रीत।" नागजी मुहरा भरोत मीठी मारियो।

नागवंती री आंगिया में पाणी आवगिया "थ बोल मती बोल, मामजी। मन मेळू मिलणो जो मिलमियो। दुनिया में पणां ही बणां है जप वो हूं मन चोरो ही रवैं।

मागा मागर गयाट मन मेळू मिलिया नहीं।
मिलिया मवर घणाहू वा गू म्सि रळिया नहीं॥

मामजी बोलियो 'मन मेळ र तन मेळ। ईंबा री बातां है। मारबी कोई बनरे बीरी मुगाई। भरिया न पराया री म्हैगी हेर वी नपाई।"

दाड़ी मीळ र दाम गिर ही गाय पासवी।
(पग) दुगी मन्दारी मार मुगांपर पर मासती॥

मामजी री करती बातां गुप नागवनी राप दीबो।

"मामजी घरो करड़ो मत बाण। वे मुगायां दूजी ल्हैपा। मारवी मुगायां रै मारे वई ई बांध्या ? म मुगायां ई व बै वो मारे प्राण है है। वे पारमी म पल्ला ऊ आ मुगाई रा मवाला री बामदी भी मुमै बड़ा ईंनी दूजी ब्यार करा। ईंरा ईंनां नागवनी री धरो दूरसा मागियो।

"थूं म्हारा बिना जी रै ?" नागजी मीमदिया मना सू पूछियो।

"कांई ह जीवती नी रैवूं थां बिना।" नागजी री आंखियां सू आंसुवा छूट गिया।

नागजी रोय न मामलजी नै बाथरै बाथनी बैठाई। घ गरजी रा पल्ला आंसू पूंछिया।

"रो मत। म्हन भूल जा। जनम मैं थारी निगियो पांजी रै। थू म्हारी सातरा रै। म्हारी जिन्दगी नी थारा बिना समाप्त व्हैगी।"

रोय धोय नागजी परे आई।

वो दिन ई आवगियो। मूमल री जान आई। तोरण बंधियो चंवरी रची। तोरण मार मूमल चंवरी मैं आयो। आगरदोजी बैनी रो हाथ मूमल रा हाथ मैं दीधो। ब्याईदा बोलिया नागजी पाणाल री मुरली ज्यू ऊभी। मन्त्रारा बंधाना। इम इम होम बाल दियो मुगाओ धीड भाव री। माया वे जो थाप्यो ज्यारो मूळ थे रैव रैव बंट देव दिया। बामण मंतर बाम दियो। धागा बिसर दिया था तद ऊ दरी पन्नरागी नमी आई। बीर रै मनै पंडया नमा लागा लाखनी मूमल रा बाप री बाढ सू बाज्या थोथो। मुमाघो हंसी।

मूमल नै याई गोम 'याद गयाना नम ई पन्ना करव करै।" पण थू बातनाई बादेंजू दरणी गोरी ऊदरी रै जा दुरमी बढई बातरी। ऊदरी मार न ज्मरा जी मूठ पै हाथ दीधा। मुलाया हंसता नाचपी। मतराव मे मामूजी भाया। ऊदरी मैं परी दंग न आंसू बोनी "ज बाई धा न्हंद दुम दुरवायो।"

मूमरी मट छाती मुळाय मूछ रै वट रै बोलियो "थो बस थारै बमाई में मासो।" मूमल

समळी मुळायां ही ही कर न हुम सीधो। नागबंती करम ठोक मीधो। रीस तो घणी आई के ऊभी थूंन मूमरा रै मारै छाती रै एक लात री। पठ ओरा में थाड़ न म्हारले नवरी री मालवाड़ में। पण बेवस लाचार कांई करै। नागबंती रा हिवड़ा मै नागजी री मगन बसियोरी ऐवर घणी पैरा पूरा घे न मुं बाड नागजी सूं मिलू। पैरा थेला ई नागजी स मंदिर मे मिलणे रा ठौर कर राखिया था नागजी वाट हेम रियो थोना। वे बामण ओरा में थोड़ो कर लिया है।

मन में मकनी वीरी केरा लाम्या ई अ। मेव बस्तूर करता थापी राम थेवसी। नागबंती रो जीव मळ निरळ कर रियो। थूं लूं धीरो गाड मिन्दर में थी। बामे नागजी नी दीतियो। बारली भांती थाम मे माळी। परकम्मा में हेरिया। कठ ई नागजी नी। नागजी मे सबरोम थायो मूं तो थमी मबकाई हैन मामी थाई है। बायजा थायो ई नी। मिन्दर रा बामण ने जमाय न पूछियो "थठे कांई बटाऊ आयो कांई?"

बामण बोलियो "एक मोटियार थठै थमरी माळ बैठियो तो हो। वोरी वाळ ही पखार वारे निकळिया।

नागबनी रो मन मुळावण दे दियो "आयो तो सरी म्हूंमें आवणो नी देगी जो उराम पड़े ने परी गियो।"

वा ई अ बरी तरे थामी। भाजा भी ऊभी रेय हेम वाळियो

"नागजी था सू पमरीव देर ई मिन्दर में आमी उडीकनी थाया। थामो मीव उरो मूं आवसी।"

नागजी बोलियो नीं ।

नागवंती पाछी बोली नागजी बसवा री वेळा या ई बं ई कांई ? नीचे उतरो ।”

फेर नागजी नीं बोलियो तो नागवंती गायो

नागजो पोढ़ो तो मूंडे बोल रे प्याग
म फलको हरपू पणी हो ऽऽ नागजी ।।

नागजी तो बोलिया नीं । टप टप करतो नागवंती रे माथे ऊपर पू बू सी पड़ी ।

बिन बादळ बिन बीज, टपगपिया छांटा पड़ै ।

नागवंती जाणियो नागजी वठै ई उदास व्है रोय रियो है आप मनाइ उप बे । पट चाप माळा पे चढ़ी । नागजी तो गुटी बांध पळेवड़ो पोढ़ न सूतो । नागवंती बोली नाग मूंडै ई नीं बोलो काई ? नागजी मतरी परवा मत कराओ । उठी चित मन री बातां करो ।”

नागजी छाना मानो रियो तो नागवंती मूं मल्हार में बोली

मूंगा गूंटो तोण बतळावो बोला सही ।
बम्पन पदमी बात मारा करस्यो नागजी ।।

नागजी मूं राम मूंगी । हालियो तक नीं । नागवंती के घबराई घापगी, “नागजी या मारा दांतो भी कमरो री बड़ा थोड़ी है । मौत होवा नग भी है जा दिन में जाओ घर दिन में सोड़ा ।”

तड़क भड़क मन माड़ रे प्यारा बतळावो रा लार ज्यूं ।

धूमरो भट छाती फुलाय मूंछ पे बंट दे बोलियो 'यो बस थारै धमाई धूमसें
नै पायो।

धमकी सुपारी री ही कर न हुम दीवो। नापवंती करम ठोक लीवो। रीस तो घणी थाई के ऊभी धूम धूमरा रै थारै छाती व एक लात री। भट थोरा नै थाइ न न्हाकदे कदरी री लालबाड है। पण बेबस लाचार काई करै। नागवंती रा हिवड़ा में नागजी री सूरत बसियोड़ी। "पर मदी फेरा पूरा व्हे न नूं जाऊ नागजी सू मिलू। फेरा दरना ई नागजी न मंदिर में मिलणै रा नीच कर राखिया था नागजी बाट देख रियो होला। वे बामण मोटा में बीड़ो कर रिया है।

मन में बरणी होंठी फेरा खाता ई न। नेग दस्तूर करता थाथो राम व्हेग्यो। नागवंती रो जीव मद विरळ कर रियो। ज्यू त्यू मोरो भाड़ मिंदर में गी। थाने नागजी नी दीनियो। थारी थोरी थाम थे गाटी। परकम्मा ई देरियो। बठ ई नागजी नी। नागवंती के धमरोल थायो क्यूं तो घणी धबराई देख भागी थाई है। नागजी थायो ई नी। मिंदर रा बामण ने जमाव न पूछियो 'यो काई बटाऊ थायो काई?'

बामण बोलियो 'एक मोटियार चढे घणी ताळ बैठियो था रो। थोरी ताळ पैली धबार थारे निकळिया।

नागजी रो मन मुनावम व्हे गियो 'थायो तो थारी म्हूंमें थारमो नी देखी ओ उताम व्हे ने परो गियो "

[illegible]ा ई व धर्न गरे भागी। भाला भीचे ऊभी रेव देम गाडियो

"नागजी था मूं पतरीज केर ई मिंदर के मानी उछोळनो थायो। [illegible]यो मीच उरो व्हूं थायसी।"

मागजी बोलियो नी ।

मालवंती पाछी बोली मागजी क्सपा री बेळ्या या ई न है काई ? नीचे उतरो ।"

पैर मागजी नी बोलियो तो मालवंती गायो

नागजो थोड़ो तो मू के बोल रै प्याग
म पल्लड़ो करपू पणो हो ,मागजो ॥

मागजी तो बोलिया नी । टप टप करती मालवंती रै माथे ऊपर मु दु डा पड़ी ।

बिन बादळ बिन बीज, टपगपिया छांटा पड़ै ।

मालवनी जाण्यो मागजी नई ई उराम थे दाय दियो है आप बनाय ज्ञ है । पर पाप माड़ा पै पड़ी । मागजी ठा गू टी सेज पडेख़ड़ो थोड़ ल गुतो । मालवंती बोली थार मूरै ई नी बीमो काई ? मागजी पतरी पर्चा मन कराया । उठे चित मन री बातां करो ।"

मागजी टाला मानो रिया ला मालवनी मू अध्याय मे बोली

गूंगा पूटी दांत बतळायां बोला नहीं ।
बन्दम पद्मी पाम नारा करस्यो मागजी ॥

मायजो मू गा दु गूगो । हांसियो सर भी । मालवंती मे यहजाई पायगा मागजो रा आगम हाठे री क्यारी री बेळ्या थोरी है । पीर हांसा लाग नी है या ठान के जाणो पर लिल में बोले ।"

तरव मा" (मन माडू रे प्यारा, बनपाणे रा तार ज्यू ।

मूमल

मूमरो मट छाती फुलाय मूछ री बंट दे बोलियो "यो बम मारे चमाई में मायो।

धमटी सुणतां ही ही कर न हस दीयो। नागवंती करम ठोक लीयो। पीत तो पसी थाई के ऊभी पैन मूमरा रै मारै छाती में एक माव री। पठ ओडा में धाड़ न म्हारे नवरी री नामवार मै। पण वैरस नाचार नाई करै। नागवंती रा हिवड़ा मै नागजी री मूरत बसियोरी "मन पाठे वैठ मूरत पड़े न मूं बाड़ नागजी सूं मिलू। वैग ढ़ोला ई नागजी सू मंदिर मै मिलणै रा बोल कर राखिया को नागजी बाट देख रियो होला। मै बामण बोडा मै मोटो कर दिया है

मन में धवणी दोटी वैरा लाया ई ज। नैच सपूर करता पाची गत ढ़ेवणी। नागवंती रो बीव मन विरठ कर दियो। थपू तू मोरो गाड़ मिदर में मी। पाने नागजी मी दीसियो। बारणै मांयो बाम मै गाटी। घरह्मा मे हेरिया। पठ ई नागजी नी। नागजी मै पमरोल मायो मूं तो पमी धवकाई वैरा मामी थाई ई। नागजी पाला ई नी। मिदर रा बामण नै जवाप न पूछियो पठे नाई बडाऊ मायो नाई ?

बामण बोलियो "एक मोटियार पठे मवरी गाड़ दीठिया हा हो। पोरी ताब धी पवार बारे निकलियो।

नागवंती रो मन मुरझाय पड़े गियो "मायो तो नारी दहूँ मायनो नी देखी को उराम पड़े ने परी गियो।"

मो ई म वगी तने नाना। माता मीवे ऊभी रेत हेम वाड़िया

'नागजी वा मू पनरीन देर ई मिदर मे बोनो उड़ीकणी पाला। मायो मीवे उतरो मूं पाजनी।"

नागजी बोलियो नी ।

नागवंती पाछी बोली नागजी बतायां री वेळा मा ई क्यूं है कांई ? मीठ उतरो ।"

फेर नागजी नी बोलियो तो नागवती गायो

नागजी बोलो तो मूंडे बोल रे प्यारा
म कम्पड़ो करपू घणी ह्रा ऽऽ नागजी ।।

नागजी तो बोलिया नीं । टप टप करती नागवंती रे माथे ऊपर बूं बूंदां पड़ी ।

बिन बादळ बिन बीज, टपटपिया छांटा पड़ै ।

नागवंती जाणियो नागजी मठै ई उदास व्हे रोय रियो है जाण मनावू घण नै । चट चाप माथा पै चढी । नागजी ता गूटी बेन चढोड़ो मोह न छूटो । नागवंती बोली आज मूंडे ई नीं बोलो कांई ? नागजी थारी नरजा मत करावो । उठो चित मन री बातां करो ।"

नागजी टाळा मामो लियो तो नागवंती मुं मठाव मै बोली

मूता गूटो तांण बतळाया बोलो नहीं ।
बम्पक पदमो पाम मारा नरस्यो नागजी ।।

नागजी मूं रो पु मूना । हालियो तक नीं । नागवंती मे धवराई गावगी, "नागजी या नाराज हारो नी म्मरो री बेळा वोरी है । प्रीत हामा मन भी है जा दिन मे बोरा पर दिन मे तोड़ो ।"

तड़प तड़पा मन ताड़ रे प्यारा, बतयारो रा तार ग्नु ।

सूमरो घट छाती सुनार मूँछ पै वट दे बोलियो "यो सब म्हारै कमाई में पायो।" मूमल

समली सुपारां ही री कर न हुम दीधो। नागजी करम ठोक लीधो। रीस तो घणी आई के ऊभी पेढ़ सूमरा रै म्हारै छाती में एक लात दी। पण ओरा में पड़ न म्हारले बयरी री मामलाद में। पण बेबस लाचार कांई करै। नागजी रा हिवडा में नागजी री मरण बणियोड़ी "कर घड़ी वैरा पूरा धे न सूं बाऊ नागजी सूं मिलूं। ठेरा ठेरा ई नागजी सूं मंदिर में मिलणे रा पीन कर रातियां जो नागजी बाट देख रियो होला। ये मामला मोरा में मोड़ो कर दिया है।

मन में घणी मोरी केता लागा ई व। बेप रम्पूर कन्ता पायी राग छेड़ी। नागजी रा बीच रब्द विरह कर रियो। धूं धूं मोरो काई मिन्दर में थी। मामे नागजी भी रोतियो। वारली पर्वी माथ में माटी। वरवम्मा में हेरिया। पढ ई नागजी भी। नागजी के घमरोल पायो मूँ तो घणी घबराई रैम मापी पाई हूँ। नागजी पायो ई नी। मिन्दर रा वामन नै बमाय न पूछियो "पये कोई बटाऊ पायो काई?"

वामन बोलियो 'एक बाहिवार पढे घणी बाऊ दीठियो तो हो। पोरी बाऊ ही पवार बारे निकळिया।

नागजी रो मन मुरझाय ग्यो लियो "पायो तो सही म्हनें पावणो नी देणी यो उठाम धे ने वरो लियो।"

वा ई ज वठी गो वाली। बाटा बीच ऊभी रैन देख बोलिया

"मारजी था सू घणी देर ई मिन्दर में कोनी उडीकणी पाग। पायो नींद उमरा मूं नागजी।

माधवी बोलियो नीं।

माधवंती पाछी बोली "माधवी कसया री वेळा मा ई न है काई? नींचे उतरो।"

फेर माधवी नीं बोलियो तो माधवंती गायो

नागजी पाड़ो ता मूंडे बोल रे प्यारा
म मलड़ो करपू धणी हो ऽ नागजी ॥

माधवी तो बोलिया नीं। टप टप करती माधवंती रे माथै ऊपर बूंदां पड़ी।

बिन बादळ बिन बीज टपरपिया छांटा पड़ै।

माधवंती जाणियो माधवी बर्ड ई उदास व्हे रोय रियो है। बात समाजू उण ने। पट पाण मांछा पे चढ़ी। माधवी तो गूंटी सेंच पछेवड़ो पोढ़ न सूतो। माधवंती बोली "आज सूतै ई नीं बोलो काई? माधवी पछरी मरजां मत करावो। उठो चित मन री बातां करां।"

माधवी छानो मानो रियो तो माधवंती मूं मल्हार में बोली

सूतो सूंटा ताण बतळायो बोल्यो नहीं।
[illegible] पड़सी आज, मारा करस्यो नागजी ॥

माधवी मूं रो मूं सूणी। हाणियो तक नीं। माधवंती ने अबखाई आवती, "आज्यो या मारात हीरी री व्यारो री वेळा थोड़ी है। नींद होमा ताम नीं है जो उठ में बोरो पर दिन में आड़ो।"

वहड़ तड़ [illegible] मन मा[illegible] रे प्यारा, बणयारो रा माड [illegible]

नागजी तो ई नी बोलियो। नागवंती बावळी ही। नीचे झुक जावा ऊपर सूं कटारड़ो ठरी सीधो। देरो लाई। नागजी री छाती में ठो मूठ तांई छुरी धस गी। लोही रा धारका चालिया।

"हाय रे नागजी कटारी जाण न मार लियो।" नागवंती नागजी री लाश सूं लिपटगी। "नागजी सूं मरियो क्यूं। मरणो हो तो म्हनें मार न मरतो।"

लाश सूं कटारी ने खेंच न काढी। मन में आई आ ही ज छुरी आप ने मार जावूं। हाथ छाती तक लियां पण रुक गियो। कटारी ने धीमी धीमी बोली "म कुमारी जात रा माथ पे ई ज हाथ लगाय दीयो रांड नागजी री छाती रे पार पहुंचता थने लाज नी आई।"

कटारी कुमार, तू बेवफड़ो निरखी नहीं।
नाग तणे घट पार, मोहा काढी लाजी नहीं॥

नागजी री आंखियां खुली रही। नागवंती ने लागियो जाणे नागजी बी ने देख रियो है। बी रा सामहो जोय रियो है। आंखियां ई आंखियां में दुख ने मनोवेग पाणा ने रीस रियो है।

नागवंती लाश ने लिपटगी "नागजी थांरे सूं बड़े नहीं। थू म्हनें छोड़ न परो गियो तो कांई हूं तो थारे लारे ही लारे हूं। थारो सपना देखणा रा ओर साथ न निभणा रा। आ जग में रैंसी। दुनियां निभणा नी दीना। जग जमाना रे डर ने नीरा री सेज पे आपां ने निभता ने कुण रोके?

निभणा री मन मांय माहू बाथ निभिया नहीं।
निभस्यो जमाना मांय नोरा माथे नागजी॥

म्हारा मायजी म्हारी आतमा रा आधार नै प्राण देय दीना था ओठ सिवाय किणी अणो कोई पुरख आज ताई निजरा नीं।

काजळ जिणरो भार, पाल नैणां मे ले चालू।
म्हारे आतम रा आधार, मनी निभाणो म गजी॥

एक दिन मायजी ने म्हूं कहियो के तो सुणाया हैं पण थूं को मायजी रे लारे जीव देदे। पुरख ई करे ई लुगाई मारू प्राण दीन है। मायजी तो मायजी निरखियो। पछै म्हूं जीवती रेवूं तो म्हारा जस्या जामर कोई आवी नीं। लुगाई जात रा भाग हूवे ? मायजी अस्यार दीम लारे ई जीव नीं हू तो फेर कोई ? मायजी कस्यो हेरिया भी लारे।

नाग सरीखा लोयण र, जुग में जोया ना मिले।

मायजी एक दाम धाम लोक न म्हारा आम्हा भांय मा। एक दीन लागी एक दाय रमें था हेमो ही मार नी। या री एकर बोली मुख सू। म्हारा नाय ई माद्रा के रूपी रूपी म्हूं मूलक री हूं। २ पारसा रा पस्ना सूं हमना पूछनो ज्यू तरह म्हारा बापू ता पूछ रे। मायजी ने मरना करता अणमोलमा जमू नीमा। बारा पदमोता री एक डेर तो सुणानी चाहो।"

मोरियां नै करियां पदमोता नै उठायो। पदमोता नै पाणी रै नमायो। "पदमोता पन मायजी सूं दूजो नीं रामू। पापा कोई मायजी रै लारे जामण्या। पदमोता नै बोबटो में घालियो। इण इसी मगाय नै मायजी ने देवणी री। "परसा मैंस म चोड करे ई जीवणो रैवणी पावे। अठै रैवाना पाना लारे ही रैवोला।"

मायजी नै पीतरी मोहाय मायजी जीव जणती।

सत्नागर री पाळ पै मवळक धूंबो नीसर रियो। मूमरो नवी परणी मोमनी नै घरे ले आय रियो। टप टप मैंमिया रा पगां री डोकरियां बाज री। रबाड़ा मैं घरेणु उतार चोड़ी मोमनी बैठी। हाथी दांत रो चूड़ो चमक रियो। हथळेवा री मैंहदी दमक री। कामियां रा सजामोड़ा ऊंट धाणा पाणा नाच रिया। घम घम करतो रथ सत्नागर री पाळ धने आयो। दौड़तो रथ धूपरम रुकियो। घम घम करती मोमनी नीचे उतरी धर मनती चिता में कूदगी। कामिया घरेंरेरे करै अनरे माढ़ा में नाचवती नायकी सूं साय मिली।

भोजा रूपावण जेल

बगड़ावतां रा चौबीस ई भाई भेळा व्हे विचार करवा लागिया भगवान धोरां मे पदरो धन दीधो है तो भाई करां ई यो। सबो दूजर चौबीस बात रो सुणायां ने परखियो। ये चौबीस ई भाई चौबीस ई बात री सुणायां रा बैठा।

बड़ो भाई तेजाजी बगियामी रो बैटो बोलियो

"मायो इस माया नै जमीं मे गाड़ दां। बदनोर रा डीला डीला डूंगरां के ऊंची भीत चुणाय धन ने ऊंडो गाड़ ऊपरे सीखरे चुणाय दां।"

दूजे भाई मादे चोर सूं पावर ओमेरी "बाता धन गाड़ियां घटती हुवै। गाड़वा वाळा ने चैना समझे गाड़ियोड़ा धन ने सो था दुनियारी धरनी पड जावे। धन्ना रा माया जीवां घटता।"

माया पोमो गरदमा, करो जीवदा साद।
जोय भरोसा पावणा, मिने न दूजो बार॥

तड़ाघी धमभाय लाग्या वारंवार पाना रे नजीक। नाड़ दे विन्च बराता। घोड़स बाधी तारदियां रावसांना हेर रो तीन पार तोमांता बाया ने दूजी बोमपा बणासां।"

भेवा ने राग गाई "दाता थू तो बापजी रो भाणजो है। म्हारा मामाजी तो भूंगरा बेचिया मामाजी बेचिया गुड़ तेल। वो थां ने तो मांडर मायी ताकड़ी पालती न भूखा रा पेट काटणा मूके।

बाप बिचारो काई करे, या मामेरा री बात।

चौथो भाई बापजी रा बेटो जो बोलियो

"देगो थांना माण्डा माण्डा मिंदर बणावा देवरा चुणावा जो परजी वे थांसूं पर्ण नाम रै व। मीठडा के भीठडा।"

मोटा रजपूताजी रो बेटो बोलियो "दुनिया देवळ ढह पड़ जी रै जगी रै नाम। काई पर्ण नाम तो मीठड़ा सू रै भीठडा सू जी रै। वे तो एक दिन ढह न पड़ जाय। जणा जणा मोटा मोटा मेहल माळिया घर देवळ ढ्हा पड़िया है। वांरो तो मालूम करो। जग रा मालक जुगा जुगां तक भी जावे। या माया किणी री ने मायजी थार जगरी माल जो। बादळ ज्यूं माया किणी परचाई ज्यूं जाय। किणकी रही है किणी है? बादळ बादळी छाया है। हाथां रा मावः मणा है वो मेलो।"

देवाजी बोले "खूगी बात।

माया ऊंटी माण वो बादा बाळ कुपाळ।
जाको प्रजा डायग्या हारगी अमर नाम॥

भैरो बोले "भी माया ना माण्या नाम है जा नाम देवे। माया मन री मोटपी माना हाथ रा मैल।

मोयो बोले

मायां तो माणी भला सींच्या भला मीबांण ।
घोड़ा ता फैरया भला भचो भली कवाण ॥

मन रा तरस कीमो भली । कुवा बावड़ी सूं पाणी सींचियो ई भलो । घोड़ा दौड़ाया भला भर कमाण खींची भली ।

देमाजी री बात नी चाली । बात री भाजा री भर भेवा री । भोजो तो मामा मासूका लागो । घोड़ा भर भर माहुरां लुटावे । जावक चाली हाथ सोनारे घरे पावे को माहुरा री थोड़िया भरिया पाछा घरे आवे । इतर में गरनाव रै । रोज घोड़ घूमरी म्हे । बागां री हाक काढे । बाकरा पे भटका पड़ । मूळा सोमता लाव न मुभावे । मामी मामी घोड़ा भोलाया । दूजारां मायां कांकड़ में ऊछरे । बिलोवणां री पाळियां घुर्रंरा ताई सूं जाती रै । वही दूध री नदियां बंवे । घी रा घाल चाल । म बळा म बळा भंट रा सीमळा चाटी भैंस्या धां रा मवाड़ा करती रे धड़ टिड़की घणी साम रा घरे आवे । वही दूध रो महपट्ट माचियो रे ।

मिनखां में भर्यंको भावे कि या दूजरां बनें भतरी मायां साथ गटा सू गी । भाने तो यो भोजो नाम पहाड़ में भवांणां घणां मायां चरावतो फिरतो । भैंसो केरड़ा चरावतो । साथ यो ई भोजो भरथो रैवे घरे राव मे पाछा रानें । भमा भमा या चरता क भोजा ने भोजा रो पारखो लिम लियो । जिम मे उम पाटे क्यूं बपता जावे । नाग पहाड़ में भोजो मायां चरावतो भठे एक जोगी री तपा कीधी । जोगी एक दिन भोजा ने दियो

' माथ रात दूं माला ।"

भोजो लियो । पावे एक तो भेम रो पड़ाव उपट दियो । अम्मर मम्मर री घणी सामगरी पड़ी । जोगी भोजा ने कियो

"इण कड़ाव रै परकम्मा दे। फिर सुमकू दिया हूं ला।

बाबा रै वैन पड़ गियो जोगी पाणी रै बारैमा।

जोगो बोलियो, 'बाबाजी आप एकर परकम्मा देय म्हनै बताय दो।"

बाबाजी परकम्मा देय नै बतावा नै ज्यूं आगे व्हिया। जोगै तो पकड़ बाबा नै उबळता तेल रा कड़ाव में न्हाक दीधा। कड़ाव में पड़ता ई बाबो सोना रो धोरम व्है गियो। उण सोना रा धोरमा नै जोगो ले धायो। धोरमा रा सोना नै ज्यूं काटै ज्यूं ई पाछो बध जावै। जोगा नै यूं माया मिलणा री बात कथा कथा रा मूंडा सूं।

बगड़ावत माया मागणा लागिया। ए बापुड़ा दारू में मस्त है। मटी नै हाथे मटी नै धोवे दवार भी बा ले। रात दिन दारू री झाड़ियां सिरड़। दारू रा डडाव भरिया की दाक रो छोटी बाप देर सैंग माण रा माथा दै वाड़ियो। सैंग नाम मार्या बुवियो। धरती धूप उठी। पाणी भगवान रा दरबार में जाय अरदास कीधी। बापड़ा माता बीरो भेजियो "बगड़ावतां नै म्हूं सताणाने जेळू रो चमत्कार सूं ला।"

• • •

जैमती छानेमेक हीरा नै कियो "हीरा सिरोसजी म्हारी सगाई करवा नै बाद दिया है जीनै पबराई मूं अठै बुलाय ला।"

सिरोसजी बात बागीरबार दीधो।

जैमती बोली "धणी माफ करजो। आप म्हारे घर देखवा नै बाद दिया हो तो एक बात म्हारी मानजो। आ म्हारी तसवीर ला इण उण्णियारा री वर व्है जिण रै साथै म्हारी सगाई करजो।"

आ कैय जैमती आप रै हाथ री बणायोड़ी तसवीर सिरोसजी नै पेलाई।

"आच्छो बाईजी म्हासू परोसा पतरै मस्यो ई हुकमा।

"भरोसा री बात नीं है बापजी। तस्वीर रै उणियारो रो मुंडो थो चावै। नीं तो म्हारे परणणो ई नीं।"

पिरोतजी तस्वीर न लेर बूंदी सू चालिया। मारवाड़ रो पाटी पाड़ मेवाड़ में आया। आछ्या आछ्या ठिकाणा देखता फिरा। पण तस्वीर जस्या उणियारो नीं लाधो। मेवाड़ म फरता चित्तौड़ पूगी गिया। अठै ही कोई जस्या उणियारा रा नीं लाधो। चित्तौड़ सू अजमेर आडी नै लिया। अजमेर रा ठिकाणा देखबा लागिया। फिरता फिरता पिरोतजी तस्वीर सजी ओठा मैं साथ निकळिया। चौहान ई आई चमड़ावत घोड़ा दौड़ाय मैं पाछा लाया। गढ म पिरोतजी बैठिया। ओठा नै देखता ई पिरोतजी हरिदा मन लिया। अंमसी नै पाड़ रो बर थो। अंमसी तस्वीर सोची जो रो सा उणियारो। बनी बने मांडू डीर टरता करै जमी मूछां सवार करती बराबर। पण देखा परतो पूरे। हंसता दांत मोती सा चमके।

पिरोतजी किया 'मारवाड़ सू आयो हूं। गढ़ बूंदाट म्हारो रैवास है। बाईजी रै बर देखबा नै निकळियो हूं। आजाजी आप्हीं आंगळी अलाई आप म्हारे मन म बैस गिया। ईंकी तो बाईजी रो नाळेर भेजावूं।"

देवाजी ईंग आया मैं भादो। देवाजी रै बात दाय आई नीं। थारी डूंगर हाड़ियां का रजपूत री बेटी। यो घर में आदर आच्छ्या टीक नीं। म्हारा भाई बनरी हो आपां डूंगर रिया पर यै तो जुगांवां साथ करे ई ज। आ ठाकरां री बेटी आवैला जो आपै हाड़ियां रो रगड़ो पीर मावे। आ तो नीं सोचर पारना नीं मानवी करैला। उप रै देगाजैन ये दूजी देराण्यां बैठाणियां नाना पै हंटपो चीकेला का निवाय। दो

• रगड़ो घर में वापरयोई नी। या सोच देवोजी जुवाब दीधो

"सिरोवजी आप पधारिया सो तो भली करी। पैंली बात म्हां तो सपटाई माई परणियोड़ा हां। दूजी बात के रजपूत म्हां जात रा सुथर। म्हाव सगाई आप आप री जात में ई चोखा लागै।

मोजो बोलियो मायो माळ र पाछा फेरयो चोखो नी लागै वाता।

देवोजी कहियो "राम सगाव रा रावजी ने माळ र भेलाय देवांला। वे ई आपां लारे माई ज्यूं रैवे।"

मोजै तो मर मोहरां रो थाळ सिरोवजी री ओरड़ी में ऊभो कीधो 'आप राम सिनाय वालो मूं थापू थडे माळ र भेलाय दो। मोटो घर। रावजी म्हांका मितर।"

राव वाघट पड़िहार ने माळ र भेलाय लारे रा लारे लगन भेलाय सिरोवजी सूं थाळ पाया। सिरोवजी आप ने लिख्यो,

"मार्ळ र तो राम रा रावजी न भेलायो है पण बणड़ावन बणड़ावन है। मोजो है तो गुजर पण हील रो माळर मूंछा री मरोड़ हाथ री दातारी म्हैं तो कठै ई सागी नी देखी। आप जुवाब दूं तो ल्यो पढे। रावजी तो भीम न मे वाप रोवता दीधा। मोजै घर मोहरां रो थाळ म्हारी ओरड़ी में ऊभो कर दीधो।

पंचमी ने आप लिख्यो "वांईजी वा री बात है। म्हैं ना म्हारे चाहिजै मोजो ई वर देखियो पण वे मानिया नी। वाहू रे भोजा बात। थां तस्वीर दीधी सो रो वा बणियारो। गुण सूं सवाया पग पूरो नी। म्हैं तो धणी कठी कठै ई देखी नी। राम रा राव ई चोखा है पण ऊ र वे कोराक पारा है। माळ र वर्त्ता ने भेलायो।"

नीं नार्ळ र नै माटो नै फोड़ियो क्यूं नीं ।" चंमली रीस कर नै बोली ।

"बाईजी यूं नीं बोलणो । फोड़ण गिया जो मोती निकळ्या लिया जो मन । बेमाता थांके मैं लिख दीयो जो वर ।"

"लाय लागो थारी बेमाता नै ।" चंमली पिरोळजी पै दोई हाथां सूं झटका दीधा ।

• • •

राण रा राणजी रो ब्याव मंडियो । बधावणा ईंगा बाजे । चूजा मैंगे मैंरे बाजे बनड़ावत ऊमटवार बैंवे । घोड़ा नचावता घोड़ा दौड़ता जावे । बनड़ावत चालिया घाटी मैं लड़बड़ धूमरी । बहहूड़ मगरा भूमरिया । मोखो वा राण मैं बसियो कलाळी रो घर पूछ्यो ।

आमा साम्हा ओबरा सूरज साम्हा पाळ ।
घर दोम कलाळ रो मांहा घर मतवाळ ।।

कलाळी रा आंगणा मैं ओबरा री चोड़ी कूदता आयी । कलाळी देखियो गाहक वा माटो आयो है । मीणा ओड़णा मैं ब्यासा ताळी बोली क्यूं गुलाबी मांगणा क्यूं तुड़ायो चोक । म्हारो दारू मूंघा मान रो है । थां सूं नी पोसारे ।"

"ईं नी प कलाळण थारा दुवारा रो मोल ।" मोखे पूछियो ।

"थां राण दुरड़ा पूछणिया म्हारो दुवारो कोई पीवोला । थूंजी सूं भी दुवान देखो आयो ।"

मेरो बोलियो "पातुरी मैं नगारा बन कर । दुवारा रा रूपा पटीजे मा । रूपा रा रूपा तोल दे । पू भर भर न घा म्हां बोक नपाम नगाम न पीवा ।

★ रमझो घर में वानधोाई नीं । आ सोच हैमोजी मुकाम दीवो

"पिरोतजी, आप पधारिया जो तो भली करी । थैंसी बात म्हां तो समझाई भाई परखियोड़ा हां । दूजी बात के रजपूत म्हा बात रा भूखर । म्हाय सपाई आप आप री बात में ई भोळा लागे ।

भोजो बोलियो आपो नाळ र पाळो फेरणो चोखो नी लागे दाता ।"

हेमोजी कहियो "राण मजाय रा रावजी ने नाळ र भेलाय देवाला । थ ई भली लागे भाई म्हूं रिे ।"

मोवे तो भर मोहरां रो थाळ पिरोतजी री झोळी में ऊंधो कीधो 'आप राण सिजाय जाओ म्हूं आगू बठै नाळ र भेलाय दो । मोटो घर । रावजी म्हांका मितर ।"

राव बाघट पड़िहार नै नाळे र भेलाय वारे रा वारे नगन भेलाय पिरोतजी नू थाळ आया । पिरोतजी आय नै कियो,

"नाळे र तो राण रा रावजी न भेलायो है पण सपड़ावत सपड़ावत है । मोजो है तो दूजर पण डील रो आछर मूछां री मरोड़ हाथ री दातारी म्हें तो कठै ई अबी नीं देखी । आहा सुजान भेु तो एहो व्हे । रावजी तो डील में थे पांच पोफड़ा दीधा । मोवे भर मोहरां रो थाळ म्हारी झोळी में ऊंधो कर दीधो ।

पैमती नै पाव कियो "चाईजी भा री माय है । म्हें तो म्हारे चाईजै भोजो ई वर है म्यो पण नै मानियो नी । वाह रे बोला वाह । थां तसीर दीधी जो री थो पणियारो । छण नू सजाओ पण पूछो नीं । म्हें तो अबी छबी कठै ई देखी नीं । राण रा राव ई चोखा है पण ऊपर रै पोड़ाक पाका है । नाळ र थणा नै भेलायो ।"

भी माळ र मे माटो मे फोड़ियो वधू नीं।" चंमली रीस कर ने बोली।

बाईजी थू नीं बोलसी। मोईम सिवा को मोती सिकोर गिवा को नेम। बैमाता थांक मैं सिस दीवो को कर।"

"नाप लाघो थांरी बैमाता पै।" चंमली सिरोठजी पै दोई हाथां सू झटका दीना।



राम रा रावजी रो ब्याव मंडियो। बधावणा गीत गावे। दूजा मैंन मैं नेम बधावणा उगम्याद वे। घोड़ा नचावता घोड़ा दौड़ता आवे। बधावणा चालिया बाटी मैं खदबद म्हेलरी। बरहुट बगरा घूघरिया। घोड़ो हा राम ने बांनियो कमाळी री घर पूछ्यो।

> धामा साम्हा धोबरा सूरज साम्हा पाळ।
> पर दोय कमाळ री ओला पर मतवाळ॥

कमाळी रा धांमणा मैं भोला री पोथी मूदरा नाखी। कमाळी हैसियो गाहक ता मोटो बापा है। भोला घोड़ां म म्हांना गाडो बोनी वधू गुवाळ धांमणा वधू गुड़ाथो बीक। म्हारो दाक मूधा माम रो है। वा मू नी पीनावे।"

"ई नी म कमाळण थारा दुवारा री भीम।" भोले पूछियो।

"थे दोय दुवारा पूछिया म्हा रे दुवारी वांई पीसोवा। दूजी मू थी दुवारा देखी आवो।"

भैवा बांनियो "बावुड़ी थे बातरा मन कर। दुवारा रा दूवा पड़ीने मा। दूवा रा मूवा सोम है। थू धर धर म वा म्हा बीक मगाय मगाय म पीवा।"

सुणतां ई पातुड़ी आंख री कोकी नै नमण देती थकी फेर न बोली "ए, है मस्त्या पीवण वाळा छावळा घोड़ी नै बंधो मेल पछै पुकारो पीवो।

'घोड़ नै पातुड़ी घोड़ नै घोड़ी रा गळा रो सोना रो छाकळो खोल दे। मोको सूझतो थको बोलियो।

पड़िया है सोना रा छाकळा। ठैरो म्हूनै छाकळो परखाय न लावण दो।"

पातुड़ी बोलतां ई छाकळो पग रे बाव खीचती घर रे बारे ई वाणिया री दुकान पै गली।

सवासुख सेठ देखतो ई बोलियो 'पातुड़ी क्यूं आयो क्यूं फेरबे। यो तो खरा सोना रो है।"

पातुड़ी तो फट छळाय छाकळा नै छाती रे चिपकायो। दौड़ी दौड़ी आई।

"वाह भोजाजी वाह। रात नै दारू पाय न तो म्हां ठग्या। पण दिन रा ठगारा थां हो। थांरी घोड़ी रो छाकळो म्हारे सोना रो मोल। म्हूनै ठग लिया हो। अंबरा दारू पीवो।" मद री गागरां साथ मूं आवै नैन दीवी। पातुड़ी भर भर पावै चमकावत बोकारा कर कर पीवै। मोवै कब न दारू पीवो। रावळी री बात बाकिया। चौईस ई माइया रे एक छरीलो बणाय एक छरीला घोड़ा।

> लाल गुलाबी पागड़ा, मसस बणाती बीएा।
> मड़ पीवीमू मोसरया कुण आमी कुण बीर॥

चौईसू ई माई बीर बाजे। भोमैजी भागरी बावळी घोड़ी नै सवार्ई। घोड़ी मार्तंड रो अवतार। ई तो पाबू रे केसर कालमी सती ही कै रामसापीर रे लीलो घोड़ो। घोड़ी तो गावण री मोरड़ी क्यूं नाचै।

चाळी में ठमका करै। पवन सूं वाता करै। तारा सूं चोटा करै। कांचळी रै पल्लां में बादळिया मैवर। सोना री कुरताळ। केसवाळी में मोती। मन्ना में नौसर हार। नाक मांय रा पागड़ा। हरियो बनाती जीण। दुमणी रै पाट रा फूंदा। चोटी सूं धूंध बणी। मोना रै माथा में पचरंग पाग जिण में मोमेरी तार चमकै। लाल गुलाम माड़ा वाळी सांगानेर री सुतरण। पगां में मारोठी मोचड़ी। पेचा में पून्नड़ा कड़िया में बांगन्ये कटारो। सोरठा। नरवार बांध डेरा तक रो ठामणो ने हाथ में मांजो घोड़ी चढियो वरती थोड़ो थाथी। पवन सूं पाळ में पूगी ईहड़ मोहल री पाल रै मामड़ो आयो। मोताजी री घोड़ी ठमका करती नाचती पाल री। लमठा रा चिमटा आमियो बीर पो है। राण रा राव सामड़ा कोई आके नी सैप मोमा ने ई देख। मोजै घोड़ी रा पक्का मे बाल्या डोरा में मोहरां पोच राखी। घोड़ी नाचे ज्यूं मोहरां गिरै। चिमणा मोहरां लूटे। मुसायां मोताजी रै पटम बजावे बधड़ावस मुँहुमो भर भर मटमा में मोहरां न्हाके। घोड़ बाबियोड़ो राण रो राव पाठे उग ने कोई पूछे ई नी। राव रै मगनी लागी। बीर तो मोमो बण रियो म्हारी पूछ ई नी। मोमराठ ने हुकम दीनो। मोमनार ने छड़िया हाथ में दौड़िया "बीर राजा पाठे हाथी पे सवार है। पटम वारे बजावो।"

मिरगा आदियो चामी घरमा तो बीर बजाता बस्यो ऐना। चाक दमीण ने न पटम बीर रा हाथी वाली दौड़िया। राव रा चिमण पटमा में चाने वो गिरिया कै पाच गिरिया। मुसायां गिरियां ने कौड़िया वाठा वा रा गिरिया थारै रैवारो। म्हाक घोनी चावे।"

बीर न देख मम सुमाई करवा लागिया बी बीर ? म्हिना बी बीर ? बीर तो बाई न हो जो घोड़ी नचाता मोहरां उछाळती आय रियो।"

मो ए नी बी' रा या ई न दीवे। देखो मी चोड़ चढियाड़ो है।"

में तो फूटिया म्हारै भीछ रा करम । यो तो डोकरो है । ई रै म्हारै हेरियो जैमती म्हारै रै जोड़ रो तो यो घोड़ी रो सवार है ।"

देवाण माळा आदमी सेन गीत रा हाथी ने जोड़ मोमा री घोड़ी फर्ज भावसिया ।

राणजी ने घणी रीस आई । फेरो दीधो । सू माळ रा मावसिया सू देवजी री मास्यो राणजी ने मोमा छाक पूछ ही लीधो ।

"थे सिरदार कठा रा हो ?"

राणजी रीस में भरियोड़ा तो हा ही घ ई हुकर तो म्हारो मामलो मार लीधो । सू ओ मसकाय न बोलियो 'ओ तो म्हारो आसीरवार है ।

आ सुणताई मोमा रै पड़ी पसीटे आग । आंख तरांस पूछियो 'क्यूं किमो राणजी ? म्हूं थारो आसीरवार हूं ? म्हूं तो भाईचारो राखण आयो हूं । सामही थारी छोमा बखाण रियो हूं । अठे थांने परणायो कुण है ? जैमती रो माळ र गई देखायो थांने ।"

राणजी मसकियो मनो हो "थूं परणाय म्हूने ? हुकर रो छोरो । दो टका म्हैंसिया थो मार्यं ई परवा नाखियो ।

मोमोजी तो रीसाय म्हारा ई बाय में डेरा लगाय दीधा ।

ठाकर री हलक कुण पकड़ ? जमा जमो मोमा रा बखाण करै राणजी नै बिसरावै । सुणायो मर मर सू ओ मोमा रा रूप रा बखाण करती जावे हुटिकोड़ी मोहरां बतातो जावै । जैमती पैला ई मोमा रा बखाण सुण राखिया हा । मोमा नै परणबारी मन में धार ही मवे यमा जमा रे मूँ कै मोमा री बातां सुण मोमा नै देखबा नै मावती म्हेनी । मरमी दाम छोटी हीरा में देवाँ पाडियो

हूँ क थाम रसिया मीज ने देखवा चालां।"

"किण तरै चालां ?"

"चाढ़े चा वर । रसिया मोज ने तो देखणो है। चलावी रो भेख कर न चालां मन हैं दूजरी बखन चालां पण चालां।

पातुड़ी कलाळ बण चालां म्हारी हीरां
मदर माल ने हाय चालां चालां ए
हैं जिण जिमया चालां ए
पांना दूजरी बण चालां म्हारी हीरां
रस रसिया ने दहीरो पावा चालां ए
इण विध मुजरे चालां म्हारी हीरां
इण विध मुजरे चालां ए।

हीरा बोली सू भी कांईला सू जिनली ने ठा पड़ जाव चालां तो पाणी री पणिहारी ऐ बाग री बावड़ी पे पाणी भरवा चालां।

चंवरी धर हीरा साथ में घूमियो बीनमो। हाथ में लोटी लेय लीवी। पाणी भरवा चाली। बावड़ी पे आव आयम विछायो बोईम है बावड़ा रे सार्व सान रीय लियो। चंवरी मर्थ आमम पे मोमा ने पोलिमदो बोले चेमे बागी में केवड़ो पूमियो तारा रे विचै चंदरमा पू चांदियो। चंवरी ओ चतराम रो हुई ज्यू ऊभी रैदी। आगे पग देवली पाछे न पाछी। मोमा री निजर चंवरी मार्थ पड़ी। मोमा रै तो होटों रे मान्दीवो प्यालो हाथ मे रीहियो। या मयी कोइ न मारै निरख रयी है के चतराम भाट न मीचे उभी है। हैं पूज ही हमर री दावता है के कोई गान्धर्व री धरमम है चंवरी तो हटकी मणादो मोमा के देवे

भोजो मांडियां फाड़िया चैमती नै झांक रियो। हीर चैमती रै टल्लो दीनो।

"चालो नीं पाछे। कोई ओळख लेई।

चैमती नै ओळांण आयो। आगम पै घणी समा री निजर चैमती काली। चैमती तो पाछी फिरताईं माथा रा वड़ा नै बैठियो नीचे।

"हीर म्हूं तो भोजा नै परणूं।

"काईं करी बाईसा।"

"करे काईं? परणू तो भोजाजीनै नीं तो कटक न पड न मर जावू। जिण री सांकळ आमण भर जावू। तू जाय भोजाजी नै कै म्हनै परणे।"

चैमती तो म्होंनी पड़ी थी। हीर जाय नै कैदी। घड़ो माथे लेन बावड़ी में पाणी भरवा उतरी। चुकलियो भोजै बंधोले भरे रीतो करे पाछो भरे। हाथा दूखी करे। भोजो ऊपर सू देख रियो।

"घड़ो ऊचावणो है काईं? ला म्हूं ऊचाय दू।" कैतो भोजो बावड़ी में उतरियो।

घड़ो ऊचाय न माथे मेलावती हीर बोली "चैमती तो थांनै परणेला राजजी नै नीं परणे।"

"सांची?" भोजा रो तन मन आणंद सू भिजस गियो।

"सांची" चैमती कैवायो है थां परण न लेजावो।

भोजो विचार में पड़गियो परणे किण तरै? राज घराणे री जाण पाळोड़ी बैठी। वा उण जात री जानी।

हीरू बोली "था नीं परणीजा तो जैमती तो म्हैलां सूं पटक न मर जाय।

"थो स म्हारा हाथ रो धागो अर थांरा रो रूमाल। जैमती नै फेरा लुवाय दोजै।"

हीरू तो मोजा रा हाथ रो धागो थांरा रो रूमाल ल नै चाली। चामती लमी बाय सूं गुदड़ा रा पागड़ा खोलती लपी। जैमती तो गुदड़ा रा पागड़ा नै बीच राय भाजा रा थांरा रै, रूमाल रै फेरा खाय लीया। पछै हठ कर नै बैठगी राव चापट सूं नीं परणूं। हीरू नै भेजी "जा मोजाजी न कै थारी परणियोड़ी हूं। वो तो रै लारे बिवाव व्है कोई। राव रै लारै फेरा नीं खावूं।"

मोजै हीरू रै लारे समझाई "कटार सूं राव रै लारे फेरा नीं खावैला तो राणी व्है जावैला। म्हारा सिपा सूं कटार फेरा फिरजा। राव बिजाय गियां पछै थनै लेय जावूं।

पछी गुदड़िया जैमती राजी व्ही। राव चापट हाथी रै होदै चढ़ तोरण पै आयो। जान मे सांखली पोड़ी पै गुराला भोजो ई आयो। बीर तोरण मारे पटा पैली तो भाड़ी गुराब भोजै तोरण पै तरवार रो टचको मार दीयो। पाछो बीर देखता रै लियो। बीर चंवरी में गियो। ठैरू मोहँसी बैठी परणावा बैठियो। जैमनी दूजा राज रै लारे गठजोड़ो बांध चंवरी मे बैठी। दूजा रै हैल हैल लागती करे। फेरा फिरवा लागिया। मुजरा लागो।

ऐसो फेरो जेठू लिया दूजो जेठू रो बाप।
दर्मी दावर दायमा देवी दोवड़ दाप॥

मेळ मन में कैवे,

रैग्यो दोवड़ बायबो रैग्यो चौवड़ बाप ।
बूढा ने परणावतां लाजां मरू ओ बाप ।।

दूजो फेरो लीबो कुंवारां वाळो

दूजो फेरो मेळ लियो सैडो मेळ री मांय ।
देसी दोवड़ बायबो बेसो चौल्हर गाय ।।

मेळ मन मे कैवे

रैग्यो दोवड़ बायबो रैग्यो चौल्हर गाय ।
बूढा ने परणावतां लाजां मरू ए मांय ।।

बळ्यो बळमती भैमती फेरा खाया । परणाय सीख दीवी । रथ में बैठी भैमती जावे । रथ रै मोळ्, बोळ घोडी सु बाळो मोबो जाय । रथ री जाळी में सु भैमती झांके । राव मिजाज मसीक थाई । गोठा रो मैलो पटियो । बमड़ावत आपरे घरे जाणा लागिया । हीक रै सारे मोला ने समीचार भेजिया । मोबै एक महिना म जाय न लेजाणा रो बचन दीबो । भैमती राव रे सारे राव मिजाज थाई । बीनणी ने बधाय घरे लीनिया । भैमती राव रै सारै महला चढे जाणे बाबो पोती सारै जायरिया । राव पस्सी बरस रो डोकरो । दांत पड़िया मुख बीखरो मूडो पूटी पोळ । माथो धोळो धप्प । डगमग डगमग हाल गाडनी बीं पूंचा मैं पाव । करड़ करड़ गोडा करे । डोकरियो महला चढे दे दे गोडा रे हाथ ।

भैमती बट न म टियो बैठी । मां बापां ने सिराप देवा लागी जका

भरवा बूढा ने परणाई ।

सावण पर पड़जी बीजळी
माता नै खायो नाग
बीरा नै खायो मोयरो
डोमुं मरे अमावस रात
वर बूढो परणावतां
म्हारी भैणा उछटवी नींद

थमती ढोलरिया मे देखें ज्यूं जब रे डील में आग लाग लागे। ढोलनिया मू डो देख न ठो जब रे मन में आवे आऐ लारो मैन दू । हीर मे यूं कै

हीरां म्हने भावे सेलणो, (ई) बाप्पी ने भाव नींद ।

अमती मोआ भाक ठमक ठमक करे। मालढ़ियां मू पोलढ़िया उघारी माने दिन दो भाक रे बोठो मोआ मू दिन जावू । मालढ़ियां में दिन दिन दिन काढ़े। एक महिनो बीतियो दो महिना बीतिया । छ महिना बीतिया । मोओ मम्यो नी । हीर मे दियो

ऊंची घर जा डागळे चढ़ चौबारां माळ ।
पाछोबला'' भाव मे, मोज बन्य भरतार ।।

हीर बोलो बारैजी मास ई पाच्छा डुजरा में रीमया । रात दिन भोओ मोओ करो। रात रा रात बायो बर मिलियो है मूम रो मोबयो। मीटा रो बीबयो म्हेलो रो रैबयो । आने बादे हाबर हाबर करती

छत्तीस छोरियां फिरे। बाबा वो नी मोमा में परो। राव रा बनी पै रीझ्यो वो भली देख्या म्हे।

"रीझे राव रा बनी पै! बोलसिया पै! म्हारी भिवर में मोमोची बस रियो है।

> मोमां री मूं छ पै नींबू ठरे सचका करे कवाण।
> भागो बाळो रावमे भावां मोमा री सार॥

हीक कियो 'पठे वा रै मयगयाठी घोड़ा बंधिया है। हाथियां रो छै है न पार। लांबो चौड़ो राज। नीबल मालबो दूध रियो है हेंब मेवाड़ वारै करै नट री है। बाळ मोमा रै नारे बाळ मोमा रै घारे। दूध पाबोला दूध।

चौमती बोली "म्हूने तो मेवाड़ रो धन चावे न कोई मालवा रो राज। म्हारी माळी मु हाथी मरो न घोड़ा पै पटकी पड़ो।"

> छोरी हाथ्यां पै पटकी पड़ो
> घोड़ां रै उठो रोग
> मोसब मरजो मालवो
> हेंब मरो मेवाड़

हीक चिड़ न बोली 'मोमो मोमो करती रिया हो पन मोमा रै लियां खबर पड़ जावेला। धवाव तो दवणी नीर चोक न बोसिया पै बैठिया हुक्म चलावो। मोमा रै घर लियां रैवारी कासी चूं वड़ मोसबी पड़ेला वो मरजाटे पतीनो धाय जाय। वे हाथी दांत रा चूड़ा पैरणा भूल जास्यो। वे दूसरों रा घर है हाथ में सैर पाथ रो पीतळ रो चूड़ो पैराय। मेलां रा पोळणा पर चूरमा रा जीमणा अठे नी है। अठे छाछ सबोड़्यो छाछ।

दुसड़ो पास्यो म्हो राणो चैमतो, मत चाखो माजो री सार"

चैमती चाबड़ हिलाई चालू मोजा रे लारै चालू

हीरा म्हो म्हलां रो पोडणो
मोती तो चढ जाय
खाटो नाम चूरमो
म्हने माठी लाग जाय

हीर बोली "बाईजी थाण्का रीझ्या दूजरा पूवर चडा गवार। मोसम मारको लागता ई थारा झुमाड़ा मे कीच मच जावे। माछर भरमावे। मोजो पूरी पसेरी रो चावळो पींच्याने देवेला चाव चीन री डोर चमर कै मार मांटा न बावणी पड़ेला। माथे गोबर री हेला घठाय न न्हाखणा जाजो। बाईजी छटक पड़ला चावळो छटक पड़ला रमझोळ।"

चैमती बोली "कोई बात नी। चावळा ने तो चढ न ऊभो चाव नु मा चचक न मावे गोबर री हेल सठाय है ठोकर री च्हसो कोस मोजाजी रे सेठे काम करवाने चालू।"

हीर बाली ठोलियो चूटिया चारा। माचर री हेला घटावमी है मत मै काम करणो है चालो मोजा रे लारे।"

ना जनम दे चामज लिपु चोळू चावे रनिया मोज री।"

• • •

उण्टा चाचो मे मैटा चर मोजो चैमती री चादर मु ढाकं मेलियो। चमती मे लचा जालू।

छत्तीस छोरिया फिरे। घाबा वो भी भोजा मै परो। राज रा धणी पै रीझै या भली बेळा व्है।

"रीझै राज रा धणी पै! बोलमिया पै! म्हारी निजर में मोजोजी बस रियो है।

भोजा री मूछ पै नीबू ठरे नचका करे कचारा।
घामो काळा रावजे घावां भोजा री मार।।

हीर किमो घठे घा रे मनमजली चोड़ा बंधिया है। हाथिया री मैं है न पार। लाखो घोड़ो राज। नौसल माळ्यो दूध दियो है हेत मेवाड़ चारे घरे भट री है। चाऊ भोजा रे लारे चाऊ भोजा रे लारे। दूध पायोजा दूध।

चैसटी बोली "म्हूं तो मेवाड़ री धन चावै न कोई माळ्या री राज। म्हारी चावी नु हाथी मरो न घोड़ा पै पटकी पड़ो।"

छोरी हाथ्यां पै पटको पड़ो
घोड़ा रे ऊठो रोग
नौसल मरज्यो माळ्यो
हेत मरो मेवाड़

हीर चिड़ न बोली "मोजो भीजो करतो रिया हो पण भोजा रे गियां खबर पड़ जावेला। मवाड़ तो रावजी चीर मोड़ न ढोलिया पै बैठ्या हुक्म चलावो। भोजा रै घरे जियां रैवारी काळी चूंदड़ ओढणी पड़ेला या मरजादे पळीनो आय जाय। वै हाथी दांत रा चूड़ा पैरणा भूल जास्यो। वै मूमल रा घर है हाथ में सेर पांच री चीतळ री चूड़ो पैराय। मेला रा पोशाा घर चूरमा रा चीमणा घठै नीं है। अठे फकत सबोड़म्यो फाग।

धुसड़ो पास्यो भो राणी बँमती, भत आयो मोर्यां री सार'
बँमती गावड़ हिलाई जाणू मोजा रे लारे जाणू

हीरां सो म्हनां रो पोड़लो
मोडी तो चल जाय
भाटो भावे चूरमो
म्हने मीठी भावे छाछ

हीरू बोली "बाईजी आच्छा रीझ्या पुगरो पुवर बड़ा मवार। मावन भावलो आयतो ई यारा पुगवाड़ा मै बीच मच जावे। माछर मरजावे। भोजो पूरी पचीटी रो जावळो पैरजावे हेबेला पाव तीन री ढोर नमर कै मार मांदा न बोयची पड़ता। भावे गोबर री हेला छठाव न म्हारका आवो। बाईजी छटक पड़ता आवळो छ्यक पड़ता रमभोल।"

बँमती बोली "कोई बात नीं। आवळा मै तो नव न ऊ चो काम हू ता मवक न भावे गोबर री हेल छठाय है ठोकर री फ्यछो बोल पोआरी रै दावे काम करवाने जाणू।"

हीरू भाभो ठोरियो "हूटिया पोट। गोबर री हेलां छठावणी है पव मै काम करमो है भावो भोजा रै भागे।"

"मा। चमन है भापव निगु बोल पावे रसिया भोज री।"

•

•

•

सपळा भायां नै भेळा कर भोजो बँमती रो बापर मूं बाई भेलियो। 'चमनी नै सैवा जादू।

सैम माई बिचार करण लागिया । सैम माथो री सुगणी बैठाणिया बैठाणिया भेजी म्हैगी। सुगणी मोबा ने घरणा लागी समझावा लागी । मोबा रो परणी साढू बोली ।

थांरे आगे नवी मथे थे मयू क्यूं जे म्हाय ।
साढू सरीखी मस्तरी थे क्यू परार्ई लाय ।।

मोबो बोलियो म्हांने जाणो पीवा बिससता बोमत बरणो म्हारी नार ।"

मेवा री सुगाई नेतू पू बटो सैण न बोली पीठनी घरग्या माग मायो ।
एक पांव रे पू छड़े क्यू मोठा न जमाड़ो हो ।

सैयाणी री सुगाई मोबा ने समझावा लागी "देवर, थमें परणवा री है [illegible] दूजो ब्याव कराय दू । म्हारी सगी बैन ने परणाय दू । एक नी हा दो दुवारिया परणाय दू ।

'भाभी थांरै बैनड़ी थांरै मा री दुवारियां । कांई बात करो ?'

मोबा र एक माई बीचे ई बात काटी 'दुवारियां? एक सू एक फूटरी ।
बदनोरा में कांई कम रा माटो है ?'

बदनोरा री दूजरी कड़िया रळता केस
माम्ही माळी नाक में काय बिच कामळ रेस ।।'

रैयोजी बोलियो थू बात करे दुवारिया में कांई ।

कम नगरा में कान्ह
कम गोरन्ड में दुवरयां
गोरन्ड मा री दुवरया
मियो कान्ह मे माय

एक ब्याव करले तो करसे दम परसे । पराई लुगाई भीवता री लुगाई मत ना, पछताय ।

भोजा बोलियो 'बड़ाई मत करो । जाणूं थां री काम्ह मैं भोळपी दूसरियां मे ।

सोळा न्हावे सोगरा बड़ी मर्मेरे घाम
पातो सयोटे राव रो, पीवे मद्दगो छाछ ॥

ठेजाजी री लुगाई बापडी मूं मैं बोली "जाया रे मत परण दूसरी नै । देवर, पर काठ राखी चलो तो बात थनै जाटणी परणाय लादूं ।"

देवर, हो परणाय दूं जाटणियां भला करू ब्याव
खारी पै बबरी मांड दूं भालाळा ठोरण पांव ॥

भामी म्हनै जाटणियां नी परणणी ।

कानी परणूं जाटणी कोनो बराणा नानांग
पै बाडा पगां मा जाटणियां चाने धम धम धास
ऊंचा कम मे पावळा काटे बगळ रा माड़ ॥

भामी मैं रीस बापडी 'थनी का जैमली म्हारी मैळ पस्तोक लंबो है बठा री मरुधरा है ।"

भाभी जैमली री बात मत पूछ । जैमली जाळिना मांडे तो चौसह भगट न पावे । या म्हेला मैं बोल काढी कोयल सूवा लैण साथी । मी तो मामलो माणक मैं थमी पसरी है भी देवळ में ई थमी मूरती रिम री भरियोड़ी है । जो तो चढ़ियाड़ो मांचो बजावो किया है भगवान री मूल मे बल दियो ।

ना देवळ में देवळी, ना मर्दां में नार
पड़ियो सांचो ढळ गियो भूस गियो करतार।''

देवर बरस बरस फीकी पड़ी फीका पड़िया नैण। पर नारी रे नाळे मत लागो। पर नारी दुख री देवास है।

पर नारी पैनी छुरी तीन ठौड़ सूं खाय
धन हरे जोबन हरे, पत पंचां में जाय ॥''

"धन, जोबन अर पत कांई जावे तीन जाय तो ई परायी रै मैं म माड़ ।"

"वो रै थे नाई मिलो देवर। वां रा घर में वासू लड़ीजी मस्तरी।

घर कस्तूरी नीपजै घर घर मैवरा जाय
घर ढोल्यो घर ढोलणो घर घर पोवण जाय
घर देवर नेड़ा पड़िया, घर घर धीमण जाय ॥

वो मोतियो भाभी वां बरस लो लिया हो। पण वां ई वंधो रूप घर री सुगाई हुवा रै बरे ठौड़ वां कांई? रामी जैमती चोखा पर्तणियोड़ी है। पर्तणियोड़ी रावळ भोज री भोज रियो पड़िहार।

चोख अमोल चोर री नीं तो मीर री ॥

री री सुगाई नीरातो म्हारियो

"वरजिया मामो वगडा पता वां रे भवें सीस वे काळ।

सिर वे माळ मंच रियो है। मारिया वावेला। रामी जैमती ना पड़िहारां री दस मह मोडा वे पावेला। वां कपोला।

पां ने पाणी देवा वाळो कोई नीं आवैला । आ थां गांठ बांध लो ।
पैड़ साथा ने ठाकरां तो भेज दिया हो ।

नीं मानिया । मोमो घर भेजो घोड़ा चढ़िया । आथ राम भिनाय रा बाग में उतरिया । हीरू ने पारसी भेजी । अंधारी रात । पहोर रात थी । जैमती घर हीरू मेलां नीचे उतरी ।

पैरा वाळा पूछियो "हीरू था कुण है थारे सारे कठै जाय री है ?"

हीरू बोली 'आभाईजी रा बैटा री बहू है । पां ने घरे पुगाय आवू ।"

जैमती चेमकुमड़ो पैरा वारे निकळगी । गांव रे बारे बाग में घोड़ा कस्यां मोमो घर भेजो ऊभो ।

हीरू बोली 'बाईसा राजपाट छोड़ दो । थंवारी चाल चालो । थने पूजरा रे साथ दिया हो ।"

"गैरा चाल तो म्हारी चालस्यां हाथी तणी हिलोर । राजाजी रुसणा तो मांव मोमेला म्हारी चाल चोहे ई भोम मेई । चालूं ना तो का ई चाल ।"

जैमती ने देखतां ई मोमो भागे बढ़े पावड़ा दो देय जैमती रो हाथ पकड़ियो ।

पायो राणी जैमनी, मोमाजी री बांह ।

जैमनी बोली

"पां ने चाहूं बाप को पाल्‍र प्राणीप्‍योज ।
माऴी मेरा ठोर ज्यूं, बांध न पाळी बोझ ॥

भूमल

परिहारां रो साथ चाहियो मा नीं धै के वा डर न पाळी म्हूं राच के सू प हो। पीलां में बचन हो तो पछे आवू।"

मोजो पावर सू बांह पकड़ ने बोलियो

> पावो रासी सीमती पाबर आधीस्याह।
> सिर कटे धड़ तड़फड़े परत न पाछी दाह॥

माथा कट जाय धड़ तड़फड़ जा तो ई वां रै पाछा नीं वां। आवो।" पकड़ हाथ खेच ने मोजै सीमती नै घोड़ा पै चढाई जैवे हीरा ने चढाई। लगाई घोड़ां रै एड़। जिम जाय घोठां में ऊभो

फळमा पे जाय जैवो हेलो पाड़ियो सीमती ने बचावा वारे आवो। कोई हेराणी बेटमी वारे बचावा ने नीं चीख्यो। 'म्हारी बेटू उठा ने माई है इण ने कुण बचावे।" मोजा री परणियोड़ी लाडू बोटो मन बीयो "माई है तो म्हारो परणियोड़ो जावो है वरी माई है। मूं बचाडू।"

उप जाय ने बचाई माम म्हारी जाती पे पग देय ने जाव।"

सुर्ग मौनो हैं सीमती नी। हाको किमो। सिरदार कटवाडिया। रासीजी मर्हे ? वे तो कुबे बावड़ी पड़ ने मरी वे मोजो लेय लियो। गोठां माली पाटी में योग कमो।

> घड़ो चढो ठाकरां, पाटी काढो लोज।
> कै वेळ कुबे पड़ो (क) लेम्यो गूजर भोज॥

राव परिहार ने खबर दीनी

कनक महल काळा पड़्या, सीमी पड़गो छांह।
राणो ने माओ ले गयो, पास गळा पिच बांह॥

हाको फूट गियो। मोळे रा पूगर पछ मे भामा मणमेलां रा कटेड़ा सू राणी ने उतार ले लिया। राणी ने पूगर ल लिया। कुण बरदास्त करे? किम सरं करे। कुण है राणी ने मिजाजियो? पाछी लाको सोच।

तिल दू मा दळ बैटो पछे लियो। नपारो पे डंको पड़ लियो। सिपुरा सवीजण लागिया। लड़ाई रा तूता फिरण लागिया मारत में बैसा बापजो छट वारी रे हीर। बैठ वास्ते युद्ध मच गियो।

मदनोरे मैसर बटे मारे संघवा गीत।
तुरक गोरी रे मारणे भाग रहिया रणजीत॥

मोळे रा पूगरां रे नाम परवानो मिलियो

"म्हें तो बाजनो सू राणी ने साथ सूप वायो नीं वो नाम बदळावना रो नीं रैता। मोळे रा पर जमीसेट म्हेलां दीलेमा।

सांडीवान परवानो लेय दौड़ियो। बैसा में रामड्रा गांव। पाली भर बोमामी री बेटी दीपचंदर माय री। छाना लड़का सांडीवान ने रोक ने पूछियो

"कठे जाय रियो है?"

"मोटा बापसियो हूं। लड़ाई रो परवानो ले जाय रियो हूं।"

"ला परवानो म्हने मैंना। म्हे मारत भेजियो।"

'थारे काई मसखरी करसी है। म्हारो कठी देख्यो नी है।"

"मसखरी किणरी करे, था परवानो भेजा। म्हूं सोढा पुंवार री बेटी हूं। म्हूं मारवा मेल री हूं।"

माथा रो बेवड़ो उतार सांडीवान रै माथे दीपकू बर फिरमी।

"था परवानो भेजा नी तो थाप मार परवानो खोस लेसूं।

मसी अपेडू आप की मूंछो राळू फेर।
मावड़ पाछो आवजे, कै दीजे समचार॥

सांडीवान परवानो रै मजरल मरियो राज लिनाम में सिरदारां ने जाय समचार सुणायो।

म्हें सड़ता देख्या लोग ने सबै सुणाया जाय।
कंवरी रायळा मांयने, मारव मेल्यो नाहर॥

दीपकंवर मामली मामली चरे आई। मढ माथा रो बेवड़ो उतारियो। दूरीदूरी लोग री उमरे लोग देख्यो कठै ई पनघट पै किण यूं लड़ मसड़ न आई है। पूछियो "कळी मळी बेवड़ो क्यूं उतारियो आज?"

"म्हारो बाप राज लिनाम री राणी नै ले आयो। जो तू ना दळ फौज चढ़ न आय री है। कठै मळे किण पै है? लड़ाई रो परवानो भेज दीधो म्हें। म्हारा बाप पै राज पमाय री जो तू था फौजां चढ़ी है आपो ने काई करेला? लड़ाई व्हेला माथा टूटेला। ने पोळां री बुरजियां मे मपूठी बांध बांध राज लेजाय। बावड़िया बणावेला पाणी भरावेला। दीवता दीप पा पसा देखणी आवे के? म्हें म्हणको भेज दीधो है।

तू कैसी भेळी है कै भावठी भेळी है म्हारी तिरिया। मटै ई सावन री नुमितयोड़ी मांग तो नी सायनी है? भारत तो भासाळा ई करेला कै सब ला बांकड़ली मूछा रा सिरदार। रण भारत में थारी म्हारो काम नी।"

दीतवंवर रा रीस सू होठ भुजता लागिया करड़ रा बोली

सायर रा मारे बाळका
पोडया रा पूरे सरीर
सर दीजै माथा री पागड़ी
सर दै रण बांधी तरवार
जब जब भारत में भाला बाजूला
जब जब बाढ मोरठड़ी तरवार
धन्नो धन्नो री उतार सू ला पागडियां
धन्नो मनां रा तोड़ला धड़ सू सीस

दीप वर भापरा मोटयार ने किमो "तू जा छिर न बैठ जा घर रा खूणां में।"

धावठी पोजां रे भाली फिरमी दीपवंवर। एव भाला में पोला रो रो सू छाला समलाव। दीतवंवर रा पुरजा पुरजा कट पड़िया। वैरावत बामनी।

घोर जना मह लोग राघवा में भड़े सुणायो।

पड़िहार रा मो सू वा दव मोटा रा दुकरा ने मार नरिया। जनराजन ई हरषात सू उ मड़दिया। भड़ालियों [illegible] करी परदाटे बोले

धाड़ियां री तरवार। भाला बाजे पसिया टूटे। लोथां रा डिगला लागगिया, लोहियां रा खाळ बैवगिया। धरती नवी लोहियां सू लाल व्हैगी। दैव धाई मन्न कट मरिया एक ठिकोजी लाय निकळियो। हमड़ामतां रै कोई पाणी देवणियो नीं रियो। धरती लाली व्हैगी।

थ्यासो डाभी

काठियावाड़ में काळ पड़गियो। चारा बिना पाणी बिना त्राहि त्राहि मचगी। नाडा तळाव में पाणी नीं। रोई में चारा रो तिणखलियो नीं। पेट सूं पसवाड़ा मिलगिया। गायां री आंख्यां में गीड भरिया। जिनावरां री हाडियां निकळगी। होथी पण आपरी भैंस्यां साम्हो झांके र काळजो फटवा लागे। घर री लुगाई उठती बैठती पूछती रै।

मां डांगरा रो कांई हुसी।"

छोगल ऊपर बैठ्यो फिरती फिरती कैवे "बापा, आपरी भैंस्यां माड़ी माड़ी लागे।

ई होथी बरस्या सीपाने हाथ में पकड़्यो होथी निसासा नाखतो कैवतो "म्हारी कांई है बेटा हाडकिया रखिया ओरा। भीतरा ओरा में म्हारी रा पग ठिकाणो कठै थोरो आपड़ो भटक दियो है।"

काळ में ऐंयन कोई पन में मारयो मोड़ो ई है। होथी बळोरा ठाठ छाव बीमी केरा में चारा पाणी री बणा दिन काढवाने चालियो। इयारा भैस्यां री हार चाली। भैस्यां निकळी जदी मैं चरती चरती चलती जाती। गोप लुगाई छोरा छोरी भैस्यां ने हमकारता चमकारता ठाड्या जावे। बीपमान चालो। चहूरो मुकाम। नारा वाड़ी,

धाड़ियां री तरवार। माला वाळे धणियां टूटे। लोगां रा डिमला कावनिया, लोहियां रा बाळा बैयणियां। सारी नदी लोहियां सूं भाल व्हेगी। डैम मांई कट कट मरिया एक तिखोणी भाग निकळियो। धरड़ावता रै कोई पाणी देवणियो नीं रियो। बैवती सदी व्हेगी।

ध्यासो डाभी

काठियावाड़ में काळ पड़ियो। चारा बिना पाणी बिना त्राहि त्राहि मचगी। नाडा नाडा में पाणी नीं। खेतां में चारा रो तिणखलो नीं। पेट सूं पसवाड़ा मिलगिया। गायां री पांसल्यां में गीड भरिया। जिनावरां री हाडियां निकळगी। होथी जद पारकी भैंस्यां साम्हो जोवे र काळजो कटवा लागे। घर री लुगाई उठती बैठती पूछती रै।

"म्हां डांगरा रो कांई हुसी।"

कोमल स्वभाव बेटियां फिरती फिरती कैवे 'बाबा, पांसळी भैंस्यां आड़ी आड़ी लागे।

ई होथी भैंस्यां डीगाने हाथ में पकड़ियो होथी दिलासा करतो कैवतो "म्हारी कांई है बेटा हाथिया ठीमिया बांधा। बीरबल मोरां रै भाखी रा पग तिमळगो थई कोरो पाणको भटक दियो है।"

काळ में ऐसा कोई जन नै मारयो चोखो ई है। होथी चतोल बाता बात थोरी बैठा नै चारा पाणी री चणा दिन काढवाने बांमियो। हजारां भयां री हार चाली। भैंस्यां निकळगी चढी नै चलती काढी परती चाली। मोप लुगाई छोरा छोरी भैंस्यां नै हमचाळता चचकारता टांडिया चाले। चौमास आयो। मह्रो मुकाळ। नाडा भरी,

पाड़ियां री धरधार। भाला वाले पखिया टूटे। लोथां रा ढिगला लागिया, लोहियां रा खाळ वैविया। कांठी नदी लोहियां सूं लाल व्हेगी। दिन आंथे सट कट मरिया एक हेवोरी लार निकळियो। समझावतां रै कोई पाछी देवणियो नीं रियो। दीमती सती व्हेगी।

आसो डाभी

काठियावाड़ मैं काळ पड़ग्यो। चारा बिना पाणी बिना ढाहि ढाहि मरग्या। नाडा ताळा मैं पाणी नीं। खेड़ै मैं चारा रो तिणखो नीं। पेट सूं पमपाड़ा निकळग्या। गायां री आंख्यां मैं नीर भरिया। बिलापरा री हाडियां निकळगी। डोफी जद म्हारी भैंस्यां सामो झाके र भाटक्या करता जावै। घर री लुगाई ऊभी ऊभी पूछती रै।

'आं डांगरा रो कांई हुसी।'

डोकरा उगत बैठ्या फिरती फिरती कैवे 'भाभा, म्हारली भैंस्यां भाड़ी भाड़ी लागै।

ई डोकरी अन्ना मीचाने हाथ मैं पकड़ती होती निसासा नाखतो केवतो "म्हारी कांई है केन हाडंकिया रेतिया मोरा। चौकस्या मोटा तो माणी री पग तिमळ्यो कठै चोरो सामळो नटक दियो है।"

काळ पै रैवन कोई ध्न रै मारजी चोखो रै है। डोफी कडोड बाळा बात थोडी केरा न चारा पाणी री सुवा दिन काढवाने चालियो। हजारां भैंस्यां री हार चाली। भैंस्यां निकळती जदी कै धरती धाकी धकी जाती। मोर मुलाई चारा चारी भैंस्या कै हलकारा चलकारा डोलिया चालै। चौमासा चालो। म्हारो मुलक। माता सारी,

ठ्ठाव भाळ पाणी सूं भूमता भरिया । कुंवार बाजरी रो पंपट्ट मावरियो । माथा माथा बाजों बारो ऊभो । वठ बोलिया "या बगा है पाणी मस्या बापी वसी । बाठ पाणी रो सब सुख । कर्ण भीलमाल धहर । भी बैसवर्ने ई दूरो भी बाजो पड ।

बता रो मुखियो होपी कचेड़ी में बाय-राजा भारमल डाभी रे हाथ बोलिया "कच्छ सूं काळ रा मारिया धाया सात बीधी डेरा नाखा हां । धाप मेहर करो तो भेस्या बीवती ई बाचे । दीय रा दिन बापरे ठैताणां में काढ लां । बरतां धाप कीवो वो बगा कराता रैवालां ।"

भारमल बोलियो "बरतई तो बाय्यता री बाबे वो रे बीवो । बां एक माटो बही री रोज राव्ळ रसोवड़ दे बाबो करो ।"

'एक मटा भी वो माटा । बही री काई । धाप री मुनिवर वार्ह ।"

बठ धारा रावी बोलिया । डेरा बांधिया । भैस्या चरावे बिलोवणां करे । दही रो एक माटो रोजीना सोमल ले बाय राव्ळ रसोवड़ मेल धावे ।

बमाबोब री बात । सोमल रो,भर,बणी धायो । होपी री लुगाई बोली 'बिन्नण! रोजीना री रोजीना सोमल बही रो माटो मेलण ने बावे । बाज मूं परी बा ।"

कुंवर तो मटो मेल माथे राबळ बाबी । बांधी ठरबे री मोहियाव मरूपनी पायरी सूँ । कपन रो तो वरवाजा में बढ़वो मिळो । भारमल रै मोरड़ा में पावणो तिमूंयो । मिजर ही बठे ही बणवी या मुण ? हाम काम मोवनी बिलायन रा मामो सती रो मारीळ बुवना री बैन के बातें री गाठी । पटडियोड़ो नाम्पन सी या कुण ? बतां री बोरी ? बनै ई हजूरियो ऊभो चुप नै बहियो ।

"इण नै रोहड़ है।" रूपस माथा पर सूं माटो नीं उतारियो पछा पैंडा बापड़ी सावळ सयक देखी की सामग्री।

होथी माट देख एक बड़ी म्हेली दो बड़ी म्हेली तीन बड़ी म्हेली। छोरी नीं पाई। भागियो। रावळ बाप न पूछियो। बठै कुण फैंकतो के रोहड़ राखी है। ई नै फिरियो बीं नै फिरियो पछै ई बड़बड़ो नीं। होथी बाप पनघट पै बढ्या। रावळी आवड़िया सोवनी मोवनी पाना, फूला पाणी भरवा आई। मांय मांय बातां करै।

"ए राती किसीक फूटरी है।"

'फूटरी नीं म्हेली तो रोहड़ता ही क्यूं ?"

'देखिया ए छोरी रै माथो मस्योक है। म्हने तो नीं फरतेंदी देवाय दीधी।

मोर म्हे क्यूं नी बेटी पतारी है। कुण बही री बापियोड़ी।"

हाथी रै तो गुमताई माळ लगी। काळा री पूछड़ी मापे पग मायो के बारै बाप रै डोपो लगायो

"ई राजा रा पै धरम ? म्हारी छोरी रै सारै जबरजस्ती ? बरसार है सिमरा समारा पै पो इज्जत मयाप भीवता रैवा।"

सारा मात बीमो रैवै रा पत तरवारां कुण धमाधमक मारमत रै साथ पड़िया। मारमत नै मारियो तो तो मारिया पण बीं रा बंस रा सबी बाप नै बीच रै नी रहियो। मारमत री एक दूजरामी साथीजी रै पाना सूं। बाउर्मा लिरमी सूं लिपळ एक मांड पै बंट पीहर समरपोर माय मायो। पना रा भीयमान पै मयजो पर मालिमावाड़ पारता गांव रा बर्मा रै सबर भेजो। "भीनमाळ मे म्हा बीवी। पार

पाछो मठै राज करो ।"

धूमस

भीनमाळ बस्यो राज । फिरो मन राजी नीं व्हे ? काठियावाड़ सूं आपेश आया । भीनमाळ पे पांच कुंवाई बांटी फिरती ।

* * *

सोढी जी अमरकोट में आया कुंवां बरां को बैठो लिखो वीं रो नाम राखियो आछो ।"

पाछो हाथी बणो धणपळो रोज राड़ माचे । घोड़ा मारग रो ठीक बणो । मामा रा बेटा तो आछा घोड़ा माथे चढ़ै पाछा ने कैवे रोड़ । पाछो रोज सोढी जी सूं राड़ करे 'म्हारे तो आछो घोड़ो ना ।" यो विश्वास दे । कोई बेटा ने केवे । आछा रा नाम सूं एक नवो बणजारो बठै ने व्हे निकळियो । वी री घोड़ी ठांव दीधो । बछेरो व्याई । बणजारो सांच घोड़ी रो माल लेवाव दियो को व्यवण रो मोल नीं । बणजारे सोढी जी ने कहियो

"व्याई यो बछेरो थां राखो । थां को बैठो चढ़ैला । पाछो तरह उछरतो नीलवा घोड़ा रो हुवैलो ।"

सोढीजी तो पड़ियां में बांध बछेरा ने घरे लाया । पाछो तो वांरी निहाल व्हैगियो बछेरा ने अपणु घुम पावे । बछेरा ने राख में बांधियो । बछेरा ने कुदावा लागियो । यो खूब तो पाछो बांधी कमा'र सौंपियो ।

एक दिन पाछे मामा रा बेटा ने हेलो पाड़ियो "आव आंपां घोड़ा दौड़ावां दूसरो पावे जिनरी ।"

दोई बणां आप आप रा घोड़ा दौड़ाया सोढा रो घोड़ो तो पछोपो पैरियोड़ो । मामा हाथी रो बछेरो तो नवो प्रताप बछेरो ठहरियो । वठीने

पछीने छोटो मोटो भागतो भस्तो दौड़ियो। कोई चौड़ा बरसर धूमिया। छोरो तो कैवे म्हारी चोड़ो लेब। पासो जायी कैवे म्हारो। कोई भाईयां री घड़ी लड़ाई। पासो तो से तालयो मामा रा बेटा भाई रे मार दीया दो चार। छोरो रोवतो थको मां कने गियो "

"मां मां म्हारे पासे मारी।"

पासा री मामी बोली 'हां बेटा मारेला क्यूं नीं। थारे रावळिया पाळ न मोटा कीया है यो तो मारेलाई। पासो जस्यो जवां मरद है तो बाप न क्यूं नीं मापरो कांच है। बाप नै वो जतो काळड़ी री नाई काट फैंकियो जो बैर तो लेवे।"

मामी रा बोल सुणताई पासा रा हाथ रो तालयो बठे ही पड़गियो। सूधो छोटीजी कनें गियो।

"म्हारो बाप कुण? म्हारा गांव कस्यो? बता मवार रो मवार।"

छोटीजी विस्तार सूं सारी हकीगत कही। पासो तो मां सूं मुजरो कर दीदो "मां भीमभाट बापरियो हूं।"

"बेटा उतावळो मत व्हे।"

"नीं मां। म्हने रोक मत।"

वही दुर घूवा में देख छोटीजी पासा ने सीख दीदी "बेटा मूंछ पनाळजे।"

पासे भीमभाट री मैंगो पकड़ियो। भीमभाट रा काम में लोयसो धूप री। वाड़म दाण दीबोवा नाम दिया। पासे बाप न बाप रा गोत रै बोरा नै बांधियो। छाया में छायमियो। कांदियोड़ो मोवतो ई

नींद आयगी । बठी वो एक यू आंख खुली तो देखे पूणां री छावड़ी बीनां एक लुगाई ऊभी एकटक बीरा सामही भाळ री । उण री आंखियां में आंसू भरिया ।

माता ने अचम्भो आयो या यूं आंखियां मखाय म्हने ग्यूं वार री है ई री आंखियां में आसू ग्यूं भरिया है । आंखो बैठो व्हे पूछियो

काई थां दुख हो काई बात है ?"

"म्हूं तो बात री मालम हूं ।

"थां एक टक यूं ग्यूं जोव रिया हो ? थां री आंखियां में पाणी ग्यूं भरियो ?"

मामल निसासो न्हाखती बोली "बीरा बीना री बात है न कोई दुखवारी । आपनी कोई पुनी बात याद ।

बात कांई याद आई वा कैवो ।"

"कहिण्यां बीम व्हे ।"

"थे म्हनें बीरो लहियो है तो भाई ने बात कैवी पड़सी । आंखो सिर पड़पियो ।

मामल घटीने घटीने आंक बीरे सी बोली "थाने देखियां म्हने म्हारो ठाकर मारमलजी याद आयगियो । थे ही वारा जसी ता मोटी मोटी धरवी आयियां । वोई पूणां रो बांक । घस्या ई डीया । घणो गुण दीवो म्हांने । हाय मन में डामी रो बीन ई नीं दियो । थांरी नमारो देय थारी सूरत याद आयगी ।"

धामे मामल रै कान कनै मूंडो लेजाय बोलियो "म्हूं भाटमनजी रो बेटो धामो बाणी हूं।"

"हूं ?" मामल री आंखियां चमकगी।

"धीमी बी धागा नैन मना मठा सूं बो।"

मामल धामा रै मूंडा पै हाथ मेलियो "धीरे बोल कोई सुणेला तो मारियो जावेला। चालो म्हारे घरे।"

मामल धामा ने घरे घरे ल गाई। घोड़ा ने घर में बांध दीधो। मामल पूना री लम्बी ल चाकचक लागी। धाकड़जी ने कहियो "उना री कबरी चायेली दीजीजा पूना सूं सुने का चारूं पून रे मारू।"

धामे पूछियो "घणी सजीव है का धी पूना सूं सुने।"

मामल बोली "थी रा रूप री बात तो पूछो ई मती। पूनां सूं ई का छोटी है। उतर रो बायरो बाजे तो दिखण ने मुड़ जावे। दिखण री बायरो बाजे तो उतर ने मुड़ जावे। चाइ घूट रो बायरो बाजे तो टूट टूट पड़ जावे।"

"बावी ?

'मामी भाई। धान रा धरणमा में पचास नौल चावे। समझदार रे धमेंड चडू तो माता पे ई गिर जाय। थमी हूं का।"

मामल तो रूप बाजगी म्हीं। धामा रे मन में बोटी मालगी। थी मे बड़ी घर। मूमल री रा बरता चावे। पछै दिखळ दीव करे लिर तई देगु बी मैं।

मूवस

एक दिन मासी बोलियो "म्हारे रोटी घट कर है म्हने भारे लावणो है।

मालण कहियो "भाई, मूँ तो बावेलीजी रे गजरो गूंथ री हूं। पूरा सेम बाबा री बेला व्हेपी। थोड़ा ठम जावो।"

माली बोलियो "लावो गजरो मूं गूंथ दूं थां रोटी पोवो।"

'गजरा कई ई गूंथिया ई है ?' मालण पूछ्यो।

'देख सीख्यो गजार सलोक गूंथू लो।

माली तो गजरो गूंथियो। फूलां रा धागा लगाया, फूंदा लगाया। जाळी गूंथी। गूंथण में फूलो लिखियो। मालण गजरो देखती रैगी के माली अमार मूं गजरा ई गूंथिया पण थकी गजराई कई ई नी देखी। हरखी हरखी बावेली रे जाय गजरो नजर कीघो। दूजे दिन मालण पळे भी तो बावेली नाराज व्हियां बैठी। रोज तो बावेली फूलां री बस्ती सूं हुवे वीं दिन नाटा चढ़ गिया।

लावतां ई मालण ने समकाई, "सांच बता काले सूं गजरो नाई किन ने गूंथ गूंथियो ?"

मालण डरपती "आपजी म्हें गूंथियो और कुण गूंथतो ?"

'थें गूंथियो ? मूठी बता री ? देखां गूंथ न बता तो परस्यो। सांच बता नी तो धामड़ी उतार दूंला।'

मालण बोली 'म्हारे पांवणो आयोड़ो है वी गूंथियो।"

"? थारी पांवणी ने बठै म्हारे हमी ला।"

मालण घरे रोवती रोवती आई । माले पूछियो 'काईं व्हियो ?"

"थें घर नहीं छोड़ सकिया । म्हेमा काईं है । काईंजी रै तो मूमां री अर्मा घाव माटा पड़िया है । गजरो गूंथियो जिणे पठै लाव । म्हैं तो डरपती कैय दीवी म्हारे पावणी गूंथियो । अब किण नै ले जावूं ?

मालो बोलियो "कोई बात नीं, डरे क्यूं है । म्हने भेजा ।

"रे बावरे, थांने भेजाय न म्हारी लाज लिजावणी है काईं ?"

"म्हारे वास्ते थनै दुख में क्यूं न्हाखूं । बीतेला जो म्हारे माथै बीतेला । म्हने पांवणी बणाय ने चाल ।"

मालजी ने लाड़ी घाघरो पैराय घूंघटो कढाय रावळे लेगी । बाढेली ने छोड़ा ई माला विसवास के यो पावणी है लुगाई नीं । बाढेली पूछियो "गजरो थे गूंथियो ।"

माले घूंघटा में 'हां' री टचकारी दीवी । घूंघटा में माला री आंखियां तो सौदागर रा हैन री नाईं भटका करे ।

बाढेली मालण ने कहियो "थू जा थारी पावणी ने अठै म्हारे कनै छोड़ जा । या तो घणी चतर है म्हारे कनै बैठाय गजरो गूंथावूं ला ।"

मालण मनाई घोणा कीधा । पण बाढेली नीं मानी । मालण पावणी ने बाढेली कनै छोड़ घर आयगी । मन में भगवान सूं अरदास करे 'हे भगवान थूं है । लाज राखजे ।"

बाढेली बोली "आवो पावी चौपड़ पासा रमां ।"

दूजी छोरियां ने तो काम रे मिस बारे भेजी । अबै बाढेली अर मालो चौपड़ पासा रमता बैठिया । बाजी पूरी व्ही । मालो बोलियो "म्हैं

एक दिन भाखो बोलियो "म्हारे रोटी घट कर है म्हनैं थारे चावणो है।

मालम कहियो "भाई, म्हूं तो बाबेसीजी रै बकरो दूध री हूं। फूल सेम बागा री मेळा व्हेसी। थोड़ा ठम जावो।"

भाखो बोलियो "जावो बकरो म्हूं दूदू थां रोटी पोवो।"

"बकरा कठै ई दूजिया ई है ? मालम पूछ्यो।

"देख मीरगो बकार, मस्तोक दूदू थो।"

भाखे तो बकरो दूजियो। फूलां रा काचा लगाया, फूल बगाया। बाळदे दूधी। दूधन में दूधो मिळियो। मालम बकरो देखती रैंगी के भाखी अमर म्हूं बकरा ई दूजिया पन घसी बतराई कठै ई मी देखी। दूरसी दूरसी बाबेसी रै जाय बकरो बकर पीवो। दूजै दिन मालम रामजे मी तो बाबेसी मालम क्रिया बैठी। रोव तो बाबेसी फूलां री घास्ती दू दूजे थी दिन भाटा चढ़ लिया।

बाबसी ई मालम नै बमकाई, "सांच बता काले दू बकरो कांई किम नै दूध दूजियो ?"

मालम डरग्यी "बाबजी म्हूं दूजियो थीर दूध दू बतो ?"

"थै दूजियो ? भूठी बका री ? वैसा दूध न बता तो घस्यो। सांच बता, नी तो चामड़ी उतार दूं ला।"

मालम बोली "म्हारे पावणी आवोड़ी है थी दूजियो।"

"—ा थारी पावणी नै घटै म्हारे कनै ला।"

गायड़ हिलाय दीवी। बारे बापेसा सोच में पड़गिया हेरो करवा लागिया। हामी वंस रो धूप पर कठै, हेरो।

बाघेली बोली "भवार तो थाप घरे जावो। रात ने यां पोडियां ने बारे भाड़ थाको म्हारा बाप पे वैर में म्हूने मांग लीजो।"

भाखो मालम रे घरे जाय बाप रा घोड़ा पे चढ़ पाछो रात रा पोडियां ऊभी पड़ै हथो धूप मांयने बढ़ियो। भाखा री वासना पावतां ई पोडियां हणहणाई। कनीनी ऊभी पर भाखा साम्ही भागी। भाखे तो धूप पे हाथ फेरियो। पोडियां भाखा रा घोड़ा रे लारे हणणाट करती हथी धूप बारे निकळगी। शहर रो सगळो लोग जाग गियो। भाखा रे घरे भाय भेळो व्हियो। "भापणा घणी बापसिया बापसा ने धूट न वाळो।"

बापसा केवियो "म्हारो सोच भाखा हामी वाली पहुँचिया थांरा भाई कर घणा। बीयमाल पे भाज ताई मोक मांगी भाई घणी। बेटी रे वैर मेटा।"

भागा ने वेवाई। भाखो चोर बाजनो ई भाई हो। भाखा नीमा बाम कराय बाघेली ने भाखा रे लारे फेरा गवाय बापेसा भारे कन्या रो देना लीदो।



भरे भाखो घर बाघेली घरे वैठ्यो राजस करे। दिन घांचियां री खबर पड़ न रूपता री। भाखो एक घड़ी बाघेली ने मळगो रागे नी

मतवाळो म्हैसो मांय, प्यारो ने सारगा।

यूं चन्दो घणां दिन व्हिया। भाखा रे हैर न्ह री बाखरी भाई।

जीतिया नीं हारिया ।"

मूमल

बायेली भाभा री आंखियां में आंखियां नाख मुळकती बोली "थें तो म्हारो पूछियो नीं समत ई जीतगिया । बोपी रा भेव अनेक करो करम छिपे नीं अभूत सवायो । बताओ कठा रा सिरदार हो ?

"नाम जाणिया पिछाणोला तो नीं ?"

म्हैं पिछाणो म्हे काई ? पूछी जो बांरी पैर लीधी ।" बांह में पेरियोड़ा चमरा सामी देखती बायेली बोली ।

म्हैं बायेली रो हाथ पकड़तां पूछियो "थें म्हारा ?"

"हां बांरी ।"

हूं थी बाजी रमता ने बैठ्या तो देखूं म्हारे चौक में मोतियां पसवाड़ियां चोड़ री धूप री हलहुवाव री । नाव रो मोल मैला खोयिजो । मोतियां दरसावड़ी रहे नीं । दांतां तावे सातां मारे ।

म्हें पूछियो "ओ काई ?"

बायेली बोली "ऐ मारवाड़ डामी री मोतियां है । म्हां डामी सिवाय म्हें ई नी ने पूठ ई हाथ मेलवा दीयो नीं । डामी रा बच्चा बच्चा ने वतो मार दीधा । मोतियां ने पाछी देवण री कोसिस कीधी पण ऐ मोतियां वापू म्हाई नीं । कोई वने चावे तो दांता तावे मातां मारे । या ने तो डामी ऊभी ने बांछड़ा पू थारी पाघी देवता रिया । म्हें बकर कोई डामी बंस रो पायो है जिणरी बासना मां मोतियां ने म्हाई है जो पसवाड़िया छुड़ाया जागसी ।"

या ईंव बायेली छमाल भरी आंखियां पू भाभा सामी म्हांसी । म्हाते

माथड़ लिलाड़ दीधी। म्हारे काळजा बीच में पजलियां हीरो करता लागिया। डाली बंध रो घूम धार बढ़ै हीरो।

काफेमी बोली "मकार रा मान धरै काथी। रात में या घोड़िया ने म्हारै भाड़ धायो म्हारा बाप मैं बैर में म्हने माफ कीजो।"

माडा मालम रै पगे पाय मरा रा पाड़ा पै चढ़ खाती रात रा घोड़िया ऊभी सढ़ै हाथो घूर मांयने वटियो। पाछा री बामना पायता ई घोड़िया हणहणाई। कमोली ऊंची कर पाछा साम्ही मायी। माने ती घूठ मैं हाथ फेरियो। घोड़ियो पाछा रा घोड़ा रै लारै हुणकाट करती डरो घूर बारै निकळगी। बाहर रो नगळी सोस बाय गियो। पाछा रै वने माय पेड़ी लिहुयो। "पापणा वनी काफमिया काफेमा नै छूट न राखो।"

काफमा हँसियो "म्हारो मोल पाछा डाभी काली वैहमिया मानो नाई कर मनो। भीलमाल मैं पाव सोई मोल मांगी बोई पनी। बेटी रै बैर मेटा।"

पाछा ने बेचा। पाछो घोर बाजनो ई वाई हो। पाछा मीना बांध घराय काफेमी नै पाछा रै मारै पैरा पताप काफेमा काढरे बच्चा री मेला कीधो।

• • •

घर पाछो घर म्हारैमा पटै वैठा राजम करै। दिन बांधियां री खबर घर न उगता री। पाछो एक घरी काफेमी नै पढ़णे लागे मी

मतवाळो नीसो मांय, प्यारो रै मारलो।

घू कम्पो वनो दिन लिया। पाछा रै हैवर मड़ री बारली माई।

ईसर पाछी री त्यारी करै पण बाघेली बाबा देवै नीं। बाघेली ने तो मोळाम राखी 'पधार नीं जावू थां कँवोला करी जावू ला।" मुहारां ने बुलाय पाछे कहियो रामू रात जोड़ा रै सुरताळां बड़ो चोमियां ने कहियो बासी साथ बाम्मां रा कपड़ा कीम त्यार करी।

बावड़ी गुमरी वी थाय बाघेली ने कहियो 'बाईसा बाईसा पासावी तो ईसर चाव रिया है, थारे त्यारियां व्हेमरी है। सुरताळां नहीं नाम रो है।"

सावण सरसी बादळो सुगमा उडिया जाय।
सोह माळो बाघेली पासो ईसर जाय॥

बाघेली सुणवाई बामी जाय पासा री बाळ पकड़ी। मळमळी व्हे बाव में भर लीवो "मीं जाया हूं।"

माळो कहियो "मोधी बातां करो। चाकरी विना किना सरै के? रजपूत पर सिपाही री सुगाई ने तो मळमी रैवणो ई पड़ै। बीच काठो राखो।"

सजन मम मैं माठ कर पिउ मिलमत म पाय।
रजपूतां र सिपाहियां, मळमो सदा रहाय॥

"थारे बो तो म्हूं तो नीं जाया हूं। थां ने मजीक नीं वेढ़ तो म्हारो सिराम मवराबे। थां बिना तो म्हूं पुण में हूण न भर जावू। थावस में सिरूक न भर जावू। पूणी री पांसी बाय न भर जावू।"

बाघेली तो रुदन करवा लागी। पाछे पुण्डा सु पाणू पूछ नजीक बैंचीया। मामो बिचार में पड़ग्यियो। आज ईसर साथै बिना व्हेणो र बकर व्हेगो है। बाघेली बाबा देवै नीं काई करूं? या सोम पावै

न परो बातू पण या तीबै बठै ? तड़को बाजियां पांस बोले । मी थ्रेतो दाक पाय न सोवाय दू । पासो पठ न मंडारिया सू सीसो लाय प्यालो भर बायेली साम्हो मीयो ।

"म्हारी मनवार"

"पाव भरोसी ।"

"था मीठी करवो ।"

सामे नी मनवारां देखी थोड़ी । पाय तो पीबै थोड़ी न बायेली नै थोड़ी पांम दे पावे मनो । बायेली रा हाकर नैणां में नमा रा राता डोरा पड़वा लागिया । दूवारा रो भर प्यालो सालेबायेली रै होठां रै लगायो मटकी मटकी रै पड़ै ऊंधाय दीयो ।

मा मा करतां मार मै, प्यालो दीयो पाय ।

बायेली मै तो नमो आवमियो, सामे म्होड़ा रो भड़ो नमाय बायेली नै सोवाय दीयी । पामो बड़ै ई पारो भी बावे यो बायेली बीरो हाथ पकड़ रालियां । बायेली री तो बात बिलती । सुहार पुरवाई बड़े यो एरण उपाय घण मारिया । एरण रा नटारा ऊपर लूमीमिया । सूती मणी बायेली बमरी बीर भर मना में पांखियां चुडरी गैंच न वांगियां लोल र बोली

रैरम वटवरा म्हे मणिया थाई मरु सुहार ?"

मागो भर बोलियो "कंवरां पतीजै सुहार वो वजन मौभर हार । थे तो थाई भी थारा लाक हार भड़ीज रिया ई । सोय जावो ।"

बायेली मै लहरो देय पाछी सोवाय दीवी । बीर जाता देय बायेली

मूमल

रा हाथ में यूं हाथ नै मसळो कर मासी रो मोड़ पड़ियो। मदीक माख मिसी न दाबी धमकी भाभा रा हाथ मे काठो पकड़ता मे मुट्ठी दबाई तो मुट्ठी रो खाली। चमक न उठी सेजां में सायबा ने हेरियो। सूंटी पै चाबक सामी निजर दी। माळिया में पलांण सामी मांडी। ठाणां मे चारां ने देखवा लागी। पण कठै ही कांई नीं।

सूंटी नांहि ठावणों पड़वे नांहि पलाण।
सेजां नांहि सायबो ठाणां नांहि केकांण॥

भाभा रा सागीड़ा चाबकी पे हाथ यूं हा चोय रिया, कुण्डा कर रिया। भाभा री नजर रैय रैय मीयमल रा चैता सामी जावे। कठै ई बाबैसी भाव नी जावे। चैता मे मोसी मोसी चेह उठती चीसी न रो भाभा के नैम पड़ियो। चीमी चीमी चड़िया री भणकार सुणी न ई भाभो चावगियो बाबेसी रा रथ री पमड़ी चाव री है। बाबेसी रो पवार मठे भाय ऊभी रैय। मै सागीड़ा रोज करैता। सब हाथ में लौटो रथ चीड़ायो भाव री। कांई भाकाश में परैयो पड़ियो कै माटियां री बाबोड़ी चालियो। भाभाजी नै देखतां ई रथ यूं कूदी "भाडी कीयी म्हारे मारे।"

भो मठे क्यूं भाभा?"

"भाबू नी ठो। भो म्हारे मारे भी कणी क्यूं भीभो? बालो भाभा।

"भाभा बालदो री बात चूकी। भो बाभो मूं भाभो बरे मट भाबूला।"

बारैसी ने बणी समझाई रजपूत री बगर दीठा चीखवा यूं कई बरे तो करता बैठिया चोखा लागे। मभां शोभन दीसा। भाभा मट भाभा रा शोभन बाता।

"कदी आवोला ?" बायेली जीव काढ़ो कीवो ।

"सावण री तीज नै ।"

"बखत हो तो आता हूं ।"

अठै ईं सिव संकर रो देवरो हो । देवरा में जाय आले बखत दीवी "थां संकर रै आगे कैवू तीज रै दिन जरूर थां अठै आव जूझ ना ।"

सिव संकर रे देवरे, मागळ सिया पीव ।
मैं गोरी आवस्यां, सावण पैली तीज ।।

बायेली बोली: सिव संकर नै आखी देव कैवू के थां तीज रै दिन मौं आय तो थूं जीवणो मीं रैबू । आठो घड़ बाटू ला । संकर री सोगन जे जीवता रै आवू तो ।"

पवाड़ बोल मेल बायेली घर गई । मायीड़ा घोड़ा रा बूबा ईसर सागड़ा कीवा । घोड़ा कालिया आवे जैसा साथ आरे पूगना वाव मे आवे बहियां जावे ।

छोड्या टोडा टोरडी छाडो मनी बलाम ।
आमस बड़े रे बलियां छागी मरा गी धाम ।।

घर पंगलो कर मूंछा ईसर जाय पूगिया । आगरी रो यार मूमरो कीवा ।

ईसर घोड़ा आयसा, ईसर दाड़म दाग ।
ईसर रूड़ री बाजरी रिड़मल बारह मास ।।

भाखा री रा काणा वीर मता ईं निरदार बाजरी म बटे रा मार्ई मा

रै लारै चोखा चौड़ावै डिकारां रो भाषा आपड़ियां तीगा करै। मीठ घूड़ा अस्ना पूरै। रीझां मीजां करै। यूं करतां करतां सावण आवियो आसा रै दो चित्तां वतरबी। पण बापैयो एक एक पल लिखै। बारविधो बोवै कायल अगाबै। बादळा पर बीजळियां ने देख देख दूहा बोलै,

> बिजळियां झूळ मळ हुई, आभो किया बखाण।
> घर मंडरा घर आवियो, घर मंडरा घर आव॥

माली मारे बीजळी चमक री है। इलर बादळ रियो है। मोर पांख पसारिया नाच रिया है। इलाव मळ हुलकाव न घर पिया। बीजळी पड़ागो बाजो। भाला रै पु रा सू निजळी 'आप ही देख भाली मे मेह घुठ रियो है।" साबे री झाबे बीजळी रा चमका में बाबैली री सूरत नजर आई। भाला रै काळजे अबी चोट दीनी। मनाक न कथा मेह लियो।

"आव किण कांई है रे?"

"सावण री तूज।"

सावण री तूज रो नाम सुणताई तो भाला रै मारियो है भाला में चमरबी बीजळियां ही रै माबे पड़ री है। बीज लासै, बीजमाळ दूवे बाबैली री प्रम कासी चढ़बारी। माळी तो हो क्यूं रो क्यूं चोड़ा पे बीन कढ़ियो। मी बावीसा ने कहियो घर मी राजाजी सू सीख मांगी। धरमर धरमर कोड़ा पड़ाड़िया माळै तो चोड़ा रै एड़ लगाई "बाबी पारे हाथे है लाज।"

घूम बरसो आकाश धूंधरियो। बादळ बादळ बीज रियो। बरसा तो पै मूं क्यूं घोड़ो पै मूं माबे क्यूं। घोड़ा रै घर मेह रै होवाड़ीव लागगी। इलार आय है मैणवादा में मै ध्याम सुबियो। बाग मळ

एक व्हैगिया । गैला बाटा री खबर नीं पड़ै । चालतां चालतां दिन आथमियो । माला रा नवड़ा घोड़ा रो बीज पाणी में टर व्है गियो । घोड़ा रे फुगणां में सांस नीं मावै । घोड़ा थोड़ा ताईं माथा में पग सपसप व्है दिया । घोड़ो तो बनाड़ियां मैथा सामधियो ।

हुन भीजे टापर चूवे, पबर भीजे घमसाळाह ।
चूना बैर भीतारिया, वैरी बरसाळाह ।।

भीजमाळ घोड़ा हूरो । घोड़ो बाढ़गियो । वसी जमवान घोड़ी बनाई गांव में दीवो बळतो दीखियो, दीवा रे सैनाणै सैनाणै माप एक हवेली नखै ऊभियो । क्णताईं घोड़ा रा नीचे पड़गियो । माळो वाईं नरै । हवेली रा छाजा नीचे माला री बाग । मैं ऊभो व्है गियो । पळक पळक पाणी पड़ रियो अळळ अळळ नर बाळ मैं दिया । माला मैं बटोबै चोके बठी वै बापैसी दीसे । निज संदर रा देवरा री प्रम भार पायो । "वे नीं माया घर मूं चीपती ईं बाबू तो मंदर रा दीगन । वै नवत बार धावताईं माला मैं छिपाळी मायमियो । मालो माठो पकड़ दीम संभाळियो । बापैसी नरै ईं बीवड़ी नी रे । माले ईं बैटा तो चोरी समझी जावैला । बादर नीं बठै । माला र मन में माया बमरो । पण नी बठी तो काईं ? म्हारी परतीती तो थी मु पळ जावैला । थें बळगी तो म्हारी जिन्दगी बळगी जै रेवणी तो प्रीत हूटणी । कोई मानी मूं म्हारी प्रीत तो म्हां सवम । मोरठो ईं बरसो मेह घर्ण । दुख भर निपासा मूं भरियोड़ै माला रा मूंडा सूं निकळ गियो ।

गई तो सनेही गई, रही तो दूटा मेह ।
दोनूं बाना धरण गई बरस सवाया मेह ।।

अरर क्ची बैठगी हूवो मूंणियो को मूज ? बाकर पौन बचना मू

रै मारै मोडा धीड़ाने तिजारो रमे मामा मावड़ियां घीसा करै। मीठ, दूहा मस्ती सुणै। रीझां मीठा करै। यूं करतां करतां सावण मावसियो पड़ता रै दो दिन पकरणी। सब भायेली एक एक पान मिलै। भावलियो मोरे कामणा हलावे। मावड़ा पर बीजळियां ने देख देख धूमा बोले,

बिजळियां झूल मळ हुई, भाभी किया बखाण।
घर मंडण भर भाभियो घर मंडण घर भाण॥

भाभै भासे बीजळी चमक री है। इम्बर महक रियो है। मोर पांख पसारियां नाच रिया है। छळाव नाळ हुलकाय न भर लिया। बीजळी चमकी आयो। भाभा रै मूं डा सूं निकली 'भाव तो देख भाभी ने मेह बूठ रियो है। भाभे री भाभे बीजळी ।। चमका में भायेली री सूरत नजर आई। भाभा रै कवामे बतां छोड़ दीनी। चमक न कसा नहै मिले।

"भाव तिथ कोई है रे?"

"सावण री धूप।"

सावण री धूप रो नाम धूमणोई तो भाभा ने साथियो रै भाभा री चमकती बीजळियां वी रै भाखे पड़ री है। बीच काले, बीजमणा धूरी भायेली रो मन काळो नरमायो। भायो तो हो मनु रो मनु मोडा रै बीच कबिलो। बी सामोड़ा ने कहियो भर बी राजाजी सूं सीख मांगी। भरभर भरभर लोटा पड़ीया भाई तो मोड़ा रै एक सगाई "भाभी थारे हाथे है लाज।"

धूप बरसी भादरव मेंकीयो। भाळा भाळा बीच रिया। भरसा तो मैं मूं धड़ूं मोड़ो मैं मूं भाये भनु। मोड़ा रै घर मेह रै होडाहोड नाचणी। इम्बर भाप ई बेनमाळा मैं मैं साथ झूकिसी। पळ पळ

घोड़ो देखतां ई तो वासे लगाम माम टप्पो मार न ऊपरे चढ़ियो। घोड़ा री पेंनी रास भलकारियो तो वायरा सू वातां करवा लागो। वाएे चढ़िया आय रियो है। मूसळाधार बरखा व्हे री। नदी नाळा खळ खळ करता कीचड़ मे जमावता घोड़ा ने दबाया जाय रियो। घ मजा छेवटा पारस सावनी प्रीत सू भरियो राजन महेन्दर घोड़ो दौड़ा रियो चालियो।

पळ नदियां नीरां घणा गिरां न पळ पळ घाट।
आवे राजिंद प्रीतमां चांदिद गाड़िया वाट॥

उमड़ घन उतावळा रातीं गिरां न स्थिर।
आवे धरती धू सतो घन हो धारा धन्न॥

लगाम देतो रोकियो। दीयम ज्यू बाती फिरी। नदी जोरदार चढ़ री। डाबा पूर वैह री। पग थमे नीं। डोळ रा डोळ पाणी रा उछाळ आय रिया। नारंगिया नागला री बाढ़ नीं।

घणमां सगणां नदी बहे नदी न लागे नाव।

"ओ तो मरे। पावन चढ़ियो। ईं रावण नै ई पाव ई मारणा हो। देखो काळ नीर नै हेलो घाई का पार उतार है।"

पावस हुय सू हेला करे सुणजे काळू नीर।
पग न ठामे पावटा नदी उतार मीर॥

काळ पावन रा हेलो सुण न उडिया। काळ री सुणाई पूछियो "कई आवे?"

थाकगियो है। [घोड़ो बोडो ताईं पाणी में ऊभो है, माथा सूं पाणी झर्रियो है। बीज री ई मे सुख भी। घोड़ो सू डागे पडियो है। कोई है भली मनख। सेठाणी अगर सूं झट चाळ पसस छौका सूं नीचे उतारियो। पूछियो किड आयरिया हो?

'भीलमाल।"

पाराजी हो काई? बालोजी री रे बचना रा बंधिया पधार रिया हो? आप धीमो फिकर मत करो। मथार घोड़ा रो परबन्ध करूं। म्हूं ई भीलमाल री बेटी हूं।

रोटी जिमू जाईजे। घोड़ा रा परबन्ध रा नाम सूं मन में थोड़ी ठनस्सी आई। चाळ में मोहर माल दीवी। सेठ जी व दिन बिसावर सूं आवो। बी री आंख खुली देखे सेठाणी झरोखा सूं कुछ आधी रात रा किण सूं ई बात कर री है। नीचे झांको टांक राखियो है। सेठजी पसवाड़ो फेरता बोलिया "आधी रात रा किण सूं बातां कर रिया हो? म्हूं तो थके थकेला पड़िया हा। करो जि सूं बातां करणी है। थां आगो र थांरो धरम जाणी।"

सेठाणी बोली 'धरम काई जाणे। मो घोड़ो थां आप मोल लेन आया जो तो चोरी रो है। घर धणी लारे रो लारे आयो है। मरता मारता मै ऊभो। आपो देखो [आगे ई घोड़ा मै। घोड़ा रे पूछड़ बांध देस देळासा।"

सेठजी बरपिया "रे रे आणी। रिगिया बूढिया ही बड़ी। आंधी साहूकार ठगिया जिसू लड़ता फिरां।"

सेठाणी हंसी पाड़ियो, चोरी रे रे घोड़ो मोल थां सिरदारां ने दे दे।"

घोड़ो देखतां ई वो पाछे तमाम भाम टप्पो मार न ऊपरे चढ़ियो। घोड़ा री सगी रास समवारियो तो बायरा सूं बातां करता मायो। चाले चढ़ियो जाय रियो है। मूसळाधार बरसा बहे री। नदी नाळा पळ पळ काया कीचड़ न उमापना घोड़ा ने दबायां जाय रियो। प बगा संबटा मारग डाकणी मीत सूं भरियो राजन सरपट दौड़े दौड़ा पामियो।

> पळ नदियां बीजां जमा गिरी न पळ पळ पाट।
> घाव राजिद प्रीतमां पाजिद गाड़िया बाट॥
>
> उमड़ घम उतावळा रोहे गिरे न रिम।
> पावे परतो पूं सतो घम हो घोड़ा धन्न॥

तमाम देखो गोविसो। बैरण ज्यूं पाछी फिरी। नदी कोसाट भर री। राता पुर बंध री। घम बमे गी। टोळ रा टोळ पांणी रा उणळा जाय रिया। मारजिया मामला री बाढ़ गी।

> धगमगो सगमगो मदा बहे मनी न सागे माव।

"मो नो घवे। पामन चढ़ियो। ई डारण में ई पाय ई पाणना हो। देवां बाढ़ू नीर में देखो पाड़ू वो पार जमार है।"

> पारास घुम भू देखा करे मुगजे बाढ़ू नीर।
> पग म टामे पावटा मनी उतारे नीर॥

बाढ़ पामन री देखो भूप न उटिया। बाढ़ री मुवाई पूंछ्यो "बढ़ै बाबो?"

"माताजी नै म्हारै जुहार, सवारे आवू ।"

"या तेवार री रात थारै म्हारै आया री है ?" काळ री लुगाई तड़क न बोली ।

"मामाजी म्हारी लुगाई रै भाया रा बीविमोड़ा जाय रिया है । म्हने म्हारा है थानै जुहार आवू ।"

"माताजी तो म्हारे री लुगाई रै भाया रा बीविमोड़ा मतरा दूरा सूं मावता मावा । थां थारी लुगाई नै पाछी रात रा छोड़ न थारे जावो । म्हूं ? थारी लुगाई नै माताजी पासड़ा लागे परया म्हने तो थां पासड़ा मावो । इस्यो थी लुगाई रै चीज है इस्यो म्हारे ही चीज है । जो या सवारे थारे पग देख दीयो तो थारै म्हारै भरमाड़ो नीं । म्हारा नै स्सा ।"

काळू रेखियो म्हारा मरतो सूं तो म्हार म्हारो पीठ भीट भभकोलणो छुटियो । म्हार ई पाछा हेत मिहया है । मैं माताजी नै पुगावा नै गिया तो मा तो पाछा भणकोलणा नै लगा । म्हारो तो भड़ियोड़ो घर भोम जावेला । माथनै थूठो ई बाभियो "माताजी मूं तो जावो हूं । पासेप कोयनी । म्हार री रात हब जावो । काल सवार हूं ला ।

पाछे विचारी "म्हेपी म्हेला री म्हेला । ई तो पार उपर जावेली म्नी म्हार झमी रेवू । ई या मातजी री सा मूं भरी नै ।"

रै पाणी घोड़ा नै पतार दीयो पाछी भरी । घोड़ो तो पाणीपणो धड़धड़ करतो पाणी नै चीरतो पैली पार जाय ऊतरियो ।

साथी मोठ समेह गत, पिस्त में हित छायोह ।
माछा भय रै कारणे, काथी पड़ मायोह ।।

सड़कड़ी दरकड़ी काम भीममाळ पूगिया । काम मादो । पासेली देखियो मूड़ो बोयनू मुच्छा करतू । काला भरियोड़ा माळा बळलसू । तेवार रो दिन । ईं दसा में सहर में मळ्यो कोयो नी मावे ।

पौहा में पाणा री काळ रे बीच पसीनो सुवाता माणिया । सो कोस घड़ न मायोड़ो बरसा रा पिट्योड़ो । डील बळीना सू पूर पूर पेमरियो । मसणी लामणी । नीर मार्ई तो पणी मार्ई बांरो पेहोत ड़ियो , माड़ी नीर में पमेत पड़णियी । नदी में बापेली सूरज ऊणियो जिनू दैनां ईं ऊठ मरोसा में ऊभा ईश्र रा दैना में पाखिया गहाय राखी । हीरा री त्यारी करास राखी । सत्यकंठ नपारजी पैट्या पेसमिया को मार्तमिया ईं पत्र पूमाय रिया तबला ईं तना तोड़ रिया । टोरणो मोम रा मसाला बांट री । बोरसाळिये माळा माळा बागरिया छाट न पग लीला । एक पोहर बीरणी हुयो पोहर बीरयो पर तीओ पोहर उठणाने मायो । पामोजी नी माया । बापेली मार्ई र मैं ऊभी घ्री "माटो पड़ता मायो ।"

हग बोई दिन है । हमो, माय दिया मेला ।

सूरज ईं घर माह न मांतियो माह माह दिर रो मंनो देख । पलाण मर्ट हुयो बड़लो डील । बोम्रा बोई बटे ईं हमो उबती नी दीनी । बापेली कहियो "मटे कोई ? माणो । पामेजी मटे माय दिन ऊगांरो रो कहियो मटे तो तीओ पोहर ईं ढटणियो ।"

मिनमा कहियो "हमी बोई बात बाली ही । मीमाला रा दिन ईं ममणा देना माटा है । बोली माणो हुयो टोसेला । माणि माणी है नीम रे नी है ।"

परकोरो बचेन मैं पूरो नी मई को मालम ईं बरसो बात ...

रमाया व्हेगी। बोरो मरवीवाल डाढी माथो फिरियो "एक बीत म्हारे सुण न पछे पधार जावो। मूं नाथू बतरे म्हारो बिसालोजी पधार जावे।"

नै डारैवी मोळ वी गाई। मोळ वी रो एक एक बोल बाभैजी रा काळजा मैं बठाका मारे। मोळ वी रा सुरां सू भरिया बायरा मैं बासाजी री तस्वीर ऊभी दीखे वार वार आंखियां मैं सूं नीवारा वैवण लागग्या। बठा रो हुए काढ डाढी लाम्हो कैवियो

"बासाजी म्हनैं सुणाया पछै बीवता रैवो बोल वी।"

बाभैजी तो निमळगिया कोर रे बारे, बठा मैं। काळ कुमाय लीवा। काळो बरवा जाविया बामजा हाथ में पवीतो लीवो। डोली नै पटकाई माई नै बामाधिया तो बांधो मैलहुवाने मामदा म्हेवरिया है। म्हारी भजिमाजी ईं बांधी रा बरसता बारुड नै मकाह वे बाळ म्हावेला। ये बळधिया तो बामोजी बरवा बीवता रैवाने है। वे ईं पिराव दे देवा। बाभैजी रा मूं डावे हाथ बोलिया

"भजियाजी ईं छैली वेळा बासाजी रा दूहा नीं सुणेला कांई?

बाभैजी तो एक दम फिरी "हां दूहा बासैजी रा दूहा सुणावदे। मरती वेळा म्हारा बासाजी रो नाम तो सुणूं।"

डोमी लोका लोका मघमाव बोरा दूहा कैवे बठी देर जावे बठी ईं चोखी, मरदव बासोजी माव जावे। दूहा सुणती सुणती काळो बठी बामम नै कहियो, 'म्हाराज थोरा मोवरां नै रेवा वो। डाकियां नै कहियो वो मावो बासाजी रा दूहा बावो। मूं बळी रेदूं वो म्हारा बासाजी रा गीत गावता रीजो।"

बाग में पाबोजी मींरी नींद में सोय रिया पोड़ो हमहमायो पौड़
पदमिया को मांस पूगी। देख तो बांम पड़ा बाली। मजब म्हीं
पाबोजी तो दूपयो घोड़ा री पूठ रै हो क्यू रो क्यू। घोड़ा नै दोड़ायो
देख तो मिनख मेला खेंचरिया सील मतीज रिया। "बायेली तो बड़ी
काठी।" घोड़ा नै दपटायो। पठीनै तो नापो मेल्यो पर पठीनै पाबोजी
पाय पूगा। घोड़ा नै दूपायो पवर बांकटियो पैंडी खेंच न बायेली नै
घोड़ा री पूठ रै म्हाली। घोड़ो दौड़ायो पर नाम्हो। पीर बारी बामक तो
देसनी रैसी, वी बारी तो माडी घोड़ा री पूठ पकड़ लीवी। घोड़ो दौड़ायो
घाय रियो मर मार बो पूछ पर्वाड़या मटरथो जावे पर हुया देवतो
जावे। पद् उतरतां ई बायेली आरती उनाय दैसा घोड़ा री आरती
उतारी ई रे पध्यार मरदार सू भेंट व्ही।

"मीला पारे पांव नै सोने री गुरवाळ।
पग पूज्र रिंव तणां, भेंटापा मरदार॥

माने की कहियो "ई बारी रा मीत बाने बचाय लीपा।"
पैम्पळ पाडे बारी नै पपी रीम्ह मीपी।

आभल सींवजी

भादू री हरसँळ मचगी। बादळ गळगळ रिया। भरत्या भर रिया। बेतड़ी रा बाड़ ऊगा। भरत्या भरत्या पे चमेली जैसा बास री। मांनक्रिया रपू भांभा रा गोद बैरियां सूं लड़ाळू व पड़ै रिया। ढाळ बस पे अंबरा चमकै। कब कंस पे मोरिया चमक करै। महुवा री कैद म पार। पाटळपटा रा ऊकता टू बजार पासर री हाली है पड़ै। बावड़ी बावड़ी बाळकिया तणां पे पोतळी रा पत्ना रा भाला देही निरख जावे।

चाली रात री बगत। तारा टम टम कर रिया। ठंडी मचरे पवन बाज रियो। चांद चांद रात कर री। चमक चमक तीतरियां बोल री। एक एकल सूवर धान री मू डम मे ले अंबरा सू नीचे उतरियो। खड़खड़ खड़खड़ ठोकर सू भांवरियां कुवती जाय री। नाक रा फुरणा बाज रिया बांधी मोटा हुनकारा कर रिया। दौड़ दौड़ बिलाव रा बल बारै निकळिया लागा। पेट धरती रै घस रियो जमीन सू चाली चार पांपस ऊभो। वो बाजर री मोगियो बीयो चबरो खड़खड़ाट करतो नीचे उतर तळाव पे आयो। तळाई में मोती री बाव पाणी भरियो चमकती आई नदी। पाणी कनै आय एकल कुपळी मीठी। भाव पे लपक ढियो पाणी में उतरियो लारै री लारै सू वन उतयो। कोई पचां नाळा में कोई पाणी में उतरै लारै दिरखें पाणी कुपळिया

करै फेर लौटे। तळाई रो पाणी हलकछालती बाथ गियो। कारी ई काढो बै गियो। एकम पर सु हम तो वाता में गुगाळियां कर कर पाणी मूढो कर दीवो। मछी नै छोमेरी नाहर नै नाहरली पाणी पीवा नै तळाई पै आया। तपन तपन नाहर री मुंडिया तप री। बावरा सु मुंडा रा केस तपन तपन बाजता बाय रिया बाठे छितार रा ठमियोड़ा धारां नै पांमटी पड़ी बै। पांखियां रा धारा में चमक री बाठे बो जगमगाती मसालां बळ री। पावे पावे मिमाळिया गुगळियां आगी बाय री। ज्यु नाहर बाली ज्यु बरती पीती एैंठी बाये। मोहल्लो हलमलतो तळाई रै पाव न पाणी पीवा लागियो। तळाई रो पाणी गुढो खेच रियो, कारो खेच रियो। गुढो पाणी देखतां ई तो नाहर नै रीस आई। देखे तो तळाई रै देखे उजारे पाड़ा सुरो एकम पड़ियो गुगाळियां नै पिद गुढो पाणी री। हैरी हैरी पांखियां सु सुगर बाम्ही नाखियो। सुगर पांख उठाय ई नाहर बाड़ी भी पाखिड़ियो। नाहर 'हो हो' कर नै बरजियो। सु गर सुग पियो। अंबरा रा वरां माय सूं पाणी वाजाव निकळी 'हो हो'। सुगर तो बारली सु हम रे बारे गुगाळियां करवा में मस्त। उण रै कान में ई बाठे नाहर री गरजणा नी पड़े। नाहर मार री बा बेहद्याण देख पड़ न बाटियो बै गियो। नाहर पीव में हाथळ मार नै हेको नाखियो "ए रै कारी वाणियां सुगरा।"

"कांई बूं है, थांरी वाणियां वगड़ा ?" बाड़ी वाकड़ नै ऊंची कर एकम वाणे पूछियो।

नाहर रै मन बठी। पांखियां री बाजन्ती मसालां में बाठे देख पूछियो "पाणी नै गुढो क्यु कीयो ?"

"तळाई वाप बाप री है कांई ?" छोटा छोटा दांतां नै बाटी रै बाटा सेर सूगर बोलियो।

घूमतां ई माहुर रीस में भाव जबकर कीधी । जबकर समचै बांदरा रा काळजा थमा छोड दीधी । कक माचै बैठिया बांदरा धड़ाकधड़ाक नीचै धाव पड़िया । वन रा मोर कोकाट कर उठिया ।

"ठौर ठौर सूरड़ा एक बाप री सामयी तो छूटी चाटलो दीजेला ।"

"किस वे ई पीर मे बटायो बोला कुळी । कांई प बस करे सीबड़ा । छल कर मे वें तो बापरी बाबा मे मारी है कै छांडिया मारी हैं । कार्ने नीं पड़ियो है भैरन्या सु भळे । म्हें म्हारा मोरां रै जबकाम भना रा भाला मांग म्हाविया है ।"

> सु मसू मांबसे सीबड़ा, वे छळ कर मारी गाय ।
> कै के भाला मांगिया म्हें मोरा सु मचकाय ॥

सूवर तो काली बीच पैतरो बदल आंख में आंस भिलाय मोहेर मैं चमाव दीधो ।

कळमस्यो सोमैरो हाथन बाबा मे माप री जुवा भिरखबा साविधो । मचबस्यो सूवरियो धाप री बांसतियां मै ठैरबा लागियो । दोईं एक दूजा रै कटक पड़बा मै कटकटाव रिया पण बीच पाणी री उजाई । माहुर हाथळ मै बीम सु माटे । एकस भना मै माटा पै भिड़े दीधी करे ।

"काले पारे म्हारे बात भै । परमाते पामू स्याए दीजे । वें दी पारी लासड़ी बोमीसर भिळाय वे म्हारी साटां सिरदांर बीथेला ।"

> म्हें भाखां परमात रा सू ही म बांधे माट ।
> भां मतीनां लासड़ो, भां सिरदारां साट ॥

मू ईव मू दण ने मे मारे पी पाणी मपरो मपरो ईमां करतो घूमर घपरे चढ़ लियो । इुमे लिम मा ई न बैल्य थी । एकम मे मू दण मे मपरो ठठरियो । पाणी पी कमोटी कर बचनां रो बचियो घूणो नाहर री पेढ़ पे पूगियो । पाने नाहर तो मूठो बारे नाहरड़ी बैठी पेहरो देप री । घूमर पाछो फिर मू दण ने किया नाहरड़ी ने ई जो दण रा बालम ने बारे मैंने ।"

मू दण नाहरड़ी ने बतमाई "उठ नाहरड़ी माटी ने मांपने पाम ने कांई छिपम्म रामियो है । नाह बारे म्हारो एकमामम्म पाम मियो है ।"

नाहरड़ी हंसी "थारा एकममम्म ने मांई क्यू गपस्ट मे मे था पाछो । म्हारो मोनेरी नी बाने पबरे ही न ठीक है । पी बन रा राजा हाथम सज्ज मे बठियो है तो थारो पाहाघुरो बाणतो मिवर भाय । बैनरियो बाने नहीं एने ही न मनांह ।"

"मीपणी कांई होकर कर री है मो मागर रो भोमियो है बरद ढूढ री बारे बर हाथी चमटना मिबर पारे । ठठा पाना नाहरवा ने । मोड़ो धेच दियो है ।"

नाहरड़ी बोली "म्हारो मिष मेहंमम किदूणां चंदी भीटा में घूणी है । परे मा बारे मोटियार ने क्यू बगर री है ।"

ध्‍ना गे मीण निराटतो गूणो है महमत ।
मरे पपारा पदमणी क ठ मरापो बत ॥

मू दण बाने ? बरे है न दैरम्पो लाम पारी बन ने माटा दं मिम थीमी कर लियो । मू दण नाहरड़ी ने बतमाई ।

मू दम री कमतार मुन सोवेल की भांख मे ई ताप पामगियो । रीस मैं बाय पलटो सोनेरव सोमेरी मे बमायो

हेड़ मींद ऊठो हमें, हापियो भाखण हार ।

हाथियो मे जगाविया वन रा राजा उठ । नींद छोड़ । ओ मू दम कपटम संपटम बोल बोन री है । उठ पुन हापळ री पछाट । एकम रो खोपड़ो बोल दे ।"

घुमताई नाहर भाव चीनी । पान्छम नजीक ऊभो व्हियो । साम्ही निजर पड़ी एकम वाछळो विसतो बाय रियो धीरे धीरे म्हांव्ही जाव रियो । नाहर रै पड़ पजीता माय । बरबर रै नारे मलखिया सूबर पै । एकम ई छाम्डी लपाडियो चाती छोप रो चौडो छुटियो । नाहर री हापळ छूटी जो एकम रा मौरा पै चाली लवर पड़ियो । एकम री धरती पै चोड़ी रिस्ती । पन छोपडियो रै मारतो उठो नै चाली नाहर रै हांथली चाली जो भरड़ेवी तो नाहर री पेट चीरती बाय नियो "नूमर चाही हांथली बाम बाहुली हुं । पंजडियां री हिमती नै दियो ।

एकम री बंधावरती हांथली लमूमल रग में रंगवी । नाहर मे पाड़ सूबर बाळो फिरियो । मोहिला मैं मरकाव पूंचरियो । नाहूर रा नमा मू बापन भेगियो । चूम दपक दियो । जठी मे एकम बावे जठे मे सोढ़ी री चौरो चमती आवे । एक डाप हुरगी । चोड़ायतो खोड़ायतो चाल दियो । चोटाला पांव कर्नी पाय निकळियो । पनघट री बावड़ी दीखी । पापन ही जो दिन चलती लापरी न ही । मू दम री बरतती री एकम सी पनघट पै बाय पाणी पीबा लागियो । पनघट पै पाणी भरती मुमायां हुवो दीवो

"सूअर सूअर । गांव में जाय ऐसो लक्ष्मण पायो एक्स । मरे यो तो सोझो रे सोझो ।

सुणतां ई एक्स सुणायो मे दियो गने मोटो वाम परे जाय मत कैव को । भी ता इण योदा रै हाथ सूं पा । नाकम्ह बाल्या जाय ।"

गोटो सूअर देगने मन बहुमा जाय ।
इग साडा रै कारणै मचर मरैमा जाय ॥

सुणायां रा पेट में पचे ? पाणी नवी थी । मोटो सूअर आयो एक्स । पवाड धपपट पे पाणी पी लियो । दे मोटी मोटी दानखिया । म्हू री मा प्रत्या बकरो सूअर म्हां तो कदै ई नी देखियो ।"

गांव रा जवान भेडा व्हैगिया । "कठै गई ? घटी में लियो ?"

यो पवाड़ बावड़ी पे पाणो पी न घटी में लियो । सोवाप लिया घोडू तो जाड पावे ई कोनी जिकाडियो व्हे रा ।"

लक्ष्म री बात सुणिया पछ मोटयारा सूं रैयो नी जाय । बरछो हाथ वांग्यो ना बरछो उठाया । वैन पछ चढ़िया को गम उठायो । घोड़ा कोप काढ़िया । किन्नू ई थामन म जैण भी मारतो पारो तो बारो है पोडे चढ़िया । सूअर रे मोटा मोटा मोटी बरणो जात लिया हा को कोरिया मोडिया धारा दौरा । लक्ष्म री हाम आसमाण ही को सुरंगो बार लियो । दाढ़ी पारा री बजार सुणी न लक्ष्म कानिया

"सूअर मदरा री केड़ा पान्यो है । म्हने तो दबे नाम रैयो ही न है । सूं ना नही ठिकाणा ने बोल करे ।

या देव सूअर रहवणा ई ऊचा चढ़िया । घर म पाउ ...

रड़कती पे चढ़िया एकण री सवारी री निजर पड़ी न तो घोड़ा री वाग ढ़ळाई। चारी पाड़ी सू सुवर ने घेर लीया।

सुवर बोलियो "म्हे वां पणिहारियां ने मना कीवी ही के मत कीजो जाय न हरे। मोटयारा ने मराजोया पण मानी नीं। भो पाप बालो।

सू कैता ई सुवर तो सामहा सवारां बीड़िया। सवारा ने कमी काढ़ी पड़ती दीसी। वा मारी दूजी बराक सवार नीचे। वा मारी रपट ने घोड़ा रे डाढ़ी रूणी रे होटो मारियो। तरवारां री घणी झणण रा घोरा पे मानवा जायी बरछिया रा बटका खेंचा लागा। बाव मे घाय बावे तो वर्ड ई धावा मे सू ज बारे निकळ बावे वर्ड ई धावा ५४ ४। घोड़ा जंग मच लियो। घोड़ा रा पुणचा काम रिया एकण पूरदा कर रियो सवारां री छाती मे माल भी माय रियो मारडिम्या री पचर पांण निकळ रियो, घोड़ा पसीना मे धमाचोळ धुंधिया मोटियारां रे ललाट सू पसीनो झर रियो। पतरांक मैं ता एक सैंग ऊबो उठियो घोड़ो मर्णक्यो किरचा मैं चामो मळनिया। सैंग रे पड़िया एकल रा घोड़ां पे जो जमी मैं मरक। धाधा मे एकण पावली आयपियो। बाली बाट पे सूत्यै री सूच धोई।

बाबाम नाचास तीवजी" सूचा माथ माथ तीवजी रा मोर वैगड़िया। "गजब रा सैंग मारियो। धांपळ चार बरती मैं बंध लियो।"

घोड़ा नीचे ऊपर पसीना पूछ एक आदमा मैं सुवर मांय सू पाछो बैंच न बीवजी समझा न धाड़ लीयो। बाढ़ा मांयलु लाकरी काढ़ी धेरु म्यू।

"सुवाम ई मे धैके।" जीव मोरा लिपीजा सूकणी बेरियो। घोड़ा

रा पलीता मूलावता मनै मढे पाछा फिरिया। पाछा फिरता धीवजी एक तरमीम मार परे मेला माया। घर मे वळता हेलो पाडियो।

"भाभी भाभी कठै हो ?

"काई व्है ? देवरजी आ रया।"

"लो भाभी यो तरणोम लाया हूं। पकाय रांधो। हाथ में नटकायोडो तरणोम मे सीधजी भाभी रे आगे नांखो।

तरमोम देखताई भाभी रो चाळो बमकी आगो वाहो करो ई मूगिया मे। म्हारी तो ई मिमाखर पे लाग रख।

क्यू भाभी ?" आग क्यू करू ? यस्यो सोमक्क मिमाखर है। ग्याम देखो रेसम सरीसी। सीधजी तरमोमिया री खाल पे हाथ फेरवा लागिया।

है बाहम मोमी रेसम सरीसी। यमा ई पोढ़ा चालिया ई। भाभी मू हो समझाय न जावे।

"थर्मा नरम मरम है।" धीवजी तरमोट रा पूछी। एकर मकार मूमू ढ भाभी रे हाथ ने फेरवा लागिया ना भाभी समझ न लाग्योमिया है दूरी हमो देय दीयो हो काळा ई मूमिच री बतखणा। काई ई रा माड। भामम है रे मूगिया रो बेम मह पियो। बिछाणो ई पड़ी री।

> काई सम रा ग्वालडी काई सगे रा पाळ।
> पामम तए बिछावण मटक्या प्यारा लाल॥

"चाळो पोजो। काई किमो भाभीजी। मूगिया री बेम वह किसो

बिछाणा पै पड़ी री ?

"हां म्हारी बैन आमसवै रै एक बोल सुंसियां री केस पड़ग्यो जो बर्णी ई दुख पायो। डाक्टर बाप मौला बिछाणा पै पड़ी री।"

"हो हो हो" बीनणी जोर सूं हँसियो। भाभीजी आपरी बैन घणी लायक। कांई कैबी बात। बीनणी ठट्ठा लगाय हंसवा लागियो।

भाभी चिड़गी "कांई ठट्ठा लगाय रिया हो। झूठ थोड़ी बोलूं हूं। पूछलो था गांव में जाय किण ने ई।"

"नी भाभी थां झूठ क्यूं बोलो। था री बैन थांव आपनूं जोर न काढी बकी है। कम री गरी है। पदमणी है पदमणी।

"हां है ई ज। पदमणी तो आमल री पदमणी री होड़ नीं करे। आमल पाणी पीवै नी जदी हलक मायनै पाणी उतरतो दीखे। वा चाले नी जद एड़ी रा रंग सूं धरती गुलाबी गुलाबी दीखे।"

"रैवादो भाभी रैवादो। घणा बखाण मत करो। हूं तो आपरा ई ज ऐ ठियोड़ा भूं थियोड़ी। जस्यो आप रो रूप है, जस्यो ई आपरी बैन रो व्हेला। एकवार बखाण कर रिया हो।

"बखाण तो सांचा करूं। देखो तो खबर पड़ै।"

'खबर कांई पड़ै। कालै ई ज जायन थांरी बैन ने देखूं।"

"म्हारी बैन नै घर वाळा कोई देखता है सपना देखो सपना, देखरवी।"

"सपना नाई देखूं। आपल सूं जावै तो बात कर न आऊं काले।"

"भोली बात। म्हारी आमल री कुमाण तैय है। बात करवा रे फैर मैं

मर्द ई थारा साथ न मत आवजो ।"

"या बात है ? तो नो मा जाणियो ।

धीबजी तो घोड़ा पै जीण माड लीयो ।

• • •

थाडू रे मर्द धेनो ई धीबजो काछिया रा गावां में थाप निरखियो । थामस म टिवाणी रा मोव में जाय पूगियो । थाम रे बारे बाम में थाम मांवा री डाळ रै घोडो बांधियो । बरसो उतारवा लागियो । घाड़ा रो बाणियो बिछाय न थारो न्हे लियो । चमक भागी । थामन थार री मान बीमी लागमिया लारे होबवा न लाग म लाई बरा । चमडी रा थमबोई मूं चवन भराबरो । उममण छमण दुपटा मूं थाम पूछ लियो । बीत माथी धारा तो मै इतनी देखती लागणियां पूगता ठाकरी थाप री । बीनाठो मुणनां ई धीबजी री बाण गुणी । दैग तो थापे थागे थामम लारे लारे लागपिया । जाएी बीरदां रा भू बणो । दुर्गा रा टोटो पं छरेमिया पो हबोडी । बारला मै बीबडी रा महला खेव लिया वमू मटी । पू घटा में टीमी रा बहला पड गिया । इयै मना मैं जिग्ती धमर मना री टगमाई । गामणिनी म माजर मू ईंगी बारी मवारी मैं माला री बोलम । बगम पगताक री थाप ठीमेंब री । हाब म म लोमा री नाट । बीसंटिया मैंनां मे दलियाळा बायड लाणिबोरो । हुंसनी पूग मड बालना रमझमडी री भमक पड़ । धीबजी तो तडाड आय न परमो पढ़ियो थारी मीडंद रा बामा थाया । थामन री मजर धीबजी पै पड़ी । धीनजर जिमा । बान मू बाम लिली । धीबजी री मजर थाई लिमी थामन रै थार पार निवटगो । थारी मुवानिय री मढ़ाणी बैंदमी पदमा री तरवार चलमदी म रामलिच रा मैंमडो चुप लियो । थामन्या हूप हूप पड़े लियो । डाई थामन मैं दूपता लाद दिया । मार तो मैंनां री जिरो धारो म धीर ।

सारे दासी दूढी सुगणां ही को स्वागत करता आवी "चालो चालो पाछी चालो। वादळो चढ न आयो है। सनाक बीजळी चमक री है। मेह आय चाल्यो है। झट करो भीज जावांला।

झटपट रथड़ा सुगणा साथमे बैठाय दीवी। रथ हुक गियो। आसमान मन में धणमणां सी नाम पूछियो सी नाम पूछियो। एक बैरे बीसासो म्हारा धीरे धीरे रावसी करता आवी "परदेसीड़ो कैद सझोला लिया रे।

बीनणी नाम पियो ही आसमान री आसमान। नाम रा ठाकर री बेटी सिवाय ना दूजी कोई री सके। उपगातीको बीनणी घोड़ा पे चाली मेली। चालां आसमान रे घर कानी।

ऊंडो गाज रियो बादळ भिज रियो। पवनां री झड़ियो बादळो चाल छुटियो। मोटी मोटी छाटा रो मेह आय पड़ियो। बारा ई मेघमाळा आय नटी। बीजळी चुक चुक बीचळिया पोलै। डेरा डहके कोयला सबद करे। डाबर पै ऊपरा सू पाणी रा जाळ उछळे। धाम री धारार पै मोर कुहुक करे। पायल री छमक पोळ्यां पर सी मे बाजीन भैरे। पहरो मकरो गाजे ऊंचा आवास रा गरमाळा गाजे। पलकाळी री बरषा बाण सुगण मन पवन पान भरो बिजोगणियां रा हिया में तीर ज्यूं लागे। कणा में बीजणा बीनणी आसमान रा माळिया रा छाजा री छायां आय ऊभा रिया। ऊपर सू परनाळी पड़ै। घर घर घ बर एक बार धोय दिया। बीनणी चौड़ें चढ़ियो भींज दियो। माळिया रो नाळो बीनणी रै माथा पै पड़। बीनणी तो कोम कमर रो कमरबन्धो भाग्या री सभी रै बांध मळा में पाल दीवी। नाळो पड़णो रुक गियो। मेह री तो झड़ी लाग री। नाळो पड़णो बंद व्हे गियो तो ऊपरै छात में हुबकाय पाणी भर गियो। आसमान देखियो छात पर पाणी माळिया में भरणो भरणो आय रियो है। कठै ई नाळो रुक

गियो बीरो । भाखा री पाणी पड़ै के नी देखवा मे फरोखा सूं नीची भांपी । पटी के बीजळी रो लिखणो दियो वटीने भाभम रो भांकणो दियो । बीजळी रे भबका मे एक दूजा ने देखिया । भाभम जाणियो बीदाम पूगी नीबजी देखियो पूरब जमम रा पुन पळ मिमा ।

भाभम ऊपर सूं पूछिया

परनाळा पाणी पड़ घर भवर हवमार ।
काण गढ़ा रा राजवी कुण छो राजकुमार ॥

नीबजी कुव व दीयो

पिता म्हारा परताप सी, गढ़ धोगाळो गाम ।
भाभम निरगए भाविया न्यावो म्हारा नाम ॥

थार मो ग्हारा भामणा हा । बीच बीच वयूं व्यिया हा ? ऊपरे पधारो । या कना ई भाभम ता डोगिया री सिवार मे चौवरना कर बीचे भेजाई । नीबजी सिवार पकड़ ऊपा चढ़ माया । भाभम ढारा मे ढूंढारा व्हावा नी।

भाभम माया म मगा कांई मनवार करीज ।
मन मुळा मन भायना ऊपर मैण धरा" ॥

नीबजी दियो "मनवार वा करो । माझो मारा हाथ दा । बचन दा के यूं पटो म्हारे वरे थाव न जोला ।"

भाभमदे हाथ भाया कर दीया । भाभम री पमना माथे धुवता रुपाए राता पट दिया । नीबजी न लाबदियो भाव है मा व जाते छजारी धे बिदो ।

"बरसां बमघी। म्हूं जावूं।" जीवजी जावा नै ऊभा व्है गिया।

"जाकिमोड़ा हो मेंह म वारी रात है जाय भड़े ई बिरावो।" आमल समझावी समझार जीवी।

"हूं भी दार रो नाई भडे भी रेवूं। हवारा मे हाथ पकड़ था नै ले जावूं जिण दिन रेवूं ला।"

जीवजी घोड़ सवार व्है गिया। आमल देखती रैवी। छोरी नै जिम्यो पि तो बरसा मे जाय रिया। म्हूं ढोलिया पै सोवूं ? म्हारा आपसे पोमखे हवी म्हारा। नीचे ही पड़ी।

जीवजी तो परो गियो पण आमल रो काळजियो तोड़ लेतो गियो। आमल नै रात नै नींद आवे नीं दिन में चाल भावे नीं। आमल रो जीव ताड़ातोड़ करे। जीवजी री याद करे जूना बोले नीत गावे।

> जावजी छारक घोर, मन हेड़पा माल तणा।
> सग्यो काळजियो साथ, लाडी भरम्यो जीवरो॥
>
> लाडा भरम्यो जीवरा, लाडा दम्यो यन्न।
> रात न आवे नींदड़ी दिन न भावे अन्न॥

आमल एक तरकीब काढी जीवजी सू मिलणी री। पेट दुखायो। पेट में बाढ वाल तो बली के बहुनरी अपू लोटे। भाड़ो फूको मतर तंतर, दवा दारू तमटी कीधा पण काई फरक ई नीं पड़। हैपीही आमल पड़ी पमाड़ में पण के हाथ म भाला लीधा भीला घोड़ा पे सवार दीसियो। "म्हारे देवरे ढोलवा नै लाव।"

आमल सपनो सुणायो। भ्रमबल लियो रामसापीर रा परचाव है। देखतो

रा हुल मैरे के पल्ल। मालती कीची तोती बोधी, "हे बापजी बाद बामती दल आवे तो वा रे देवरे बोकना मे पाय। टप देखी री बाड़ दणगी। पामल मे मीत पायगी।

बात दियो "बाई देवरे बाक पायो।"

पामल मेर पाम मायो बोमो। पल्ली मे मेट रो मीच बल गियो। ऊटा पै भार बणियो। मणमुण मणमुण करतो पूमरा बाळी रमड़ो जोनायो। पामल री बामी लमट रो मिमणार देखियो तो धीरेसी पारग मोटमार ने कियो "बमी राम देवरे बाव पामल। वा तो बीना बाळ वा रे बाद।"

> पामल मायो पोड़यो कड़ियां रळकया केस।
> हुग बाव पमदबरे, आवे बाळे वा देम॥
>
> पाम उनाळो पामियो ऊगो बणियो भार।
> हुए बाव बमन्मरे पावे बाळ वा भार॥

नाव री बली बूढी गुमायो बालोचाल करो देखोबी पामल रा रंप पकपाळ पीर दीत रिया है।"

"पीलो बाईबो पायो बंता। पामल रो ई बाई दोल है। परमाचे तो है नी। पीवर मे ई बूढी करेला बाई।"

"वा रजपूतां रे तो राम माथै वाई गल है।"

> पाणी मापमा टीबरी पिस पिस पतळो होय।
> रजपूतां री दीकरी पीयर बुढो होय॥

धामस रै घाई दै बरसां मुगी तो बैन रै लारै एक बो दालो बूढा आदमी कर दीयो। धामस रो रपड़ो झमझम झमझम करती माडू नगे मेहू मारवाड़ री धरती में आयो। बैला पछै एक बैलो तो रामदेवरा कानी जावे दूजो बैलो चोटाळा कानी निकळे। धपटा पे आठां ई तो रपड़ो रुकाय धामस बैला पूछिया "ये बैला कठीनै जावे ?"

बैला बताया। चोटाळा री जाय आता ई धामस बोल्यो "हूं ई रथ हुम गैलि केर। म्हारी मजीठ धाम्योड़ी बीबीबाई सूं बिना मिलियां जावू नांई। म्हारी धामस आई बैन आसीस तो मगरा छोळ वा देव। पैर पैर रथ ईण गैलि आय।"

मूं ढा सूं तो सूं किथो पण मन में धामस कैवे 'बीबजी जाण जावे तो म्हने परधारी जाता है कांई ? बीबा मळे। धामस आडा फिरे।

'कोजो चड़सी बीबरो आडा फिरसी धाय।

रपड़ो चोटाळा रा बैला रै झमझम झमझम करता चालियो।

• • •

दिन री उगायरी बीबजी आय बारै हुआ मूं डा धोवा नै लियो। तळाई मांथे रथ पड़ियो आरबन रा ठट ठगा। बंधूड़ी उभ गी। सुमात्ता री फिरती दीवी। बीबजी देखियो कुण आया है। गैलि बालता पधारिया है कांई बात है। तळाई पै आय हार्यांडियां कमी वाने पूछियो "कुण हो ? कठा सूं आया हो ?

"धामनरे पधारिया है।

धामनर ? धामनरे कठे ? धामनरै तो आडू बन यो चोटाळी माम।" बीबजी अचंभा में आय पूछियो।

"हां पावणरे उणां री बैन मूं मिलण न आया है। रावरैवरै दरसण लारू आय रिया हां।"

या सुणतां ई जीवजी नो बीरियो। धवधवाटी लगा" वो घरै माय ऊभो रियो। मोन तो धरगियो। मूमी मोवाई वर्ने गियो। गुणियां गुणियां लारै हाथ जोड बीचा न "आवीमा हुकम आवीमा हुकम" वरै। मारै बोम मी निपजू। मोवाई वानी बात कांई है देवरजी ? दम तो भर रियो है न एक पट्टी वो जाणियां पाया। बांमरी माय भी रियो है। पिहुमो कांई वैवो तो सही।"

"आवीमा हुकम वे पधार पाया है।"

"कुण।"

"पावरे बैन।"

कुण बैन ?

"वे ई ज पावणरेजी।

"या गोव री गोत कांई समझणी। बन वण्यां मारग मूं। वर्ई ई तो पाव न पड़ो मानवी बैन मूं मिल पावो। वारी न्हारी बैन तो उन्दिया वायी वाहर वी जाणै जा वावें आई मिल जावे। रैवातो पारी समझवी हुन काम चलावो।" मूं यन मोवाई रा मैनरो मध रहीं री ड्रैडी में चमकती जांण्यो।

"रैवा कांई ह आपीजो वे वारै न्याव वादावा न्हारी वे वीटिया है। भी करो नो प बा देवमो बा गी हावरी जावगी है।"

मोवाई जाण्यो के मूं रो वर न आवो तो आवी ई हावरी आवरी। मूम

मीणाई घूंघटियो मरियो "काई फूठ रोक री बाई घूंघटो खींचो कर राखियो है। मूंडो सेंभाळो।"

धीयजी घूंघटो संभाळे तो ऊंमको खिसक जावे। ऊमको सवेरे तो पटकी जद जावे। मामल रो डेरो नजीक आयो। मामल रा साथ वाळा आदमी देखे "या लुगायां में एक लुगाई यूं किस तरै जाय री है। धमक धमक हम रा पग पड़े। मोगरी जस्या पग।" पैंरा म काठी माई। दूजी लुगायां तो धीरे धीरे पग दे चाली जावी। धीयजी तो पकड़ दोई हाथां सूं घाघरो काळो छकाती 'धम'। मामल रे पैंरा वाळा ने वैम पड़ गियो। मामल रा डेरा रे आगला पैंरा काठी बैठियो। दूजी लुगायां ने तो जावा दीधी। धीयजी रे वळतां ई बाखटियो पकड़ियो "तू कुण है?"

धीयजी तो सतां ई भाग्यो। लुगायां ई बाखटियो पैंरा वाळा री दूजी पकड़ी "थी जद सीधी है तो मोगरी सूं मारो थोड़ देवूं। थे मा से। बायली रो मूंडो वास पैंरा वाळा रे हाथ में दीधो सभीमानो रै।"

वो तो पैंरा काठी करम मियो मर मी बड़ो जो बड़ा सोना रो मूंडो हाथे माम लियो। बैरा माथ न बड़ी मिजाज पछियाड़ो जनाय मामल बैठी। म्हूं ई जन आई छोड न गऊ जाय न मिली। वैन मामल ने जाणी रे लुगाई। धीयजी मूंडो मांडिया छानामाना ऊभा।

मामल पूछियो "थ कुण है?"

"मामल रे म्हारा नमस्कार है।"

मामल तो वैन री बताया जटा पैंरो ई धीयजी ने ओळख लीधा। "मा म्हाराजीसा म्हारा मूंधा सगा। मामल आगळी थे पूंगा म्हाराजीसा सूं मिलवा ने वाय पसारी। धीयजी रे चोमड़ो बाथ घाली।

तीजड़ी धामल के बाव में धाम चाड़ा मिलिया। सायो काती रा पोर। मोवजी री काचळी रा भरड़क रेसी रा खोपरा भाया।

भरड़क भागा भ्रापरा भरड़क फाटो चीर।
धामल गीत भेळा हुवा मदया सळ्ळया मीर।।

मिलिया खुलिया है बीन्या चूटया है बातो चीता चीपी है। बैन धामल री मनवार मीनी "धाया हो तो एक दो दिन तो रैवो।" धामल ई दो रात रैवा रा हुंकारा भरियो। नाम वडी न माठा घरे धाया भाया।

धामल बोनी "बोमा मान वो घरे पधार दिया हो पण थाप रा मा मनवाराई न छोडे ई छोड़ पधारो। म्हां बाला करांला। भाने माठा मे पधारज्यो। म्हारो ई जीव लाग जावेला।

मोवाई रा मा करे बडा पीना तो मनवाराई रैवा रो हुंकारो भर लीधो। मोवाई रा भरे घाव लिया। बीजजी वडे ई विदा। वा बैरा मे बोई बो गीतजी न याय।। चीरट हाडी नमवा मे। निम मिन घर न रात बीत री। धामल बोली

म्हैं पीरट थे मार एवस आजम वाल्हिया।
हाजर पाणी हजार धसा मधु नी गोवजी।।

म्हे धामल थ ग्यावजी धापा राय पटेह।
धसा मधू नी लाजयो निम निम रात पटेह।।

बीवजी बावो हिनाव वानिया.

थें मामल म्हूँ लीवजी आपां दोय भठैह ।
कवारी पतळावतां,(म्हारो)काछी पर्णो मटैह ॥

लीवजी रात रा मामल रा डेरा में गिया पण माथो भारो हाळ दीनो । मैण रात डेरा मे दीवा बळतो रियो । पांच हाथ पूगे माथा नैं पड़ियो लीवजी मामल ने देख । मामल लीवजी ने देख । नी मामल ई देखती थाके नी लीवजी देखतो थाके । मामल री पाळियां सू अमरत झरे जिण ने लीवजी पीवतो नीं धापे । लीवजी रा नैणां रा नशा सू मामल माती झूमती । आछी कोई रात रे पांवड़ा बास मिया बो ढाळी देता रात बीतगी । दूजे दिन भौजाई धाई देख तो लीवजी मूं धा तापतो माथा पै बैठियो । भौजाई रा हो पण जठे रा जठे थम गिया "लीवरा आ कांई कीनो ?

'भाभी कांई नी कीनो । दुनिया री चौली रीत कीनी । मामल सू ब्याव कराव दो ।"

मामल ई वांठिया मैं परच भरियां बीन छाम्ही चांकी ।

भाभी बोली "थाकी बात है भाई र समाचार भेज देवूं । पण मामल री सगाई री बात मस्ता र मठे काम री ही । नस्ल र वो नी भैजियो है डूल ।"

लीवजी बोलियो पण कांई नी भाभी । नाक र तो भैजिया है नीं । बात तो ही बना जावे ।

दूजे दिन मामल विदा व्ही । लीवजी भोळी धम लीनी ।

भाभी बोली, "लीवजी यो कांई या कठै जाना ?"

आवू कठै ? मामल न एकली मेल दू कांई। मैंना में सूटा बोलो। वां नै देवरे ढोलाय आवू संभाय दू।

"सीमजी वां री बैन साथ मामर बाय दिया है जिके सीख देणी द मी।"

सीख देणी पडू नी बाव्ळो सगोसाव दे सीख देवो। वे बैन रा मैना रगड़ा रहूं जके दिन वैरया यो पाछा देय दो।

सीमजी सुगाई रो भेस करियो अर बैन रा कपड़ा पैरिया नै मूमिया। मामलदे रो रमझो आयियो। साथ रो साथे सीमजी रो घोड़ो। रथ री बाली में मू मामल सीमजी नै निरखती जावै। सीमजी रो घाड़ो हमे जावै अर मामल रथ रा पड़दा नै ऊंचो कर नै उठाय दे। मामल रा होठ मुळक जाय। सीमजी री आंखियां में नमो चढ़ जाय। आंखियां ई आंखियां में बोल हिलावां बिना ई मनड़ा री बातां व्है जावै, हियड़ा में हेमळो हुअ जावै। मारवाड़ री तपती धरती रो तावो मावरा सीळो पड़ जावै। रेत रा टीबा री लहरां में समंदर लहरावा लाग जावै। बोरडिया री छायां में दुपैरी ठाढ़वा नै बैठे तो वां रा मनां में मरवण ढ़ेल। रूंखां रा आंटा मंडै तो मोर आठे पूग भरिया। रामदवरे वार वाळा विरिया पत्तू रो देखा सीखा। म्यू आवू पाव म्यू ढोलारो ई मन पीवो चर। आवू री पवटी ऊंची मंडी दरती बाई। लावा रा मार दीखवा लागिया। फेर, बोर बावड़िया वाठै रैगिया। वरना टीबा छूटगिया पाणी रा तळाव नजर आवा लागिया। सीमजी बोलिया "थांरा आपां री धरती में आय गिया हां। आपां रे घर म्हारे बाळवां रे वैर बान। थे ई म्हारी बैन लाडू आपरा नै वरपावारी है। आपां नै जे म्हारी दा पडूं [illegible] कर दीठै।

मामस बोली, "कुण कीं ? सास रा मिनखां मे मना कर दोसा।

• • •

सासू आमो पोळ मे बैठियो हुक्को ठरड़ाव दियो। हुक्की बाळकी काम मे लागरिया भैस्यां री सेड काढ दिया। कोई बाछड़ो छोड़ दियो कोई पाड़ी बांध दियो। भैस्यां रड़क री। कोड़ी छोवड़ा मैं बाम्बो बाप री। बळद दोड़ दिया। धूँ धूँ करता चोक में धाप ऊंट बेठिया।

"सासू बीधी सास पिया बाई बीधी मात पिया।" हुक्की नवाली बाकर छोरी हाको करता दौड़िया धाया।

बीनणी री सैन बाईजी धापरे सासरे धाई। सासू रै पगां लागी पीहर सू लियोड़ो कपड़ो लत्तो सासू रै मुंडागे मेलियो। पछ पड़िया बाळजी धापरे मोटियार सासू माता पगां री सवा म्हारे पग रो हाथ लाग माथा पै सेवन बैठियो। सट बैठताई सासू रो एकदम चसक न दूजा मिरच लियो। पकड़ियोड़ा हाथ में झटको देय न छोड़ दीनो। रंगमीनी धाविना गोवनीनी बोली। सासू री सांविया मैं सास रेन बाईजी री कपड़ी सास ऊपरे रैमियो नीचलो सास मीच दै लिया। दरपियोड़ी हिरणी री नाई इमर इमर झांके।

सासू स्क न पूछियो, "कठा सठै पूगी ? थारा थारा मे किरी मानता धाम री है ?"

बाईजी कापी नैन ज्यूं बोलिया "कठै ई नी पूगी।'

सासू बोलियो "थारा माथा मैं कोई मरद रा पगीया री बासना धाय री है।"

बाईजी मे बात माना मैं ही ब कपड़ा पैर लीनजी धामतरै रै लिया

हा। बाढ़ पी पुर।

'सांच बतावे है। पा बरपार" करद बाप करती नाम स्याम करे तरवार वाही। बाढ़ भी फमसी पके तो पुण भी बदे तो हुव। 'मोमे म मारो पड़नो धोलेला मीच।" काका पे कमो पढ़ै माने वारस दीधी।

बाढ़ भी हाय जोड़िया, "धीजर्या धीरता हा। राणी रा पमौना पै बामना बड़ मो मनी पोर तो म्हू बाई भी आणु।"

"सीमजी? वापरो पैरियो? जोड़मो पोरी?

"हां बाढ़ै री मीपो मायो पाम म बाणी।

"बहू? रातोनिये पापणे बतु पारियो? बड़ा गुनामो है।"

बाढ़ै पी मारी बात मोर म कैय दीपी।

'ठीक है पाम दे राम मे पटी है? पाणा री बरती में बोई बाढ़ पो नाडोलगामे निकळियो है? वो पापणो वैरविदो पटी मे पापा री छाती बरे? पाजम मे परस्पारा हुमनो राग? पामन री मदाई री बाग भाना रे पाम री ही। माना विछ जाय लागा।

बाढ़ भी री हाणी बट बड़ बरे बाँ है पाजम रै मारे तीरवी पटी मे भ्प्र न भी 'मपट बावे। पणी मे पाप दियो तो बजब पड़े जाय। पे माप्प तो बाढ़ पा मापे ज्या रै बटका बरे। ऊ हूं'नुना बैर गाचा? पा उन्न री बैंरवां पाम्मा पोना बदलमो तो है बैर बालणो बचे? है बैर गलता मे है बोई रजपूती है? पाजाव मै बरे बट बट म। रांबिया हाबिया री मदाई में भारतीया री बमावा। मन्ने

आदमी धुव उठाता भूत सुणायो। कीधो राज म्हेलो है के मांई बिना कोण रैवै। मांढे जी देवी देवता मनावे है ठाकुर जी कीजो रम मांय मैं मत निकळजो। निकळो तो मां नै खबर मत लागजो। मांढे नै नींद नी आवे।

यही तो एक रात विशा हरियो चारण आय पोळ पे हेलो पाड़ियो।

सान्ह पूछियो "कुण है ?

"म्हूं हरियो चारण।"

सान्ह म्हारो कड़म पूरो। चारण रो नाम सुणियो न बारो खावा रै माटा भी दीधी म्हे। मांयनूं सूते सूते ई जबाब दीधो "महाराज रो काई खाणा री गरज है मारेठ जी। कुवे आवणो अबार जावो।"

"थाड़ो खोलो रात पड़िया कठै जाबूं।"

सान्ह म्हारे पड़िये पड़िये ई चाकर नै कियो "इण नै थाटो दै दे बो पोल रोटी खाय न ई वठै ई।"

बारै आर्यां हरिये चारण सुणियो। पड़ पलीते आप। पुरबार है बगै देवलो ई मामो वो पगां ई पाळो फिरियो। गांव बारे निकळियो। गांव रै बारे तळाई पे उतारो कीधियो। हरियो वठै गियो। आवे तळाई पे रम सुण रियो। घोड़ो जल रै बांधियो भीलो भीमो ईसरियो आदमी रसोई पाणी कर रिया। जाजम ढळ री। जाजम पे एक सुजान बैठ्या जिण रो य पारा में ई मुजो रा रप कर रियो।

सुजान बोलियो भेरी री अवाज ज्यूं "कुण है।

"म्हूं हरियो, चारण हूं।"

"पावणा ? पधारो पधारोजी पधारो । बिराजो ।

"आप रो बिराजणो ?

"मैंणारपु हां बैंन बगता ढेर पिया हां । आप जीमो पूठो"

"पूं नी जीमूं । आप आपरो नाम गाम बतावो तो जीमूं ।"

"म्हारो नाम खीवरो है । कोटड़ो गाम है ।

खीवरो बाजै थो ?"

"हां ।"

"अरो म । पगल्यो छाना कोरो है रे । "ओणी के मेल पधेव करो रगम छिरै नहीं मसूल नगारा ।" पूं नी पदम्ना रो ठौड़ बा रगतो मीठ मीठ पाटी मे रागी है । मैं एक म म्हानां पूछ है या रे मावे ।"

पावण ने दूसरो दीनो जीमाणो पूछ्यो । पाच्छो तईं भागाय दीपा । दिन उगताई पावण सिरदार तो नाव मे लिया । नाव रे बिचें ऊमा रैय म्हानं मे भावता माणिता "फेर आना पग बाट पा फोट अम्मा पन बाड़ पा ।"

पावण भारे पछू म्हाना मन मैं करमठाय दिया । "बन बाजै था" मुस्काई तो भाज म्हानो ओम्नो "पछे बाजै थो ?"

"बो बीरण भाखणा दांव बारे ठठाई है पा माना रो नाव मराड़ म मैम दीयो ।"

या सम्ताई म्हाना म मे मम्बाता बीहृगा । बावन ग हेरा भर दिया । ग्वामन नी एक मारासियो को नीवली बात मवार । मस्त

म्हाने हुतो पाड़ियो "कम रुक भाळे'या आवे कठै है ? आमम रे बारे कठै आवे ? म्हारा जीवता बैठिया है मरिया नी है ।"

जीवजी पाछो बोलियो । वैसे तो म्हारा तरवारां सूं ठिया आम रिया । जीवजी पाछो फिरियो क्यूं हुकनाक गैलि भाजता रगड़ो करो ? म्हारा हाथ में ई तरवार है मूं डकिया स्हाथी गिकर आय ।

साल म्हारी बोलियो "थूं मु डकिया क्याय ? कुळ री लोभणियां पंडोलिया । भाभरो पैठीयो हाथ में तरवार उठाय ?

कोई कुळ री लाज मर पसट नारी हुवो ।
इण हाथां इण माथ लाग न बहसी जीवरा ।।

जीवजी बाबो राणतो बोलियो "म्हने पकैलो बांध न ढांढ मत । था पांच जी नै पाड़ न म्हूं आपणे पडूला । आम था ।

साळू मत म्हे उतावळो सबळो थाप न देस ।
म्हारा पड़सी पांच सौन, अठे मळ थो एक ।।

धूम मच पड़िया । माथे भाला टूट पड़िया । जीवजी थे कसो । माहुर ज्यूं मस्त लियो । तरवारां री भाटां पड़ना लागी । बरछियां रा बटका बोहेलिया । पूठे पूठे धिड़ियो जीवजी भनावा बिय दियो । आमम पड़तो बैन रण मीचे उतरगी । जीवजी तरवार री भाट मारतो आमम सामहो आवे । आमम री नजर मैं नजर मिलतां ई जीवजी मैं तो हाथियां रो बळ आय जावे । आमम नै तो ना म्हारा रा कीया मूं छोड़ है ? हरगिज नी । वो बटका बटका बोहेलियो । जीवजी भाल्लमारो जीवजी बाबा ज्यूं फिर फिर न पड़ गियो ।

सरवारां पग पग सरसिया भाला पग पग भिड़ियोह ।
धमळागारो धोवजी ढाला ज्यूं खिरियोह ॥

पावस धोवजी री पग पग मरियोड़ी देह सूं लिपटगी । "धोवजी म्हारा धीवरा थारा सूं मळगी म्हनै कुण कर सके ? धीवता धीव म्हूं थारी देही रे हाथ नीं लगावो । थारा मरिया पछै सूं म्हारी छाती सूं लिपट रियो है । थारे माथे मिलबा री मनड़ा री मनड़ा में रैयगी पण मसाणां में धीरा माथे मिलूं ला । मिलबा सूं म्हने कुण रोक सके ? म्हेलां में नी मसाणां में ई सही ।

मनड़े री मन मांय, ख्यात कर मिलिया नहीं ।
मिल्या मसाणां मांय धीरा माथे धोवजा ॥

मूमल

"घर गयो पर मोपरो उजासड़ो कवांहू"

मयन विसोड़ो हमीर पड़ी घड़ी रो हुवा री हम घड़ी में बोल दियो। घड़ी बोमती बेला मस्ती सू उप री पांखियां फूटवी जाव री। पांखियां रै पाये रात नै देखियोड़ो उजासो पीर ई उजाळो नैं बाले। मन री मस्ती घूम घुम जाय री। हमीर बाड़ै वो बोली नै परपमा नै उमरकोट मलोड़ो। परभिया बिन रै इसी रात में घूम सू लोप पुगाई हुवा हा। रात नै घोड़ा नै पास मीरका नै हमीर पठियो। उप रा घोड़ा नै वो रात नै पापरं नजीक बांधतो आप रा हाथ सू घास नाखो देतो सासरै पायो तो ई घोड़ा नै पुगो उप घोड़ा रै बारे बांध परियो हमीर पठियो तो छोटी पूछियो

"कठै जावो ?"

"घोड़ा नै घास नीरवा नै।"

"आप हुवा रहो म्हूं नीर आवू।" या कैय नीमची छोटी ही ज्यू ऊ मारे ढील चाली। बांधटी लोभियोड़ी ही भीमो पीर मीन ई महाक बारे निपळ पी। बेहू प बारी रात ही। छाटा छोटो प्रेम दियो। हमीर ताक बांधने सू वो बात न मांनियो प बारी रात में ज्यू छोटी

घास री ज्यूं आगे उजास व्हेतो जाय रियो। हमीर देखियो सोढ़ी री कचन देही रो परगास पड़तो जाय रियो है। दूहा री कड़ी अणरो आप मूडा सूं निकळगी,

चांद गयो घर आपणे, उजासड़ो कथांह।

ओ उजासो किण रो ? चांद तो आपणे घरे गियो परो गियो। हमीर सोढ़ी री देह री कांती देख मटरियोड़ा नाम ज्यूं ऊभोला आवा लाग गियो। मन री मौजूरां रै मारे दूहा री आ कड़ी मूडा बारे निकळती। दूजे दिन परभाते बारे आयो। आछा महूरत रै सारे बात करतां करतां हमीर आखियां मींच मगन व्हेन बोलियो

चांद गयो घर आपणे उजासड़ो कथांह।

आ कड़ी सुणतां ईं महेंदरो बोलियो

पग उळ्ये पंगुचे थाड़ा मीरे थाह॥

पग उधांचे सीस वोरा मे पास मीर री है ज्यूं।

सुणतां ईं हमीर चमकियो "आ कांई बात ? कैन री देही री कांत बात कांई किण तरै जांणे ?"

बतरी सुणी व्हेवतां ही बतरो ईं दुख हमीर रा मन में व्हे गियो। एरर तो मन में कांई यु पो यु सोढ़ी ने छोड परो जाव्यूं। पण साथी एरर कारी ने यूंइ ही सरी। हमीर रे तो जीव रे आंटो पीड़िया लाग गी। बैठ्यो ही आयो उठ न आपने सोढ़ी कनै जाय पूछियो, "आ कांई बात था रा देही री कांति थां रा भाई महेंदरा कांई जांणे ? एण बाड़ी बात री उण ने कांई ठा ? आमण में कमाई पावे —

रात सालियाँ लाम्बोड़ियाँ अहड़ियाँ सो छिप न रैवे कोई बात नीं। पण भाई किण तरै देखियो ? देखियां बिना जैन रा भिन्न भाई किया जाणे ?"

सोढी बोली "फिर मत करो। भरपाम होवे री कोई बात है। म्हारा भाई महेंदरा नै आपरा काळिजोड़ा दूजा नै पूरा कर देवा री हिम्मत है। आप कोई मजूरो दूजी मनमानी बात पे पूछ नै देखलो जो एकदम पूरी कर दे।"

"कूंण बात ?"

"अठवाळ तो। आप आज काळोजा के म्हूं सांची हूं।"

दूजै ई दिन हमीर आड़े पे महेंदरा नै कियो "सिकार चालां।"

"चालो।"

दोई रवाना व्हिया। हमीर बोलियो, "सकोची दिसा में थां जावो अठीनी दिसा में म्हूं जावूं। सिकार लाय आपां इण ठाई पे मिलांला।"

दोई जणा दोई दिसा चालिया। हमीर रो जीव सिकार में नीं। वो तो देखतो चात के कोई भली बात दीसे तो जावो दूजो बजाय महेंदराजी नै पूछ। जणा सू पूरो बहू के नीं। बोड़ा री बाग तो ढीली मेरड़ दीपरी ध्यान सू देखतो जावे। देखियो वन में शायो लाग रियो है। अठी नै ई वन में मायवा रो मैलो नीं? एक साँप आप न बैठ माथे चढ़ियो ऊपरे मोर बैठियो। साँप नै पाछो देख मोर मीची मायड़ कर दी नै पकड़वा लागियो। साँप तो लपक न मोर री माथड़ रै पूछ रो लपेटो देय दीयो। हमीर या अणहूंती बात देख दूहा री एक कड़ी जोड़ लीधी। हमीर घोड़ो पाछो मोड़ियो। आवतां ई महेंदरा नै कियो,

सही बिलग्गो नम्म, ते तन कठ कसाए रे ।

म्हैंदरे तुरता फुरती बनाय दीधो,

साजण कोई न मग्ग, लागो लाय ज दव पयो ।।

हमीर साम्पुर सू बात लागती देय दीवी । पण फेर ई भरोसो नीं आयो । दूजे दिन फेर सिकार पे निसरियो । नाहर नै ध्यान सू देखतो जावे । कांई देखे एक कैर मूळ न ठूंठ खेम रियो । पण फूलां सू लद रियो । एक हिमड़ो पण माथै चढगी जो फूल महक रिया । हमीर पाछो आय म्हैंदरा नै सुणायो,

पुड़ तो सूकोड़ाह, ऊपर फूल महकड़ो ।

म्हैंदरे झट समस्या पूर्ति कीधी

पालो पाय पयाह, बेल बिडाणी गहकियो ।।

हमीर तो म्हैंदरा नै छाती रे लगाय लीधो । घणो राजी व्हीयो । मन रो वैम भागो । धीज में सन्तोष आयो । सोढी नै आय न कियो 'भा रो भाई तो घणो चतुर है ।

हमीर आडियां जोड़ जोड़ म्हैंदरा नै सुणावे । म्हैंदरो वठा नै तुरता फुरती पूरी कर दे । हमीर रे मन म्हैंदरा रे वास्ते हेत बध गियो ।

हमीर म्हैंदरा री चतराई रो कायल व्है गियो । यो सोढो सुजान हुवारी मैं भी लाखां में एक है । बाकरा सूं मौत न पासरे वो वारा मामियो रो म्हैंदरा री चणी मन न नमस्कार कीधो "आज़ाजी आप ईं ना लायो म्हारा प्राण री जान रा बात दिन ई टैरयो ।"

"आप मूमल ने नीं जाणो ? मूमल पण म्हारी मूमल रो नाम नीं सुणियो ? मूमल रा रूप री महक सूं तो सारो माड देस महक रियो है। मूमल रा रूप रा गा काक मती मनमस्त डरती बजाव भावती फिरै। गा मूमल री मेंडी है। मूमल आज री सहेलियां रै साथै अठै रै।" यूं कैय सहेली तो परी पी।

बीमापा ने आपोड़ो भाई बोलियो 'बड़ा सिरदारां मूमल री काई पूछो। मूमल रा रूप मार तुन रो तो पार ई नीं। काई दीपीन है। मूमल री मेंडी बावने क रेखो बजता रै वाणो। मीता रै हीराळ हमियोड़ो कपूर कस्तूरी सूं आवास लीपीयोड़ा। कांच जड़िया भावता में बाजलिया किवाड़ है। केसर कस्तूरी अंजळियां में कूटीजै।"

हमीर पूछियो "मूमल परणियोड़ी है के कुंवारी ?"

मूमल कुंवारी। पाव दिन राम रैण में बीती रै पण बरस सूं मसली रै। घणा घणा कूटरा करी बोल जमाल बाका बहादर आय जिया पण मूमल तो किणरै सामही नीं जोवी। काई आप आयो ई ज नीं। मूमल रै तो प्रण है गोठ बोळूं मा री आप रै मन बीलतां सारे। नीं तो मूमल कुंवारी रैवूं मा।"

मतराद में ही मूमल री सहेली पाछी आई "मूमल पूछायै आप में सूं कोई एक पधारो। देस री वार्ता पूछै।"

हमीर बोलियो "म्हेंदराजी आप जावो।"

म्हेंदरो बोलियो 'नीं आप जावो।

हमीर आपरी पाखड़ी बांध जावो पैर, सहेली रै साथै विदूयो। आगै आगै सहेली न पाछै पाछै हमीर। मूमल री मेंडी काई ही पूल म्हेल

/

हो। एकेला आदमी ने छोड दे तो निवळणा चोरो व्हे जावे। पण दर री नपटो काम री। मुगण री मोरो ठकरी। चौक में बाळू न सहेली री पटीम वटीमे व्हेगी। हमीर देखियो सामने जावो कालिया डम मण्डो मीनेरी समो। हमीर री आंगियां चढी मगराम न दूजी बाड़ी मे कांपियो नग नग चीम करतो पगमर निजर आयो। हमीर सोचियो पो तो चोखो। यो तो मारवा री मोची जाती नाहर यो मे गाय जाव पोर इन सेथ। आगा या रा चाला हथियार चला भया। पण म्हूं पहो छत्राळ मी। बी तो पाछ पग आयो ज्यूं जारे जाव निवळ दियो।

मूमल सहेली ने पूछियो "यू कणां ने मार्ई ने कढे?"

"म्हूं तो चौक में तो कणां ने बाळ न दी। पाछा कढे दिया। ये तो नाहर यू डर न भागा जिया दीसे।"

महेली बारे आय ने दियो "मान में यू पाचर व्हो आ जावो। वा बसा रात्री री मी।"

हमीर बोलियो "म्हेंदरजी आ जावो।"

म्हेंदरो चालियो आगे आगे महेली लारे लारे म्हेंदरा। चौक मांय ने आया महेली तो पटीने वटीने व्हेगी। म्हेंदरो देख हथमारयो मोनेरी नाहर बारो कालियो सामहो ऊभो। म्हेंदरा रा हाथ में भालो पण र नाहर रै सामही ऊभी ठरगाई। नाहर री गामड़ी धूजो निवळ पाड़ो। पटीने जाडे तो पगमर चीम भरगवार दियो। म्हेंदरे तो पटाव भाला ने पगमर रै चलोरी। पण यी यू ई धूजो निवळ चालो। म्हेंदरा ने हेनी आवणी। म्हेंदरे चोखो जमर लग यू हमीर पाछर विर्दियो हो म्हेंदरो आगे चालियो, चौक में पाछी आयियो। जारे दिया? पटे ई म्हेंदरा री जाणो आव लागो। म्हेंदरे जाना ने पाछी पगथा ने

चालियो। आगो तो वासियो 'काट' कांच रा मांचणा में। म्हेंदरो मगड़ मगड़ मोजड़ियां बजावतो मूमल री मेड़ी मे परो गियो। आगे मूमल बैठी। जाणे काळी कांठळ में बिजळी चमकी। कड़ियां कड़ियां तांई री केस खुला रिया। नागणियां नाळ ग जास्या बीस सूं सळकता केस सूं लाग रिया जाणे वासक नाग सूं च रिया है। उण माटेची री नाक चाका री धार जस्यो। रंगभीनी रतनाळी पांपणियां मे काळी काळी कामणिया री रेखड़ी। रेशमिया तार जस्या कंवळा कंवळा होठां नीचे उण उजळवन्ती रा दांत दाड़म रा दाणा ज्यूं चमक रिया। पेट ? पेट तो मूमल रो पीपळिया रा पान ज्यूं पातळो। हियडो तो सांचा में ई च ढळियोड़ो। देवळ रा थांभा जसी जांघड़लियां। पातळी पींडी सपोळी धामळ। तपायोड़ा कंचन सो रंग। मण मण मे मद उफण रियो।

ना कोई देवळ पूतळी ना कोई रावळ रूप

नी तो कोई देवळ में ई एड़ी सुन्दर मूरती नीं कोई राजा रा रणवास में ई यो रूप। म्हेंदरो तो ठगियोड़ो रै गियो। मूमल रा मुंडा म्हेंदरा री आंखियां अटकी। घड़ी दो घड़ी पछे मूमल रै हिवड़ा में चाव चढ़ी। नैणा री भाषा नैण समझे। मन मनां री बातां पूछे। मन ने मन सुरत चोळखे। म्हेंदरो मन में कैवे नैणाता काई रूप सिरजियो है। मूमल सूं मिळियां बिना या धरती अमर मे बरखा ई गमाई।

म्हेंदरा ने देख मूमल मन में कैवे "काई तेज है। नैण काई है कटार री धार है। नैणां रो तो पाणी चढे ई नीं देखियो।" मूमल रा नैण म्हेंदरा रा नैणां सूं जाय मिळिया। मूमल रा नैण नीचे झुक गिया पण नैणा री पुतळी मन खाय गियो। यो ई तो मर्द है जो जनमीतरी नी है जिण री आसा में मूं इण मन ने पटीटियो बैठी हूं? म्हारी

तपस्या सफळ व्हे कांई ?"

मूमल उठी व्हे माम्हा रो पांवडा भरिया म्हेंदरा मे सामियो हुंमणी पटे बठा सू पावणी । राणा पतळा होठ मलकिया मार्गे बोल निकळिया पधारो । म्हेंदरा मै सामिया पर्ठे ई वीणा रा तार रै मांयली पडमी । म्हेंदरो बैठियो मूमल बठी । मूमल मुमायो सो रैन री बातां पूछनाने । मूमणी कांई पूछे । बातां पूछ्यो मूसी बै सो भूली पण सायें ई मनडो भूलमी ।

चीतरा सखी गोरियां सोढ़ा भंवर सुजाए ।

मारवी मूमल घर सोढ़ा म्हेंदरो एक दूजा पै नहर व्हे पिया । मूंडा सू बात ता भी निकळे पण मन मै रम ग टटलिया उमर दिया । म्हेंदरे देतियो भीत पे मारंणी टप री है । उठे व्हे न मारंवी पमारी । सारंवी पै गज फेरियो । मांड राग रा सुर निकळिया । सुरां रै साथै राग री रसीली मूमल री मायड हाली ममियोरा हर्पा छाळ दीदी । म्हेंदरे मायड रो भीणो हैना गायो

म्हारी जग म्हाली मूमल हाम मा ए मधराणी र मग ।

मूमल रे मारमा मै मनमनियां पडमी । म्हेंदरे माड मनाई

म्हारी पण नीगी ए मूमल
हां हां ए म्हारी हरियाळी ए मूमल
हा रा ता न आवूं म्हारे देस ॥
म्हारी मारुवणी ए मूमल
म्हारी दमराल मर ए मूमल
हां हां ए म्हारी हरियाळी ए मूमल

हालो नी रसिया रे देस ॥
म्हारी लाडेसी ए मूमल
हालो नी ए अमराणै रे देस ॥

म्हैंदरा री मीत ई अ नी उण री मवास ई अ नी म्हैंदरा रो कम कम मूमल रै प्राणीया रे बेस आमणा रो मूरतो बैय रियो। उण री प्याला बड़ी मोटी मोटी आंखियां सूं नेह उम्मड़ रियो। मूमल घुटक्यां भर भर उण रस नै पीय री। ज्यूं पीवती जावै ज्यूं तिस ई बधती जावै। तृप्ति रो काम ई कांई ? चंदण रा रूंख रे लिपटयी नागण दांई ज्यूं मूमल लहराय री। हिवड़ा रो हेत नैणां झलक रियो। म्हैंदरो प्रेम रा भाग नै सराय रियो। इसी पदमणी भाग बिना नीं मिलै चौड़ी छाती पातळी कमर में भीणी भीणी पांसळियां। आ तो भगवान तूठै तो मिलै के पूरबला जनम में तप कीना। मूमल रो भाव मनारे आयगियो। अमर सूं धोळाई ज्यास सूं चांद चमरत बरसाय रियो। नीचे अमरत भर मूमल रा मीठा मीठा बैण म्हैंदरा रा काना में अमरत घोळ रिया। मूमल रा लंब लंब लांबा केसां पे म्हैंदरे हाथ फेरते पूछियो 'मूमल थारी बिनायरो सूं ऊंच बदकी है ? यो नागणियां नै थां कद सिखायी ?"

हिरणी जड़ी आंखियां में मनी भर मूमल म्हैंदरा नै देखियो। नैणा में नैण घालते म्हैंदरो मुळक न बोलियो 'थूं आंकणो मृगलाणै का ई सिखायो दीख ?"

तारी लाबी रैंनी री चांद जड़ी चानणा नीचे मुरगी। मूमल अर म्हैंदरो कोई रस रा सागर में चकलियां जमाय रिया। रात ढळता माली किरणियां नद रा नाभरा पे मुळ मार्ई हिरणी मूआ धावा लागी। तारां री जोत मंद पड़्या लागी। मूरगा बोलणा लागिया। चटिया चिरया लागी चिलोवणा रा घमड़का बाजणा लागिया। मूमल अर

म्हेंदरा नै दा ई भी घड़ी के पल बीतती। नै तो पण प्रीत भरी मे बैठा जिण मैं हाथी मूमा ई सीतळ मंद सुहावणी लागे। मठा रा कांटा मैं ई फूला री नमणोई लागे। पीड़ा मैं ई आणंद लागे। हार मैं जीत रो मजो आवे।

घड़ी नै हमीर नै नींद री झपकी। नींद मैं सपना तोड़ी लाग री। पलका फेर दियो। एक पोहर, दो पोहर तीजी पोहर रात ढळता ढळता तो मन रो धीरज छूट गियो। मसाण रे लारे घड़ी घड़ी री [illegible] [illegible] लायो म्हेंदराजी नै कठै लारे लागे। अब तो समाचार सुणाय दिया व्हैला।"

मन री लालीद म्हेंदरा रे काम मैं ई भी पूगी। पूगी नै मान मोला [illegible] म्हेंदरो घूम रियो। [illegible] [illegible] रात बीतगी। एक एक पर सारा [illegible] मारी मै [illegible] सुपिया। [illegible] लागी रात भारी [illegible] सुहाग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लागियो। चिड़ियां चैंहचाणा लागी। म्हेंदरा री निजर [illegible] दिया [illegible] [illegible] फूट री [illegible] दिन ऊग आयो। [illegible] ?"

मन मैं हो भी आयो [illegible] [illegible] लारे आया। मूमल री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आंगियां म्हेंदरा नै [illegible] [illegible] रा [illegible] देव री। म्हेंदरा री आंखियां ई [illegible] [illegible] री [illegible] मैं [illegible] देव री "म्हारा नै लाग भी के भो रा [illegible] नै [illegible] [illegible] हू।"

म्हेंदरो बारे आयो हमीर तो मर्द बतळियो "हे म्हेंदराजी थे कांई [illegible] करती ? दिन ऊग आयो।"

हमीर [illegible] म्हेंदरा नै [illegible] ई भी [illegible] [illegible] [illegible] कांई लियो है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रा [illegible] [illegible] मूमल री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मूमल री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible]।

हमीर चिढ़ गियो "था मैं पैहला बड़ री है कै जियो कोई ? हाथों कोई चढ़ो ।"

म्हैंदरो तो चुप पड़ियो उभो । बा तो कोई हाथ न आवे । हमीर नै रीस आई काबी पकड़ न झंझेड़ियो "बावो है की ?"

"बा बावो म्हूं तो थके ई न हूं ।

"कठै ?

"मूमल कनै ।

राव हमीर देखियो म्हैंदरा रो चीत बस में कोयनी । इण नै संभाळो भी तो बो मतलब कियो । पकड़ म्हैंदरा रो बांवळियो घोड़ा पै बैठायो । हमीर एक हाथ म्हैंदरा रो पकड़ राखियो के कठै ई घोड़ा नीचे कूद नी जावे । म्हैंदरा रो घोड़ो चालियो म्हैंदरा रो शरीर घोड़ा माथे पण चीत पाछो थिदो न । हमीर बोलियो "म्हैंदराजी म्हूं तो थानै स्याणा मारवी समझ राखिया । यो काई देखियो था रे ।"

म्हैंदरो माथो धुणियो "मूमल रा नैणां री चोट खाय न कोई जीवतो रै जावे ? सांप रा डसिया बच जावे पण मूमल रा नैणां रो डसियो जीवतो नी रै वे ।"

म्हैंदरो घोड़ा पै निढाळ बेसुध बैठी लगाम ढीली छोड़ राखी । मूमल रा बखाण करतो जावे "मूमल ? मूमल पै पुण ई कुण है । पूनमी रा चांद ज्यूं मीठी ई मीठी । पढ़ै ई तो न्यारी भी । थां देखी नी है म्हूं न्यारी हमी करो ।"

हमीर बोलियो "म्हूं बावळा म्हैंपरिया हो । बरियो बाई है मूमल में

मायन म्हे बैरी बणी है।"

म्हेंदरो हमक र बोलियो "मायम म्हे बैरी बणी है ? था ने राथ म मूण री परीक्षा ली। मूमल री सुघरी सुघरी पुन मुन र ता हरमियो रो हर एक बात। माडेची रा राणा पातशा हाथी में रा रस पाटियो है के जनि देख देखता ममरन रा मरिया प्यासा मैं फेर है। म्हूं तो पारखी हूं।"

हमीर ! हारो है थी है मम म्हेंदरो मूमल रा बखाण करता तर मीनाना मरतो जावै। मीठा मीठा म्हेंदरा ने हमीर हैरत म पाल चालियो। राजे सुणा ने बीजळियां गोडी। हमार बोलिया "म्हेंदराजी म हि बाल्या बटी ने मीठ री है।"

म्हूंता [illegible] रा रीठा है। मनु रा [illegible] रे मुख गागर रितो हूं।"

राम म्हूं [illegible] बटी [illegible] रा [illegible] रो राम [illegible] मीमाणी [illegible] हम री है। [illegible] बन लिना ममराल म्हू [illegible] दिर [illegible] उन्नाई [illegible] रा [illegible] हमीर पली मनदारा बोली वन म्हेंदरा मार्ग [illegible] री। [illegible] गू राम [illegible] बर न लिना लियो। थो पाठ चालो [illegible] मूमल ई सुमा [illegible] के मारे मो थी थी दम है [illegible] नो [illegible] थी। [illegible] मो र तो पाणा री मायतर [illegible] मूमल रा मैप ई मैल राग। [illegible] के महल री [illegible] म्हेंदरा के [illegible] म्हेर [illegible] रो हियो [illegible] रागुण के घुमायो। [illegible] चालो। म्हेंदरे पूछियो "[illegible] रा दवाब

टोळा चलता है ?

"बीस ।"

"रामुडा, या टोळा में कोई एड़ो ऊंट है के जी को रातू रात मुझे साथ पाछो आवे ।"

"इस्यो ऊंट तो एक है चीतल । जो चलतां मुझे साथ पाछो आय सके ।"

"कस्योक है रे चीतल चालवा में ।"

"चीतल री कांई पूछो सा

"किरकिरिया कानां री
थ्यावरी पूंछ रो
मारली रिग रो
मोरडी गर्दन री
सा सा करतो नागौर जावे
भे भे करतो जैसलमेर पुगावे
घड़ी एक मोहरी पीवो छोड़ी कोठी
दिल्ली री खबर पलक में लेनो आवे ।"

"मा सा, चीतल ने पलाण माड ने म्हट ला ।"

रामुडे वठी बाहरी जमाय बाल्यो पलाण मांड चीतल ने लाय हाजर कीदो । महेंद्रो चढ़ियो ऊंट पै । चीतल चालियो बारी पाणी रो रैला बहियो । जी रो जगियोड़ो कटोरो हाथ में ले बैठ जावे तो टोरो

नीचे नी पड़ । एक पोहर रात गियां मूमल रा मोरखां में चीतल माथ घुमाया। म्हैंदरो मूमल सूं बाथ भिळिया थांणे बादळी धरती में समचीत्यां बैठ महिला में चामम री छोळ आई पड़ी व्है। सूरज री किरण पड़तां ई कंवळ खिलै ज्यूं मूमल खिलगी। घर में उजाळो व्हैगियो थांणै पूनम रो चांद ऊग आयो। चानण रा चादरा ने देख मोरड़ी नाचे ज्यूं मूमल रो मन नाचवा लागियो। मन ई नहीं नाथ मूमल री मैंडी नाचवा लागगी। थामा हुवा लाम गिया रमाट रमण लागगी। झिमळिया नैणां में सनिपाळो काजळ सारियां मूमल म्हैंदरा री गोदड़ी में जाय बैठी। म्हैंदरो बोलियो, म्हारा जस्यो भागवान धनवान धरती रा पट्ट पै आज दूजो कोई नी? मूमल जैसी रतन जिके कन व्है उण सूं बत्तो भागवान कुण?

मूमल कैवे "पूरबला जनम में म्हैं आछी सेवा सूं महादेवजी री पूजा कीधी जो म्हनें म्हारी जोड़ रो म्हैंदरो मिळियो।"

मूमल सिणगार रा न नायो मूमल रा सवासी मा सिखरी रो हुआ म्हैंदरो।" थांणे म्हैंदरा पै वारणा कर दीधो। सामदवारी मूमल रा म्हैंदरा रे चावळ ज्यूं पूछो मेंहदी ज्यूं रचगी। तीन पोहर रात हरकां हरकां म्हैंदरे चीतल पै सवार व्है एक सवाई री रात रात अमरकोट में आय न जागियो। रोज री हिन चाली रैगी। अठोत रात दिनां मैड़ी रा झरोखा पै बैठ मूमल सिणगार रा हारां पै हाथ फेरे। सारे री सारे मन मारी पड़े। टरी रात पै चढ नदी री मेहरा पै परभाता अमराव ने चीतलो चढ तर न व जावे।

म्हारा ढ़ाला हेजार

म्हारा मसन हेताळू म्हेंदरा घरे आव
मूमल रो बुलायो रे
म्हारा मनमा रो भायो रे
मसन हेताळू म्हेंदरा घरे आव।
मूमल रो लोभायू रे
नाणा रो बेवाळी रे
म्हारा मसन हेताळू लोडा घरे आव।

सदी में सितार रा तारां पे मूमल रो हाथ फिरतो। जदीने म्हेंदरो चौहान री माहरी औसतो। मूमल सिसटी रा फूंदा म्हेंदरा ने भावा रा नावा नोता हुला सितार पे मारती। मसन हेताळू म्हेंदरो बस मीठी मूमल ने याद म जावजाने उवावळो व्है जातो। सितार रा तार हुद पे बाजता चौहान री याद हुल मट जाती। मूमल टेर मती मसन हेताळ म्हेंदरा घरे आव। मतराच में 'मायजिया' म्हेंदरा री आवाज आती। हरियाळी मूमल ने देख म्हेंदरो हरियो व्है जातो। हेताळू रा हेत देख मूमल हरी व्हु जाती। मूमल म्हेंदरा रा हेत री कथा आज मदा री मेहूरा करवा लाग गी। इ जड़ा देसदिया में गाया ने मराम बातां में कंवता 'मसन हेताळू घरे आव' रियो है। रेवक जरायता गुणाळिया मकरीओ में गाया आप लिया 'मूमल रो बुलायो रे मसन हेताळू म्हेंदरा घरे आव।

• • •

म्हेंदरे रे परवियोड़ा मुणाया आठ। म्हेंदरो आटसी रात रा मुखवा मू सवारवार पूगे। पूगता ई छोटी बहू रे आंखिया म आय नाय जावे। मानू ई बहूवां मना में बणी नाराज। म्हेदरा मू बात कीधा ने छ छ

महीना व्हेगिया। समरोत सूं वरी बैठी। एक दिन सासू ई बहुवा सासू रे कने छोटकी ने पुछाय मी

"म्हां तो सासू ई कविया बैठी रेवां। वां रा बेटा छोटी रे पोतिया ई। म्हांने पूछे ई नीं। वां बड़ा रो मिजाज।"

सासू मायनरे छोटी बहू ने बुलाय समझाई "थूं यो कांई करे। समझ्या रा ई नाटक्या सूवे वा बात कसी नी। थे दूजी बारा सूं परण ने देवा चाई है। वां रो हक वां ने मिलणो चाईजे।"

छोटी बहू सासू रे पगां रे हाथ लगावती बोली "थे वरि पगां रे हाथ लगाय ने बहू को म्हूं कांई चावणी हूं। पण बीरमां पाळणी पोहर रा भाय म्हारे वडे मोरे को वरी वो दिन आड़िया पडे। म्हने बतळाया ने छ छ महीना व्हीया है। वडे बावे घर बडा सूं आवे वां रा बेटा म्हनें ताकर मी। थांरा बेटा न वां समाळो।"

मायनरे ने जिवा उतरी म्हेंदरो वडे बावे बडा सूं आवे। मात रे सावण रामा बीनळ ने साथ मायनरे जिया "थे बीनणियां पुकार री है म्हेंदरा ने म्हां आणिया ई मी देखा।" मायनरे वारी हकीकत गुमाई बाळणी रात रा मस घरे सोवे। कमायां वडे आवे। बीनळ बात रो तो आणी सब हिया री बात सुनियोरी। बीनळी ने य हलाम पूछियो "माय न सोवे घर रा य हलाम बना।"

छोटी बहू बोली "माय न आवे घर बनां रा आया रा वेम सीतां रीस बनां सूं वाती धुई।"

"माय बनां रे मीच करोती बात पाली बीमजे।

म्हारा मरवण हेताळू म्हेंदरा वरे माय
मूमल रो बुलावो रे
म्हारा मनडा रो साचो रे
मरवण हेताळ म्हेंदरा वरे माय।
मूमल रो ओळावू रे
बाबो रो पेबासी रे
म्हारा मरवण हेताळू वोला वरे माय।

पछी है सितार रा तारां पे मूमल रो हाथ फिरतो। पछीने म्हेंदरो चीतल री मारूड़ी चैनतो। मूमल सितारी रा कूबा म्हेंदरा नै मावा रा लोवा लावा हेता सितार पे मारती। मरवण हेताळू म्हेंदरो बस मोठी मूमल न बाव म कामवाले उतावळो व्है जातो। सितार रा तार तूट पे बाजता चीतल री चाल तूट व्है जाती। मूमल टेर लेती मरवण हेताळू म्हेंदरा वरे माय। मरवण मैं समदरियो म्हेंदरा री आवाज आवी। हरियाळी मूमल नै देख म्हेंदरो हरियो व्है जातो। हेताळ रा हुत देख मूमल हरी व्हेजाती। मूमल म्हेंदरा रा हेत री वाता आज नदी री लहरां करवा लाग गी। ह लड़ा बैनड़िया नै भाया नै बवाय कामां मै कैवता 'मरवण हेताळ वरे माय रियो है।' रैवड़ चरावता गुवाळिया पटकोबा मै पाना साथ सिया 'मूमल रा बुलावा नै मरवण हेताळू म्हेंदरा वरे माय।'

• • •

म्हारे र परणियोड़ी मुमाया माठ। म्हेंदरा नाटमी रात रा मुश्का मू समरवाट पूग। मूमल ई छोटी बहू रे मालिया म आय गोम घाव। भालू ई भहणा मना मै पर्दी नाराज। म्हेंदरा मू बात पीया मै छ छ

महीना म्हेलिया। समरोक सू भरी बैठी। एक दिन सासू ई बहुआ नानु रे कनें छोटकी पे पुछाय मी

'म्हां तो सासू ई बणिया बठी रैवां। थां रा बेटा छोटी रै चौडिया रै। म्हांने पूछे ई नीं। ओ बठा रो निपाव।"

सासू मामचरे छोटी बहू ने पुचाय समझाई "थूं या काई करे। लगडा रा ई काडजा मूवे या बात चली नीं। थे दूजी बारा सूं परथ ने येनां मांई है। यां री हूक यां ने मिलणो चाईजै।"

छोटी बहू सासू रै पगां रै हाथ लगावती बोली 'थे थांरे पगां रै हाथ लगाय ने कहूं को म्हूं कांई बावली हूं। गत बीस्यां पाछली पोहर रा माव म्हांरे पडै सोने ओ चढी सो दिन चढियां ऊठे। म्हने बतळावो ने छः छः महीना म्हीना है। थठे आवै घर बठा सूं आवै थां रा बेटा म्हनें खबर नी। थांरा बेटा ने थां समझाओ।"

मामचरे ने चिंता लागी। म्हेंदरो थठे आवै कठा सूं आवै। मास रै धावण रामा बीमड़ ने बाप मामचर चिन्ती "थे बोलणियां सुगार री है म्हेंदरा ने म्हां आणिया ई नी रैवां।" मामचरे सारी हकीकत सुणाई पाछली रात रा माव चरे सोवै। पडतावा चढे आवे। बीमड़ मास रो सो धोवा धप हिया री धांस सुणियोड़ी। बीमड़ी ने घ हनाथ पूछिया 'माव न सोवे जद रा घ हनाय बता।"

छोटी बहू बोली 'माव न सोवे जद पगां रा माथा रा केस मीला दीप वेणा सू पाणी चुवै।"

"माव वेणा रै मीचे कटोरी माड पाणी झेलजे।

म्हारा मसत हैताळ् म्हैंदरा करे याव
मूमल रो बुलावो रे
म्हारा मरना रो सांचो रे
मसत हैताळ् म्हैंदरा करे याव ।
मूमल रो लोड़ाइ रे
भामो रो मेवासी रे
म्हारा मसत हैताळ् राणा करे याव ।

मठी मैं सितार रा तारां पै मूमल री हाथ फिरतो । जठीने म्हैंदरो चीजन री माहुरी चैंचतो । मूमल सिसरी रा फूला म्हैंदरा मै माथा रा सांवा लांवा ईया सितार पै मारती । मसत हैताळ् म्हैंदरो चव मीठी मूमल मैं बाथ म भामवाने पतावळो व्है जातो । सितार रा तार हुव पै बाजता चीजन री बास हुत व्है जाती । मूमल टेर मेती मसत हैताळ म्हैंदरा करे याव । मतराक मैं मारविमो" म्हैंदरा री साबास आंवी । हरियाळी मूमल मैं देख म्हैंदरो हरियो व्है जातो । हताळ री हुत बेल मूमल हरी भ्हुवाती । मूमल म्हैंदरा रा हैत री पाणी नाक नदी री लहरा करता नाम मी । कलड़ा बैलड़िया मैं गाथा पै मदाम पाणी मैं फंसता "मसत हताळ् करे याव रियो है । रेवइ मरापना पुणाळिया पलणोआ मै गाथा लाग पिया "मूमल रो बुलावा रे मसत हताळ् म्हैंदरा करे याव ।

• • •

म्हैंदरे रे परभिमोड़ी मुगाया याव । म्हैंदरो पाउमी रात रा सुरमा मू उमरकोट मूम । मूमना ई छाती बहू रे मांढिया म जाय सोय जाव । मानू ई महूबी मनां मै घणी नाराज । म्हैंदरा नू बात सीधा मै छ छ

महीना व्हैगिया। पमरोव सू मरी बैठी। एक दिन सासू ई बहुवा सासू रे कनें छोटकी पे पुछाव मी

"म्हां तो सासू ई पनिया बैठी रैवां। वां रा बेटा छोटी रे चौकिया रै। म्हांने पूछे ई नीं। वो बडा रो विवाव।"

सासू मापजरे छोटी बहू नै बुलाय समझाई "थू यो कांई करै। सबला रा ई लाडला पुरे या बात जसी नीं। थे दूजी बारा सू परण नै यंजा पाई है। पा री हुच पा नै विसपो चाईजे।"

छोटी बहू सासू रे पगां रे हाथ लगावती बोली "थे थारे पगां रे हाथ लगाय नै कहूं जो म्हूं कांई जाणती हूं। रात बीत्यां पाछली पीहर रा पाव म्हारे पढे सोरे वो घरी दो दिन चढियां उठे। म्हनै बरजतां नै छ छ महीना व्हीया है। पढै आवे घर पछा सू आवे वां रा दिन म्हनें खबर नीं। थांरा बेटा नै थां संभाळो।"

मापजरे नै चिंता उपजी "म्हैंरो पढे आवे कठा सू आवे। मात रै साथ राधा बीनणी नै साथ मापजरे दियो "थे बीनणियां पूरार री है म्हैंरा नै म्हां कालिया ई नीं देता।" मापजरे छाटी हवेली मुंडाई पाछली रात रा पाव परे सोवे। फबाजा बढे जावे। बीनणी पाव रा तो पाता चप दियो नी आव लुगियोडी। बीनणी नै म हलाव पूछिया, "थाव न सोवे जद रा म हलाव बता।"

छोटी बहू बोली "थाव न सोवे जद उणां रा पाजा रा केस भीना रीस बणो सू चाली सूरे।"

थाव बणा रे नीचे बटोडी भात पाणी चीमड़ै।

दूजे दिन केसां री गुवती पाणी मैल कटोरी बीसळ रै आगे मेलदी। बीसळ पाणी चाख न बोलियो "यो पाणी काम नहीं रो है। म्हैंदरो मूमल रो पीवी खारे।"

माळु ई बहुवा रे बीच में लाड़कोडी लागती। सगळी मिल सल्ला कीधी मूमल ने लियां ई छोडावणी। राज गुठ्ये चाप न पाछा आवे। इण ऊँट ने ई मार न्हाखां।"

सांझ पड़ी एक ठेमू लगाम दीधो जस्या ऊँट रे पड़ न जावे वो पळो गया। बीसळ ऊँट रे पड़ न जावा री खबर लागी। दूजे दिन वा माळु ई सुनाया बीसळ ऊँट ने ठीक ठीक नीचे न्हांक दीधो। म्हैंदरो देख हो ऊँट माय बसवाड़ पड़ियो। पतां में बीसा दुकविया नखां में बीसा मा दिया। म्हैंदरो रामूड़ा रैवारी रै घर जाय हेलो पाड़ियो 'रामूड़ा बारै आव।"[

रामूड़ा री लुगाई बोली "थाने कांई वो तो भारी घड़ पड़ियो है।"

"क्यूं ? कांई हियो ?"

"या री गुवाणी विरोलाव दीधो है। माल रायका में बापड़ा ने ठीक ठीक नीचे न्हांक दीधो।"

म्हैंदरा ने रीस तो घणी आई। लुगाई ने कियो 'इण रे भाला पीड़ कर। रामूड़ा ने पूछियो कांई दूजो ऊँट ई लाग्यो है के नीं जो म्हूनें गुठ्ये पूगारे।

"ई री भायली एक सांडी टोरड़ी है जो वां ने ले जाय सके। पण वा

पेईस्योरी मोयमी। थां नावड़ी ऊभी मत करज्यो नीं तो चमक जावेला।"

राती टोरड़ी री लगाम कर म्हेंदरो चढ़ियो। मुढ़े रो मेलो पकड़ियो। मारग में म्हेंदरे मूमल सूं नावड़ी री टोरडा रे दे पाड़ी। टोरड़ी ता चमक न भागी ना तूवै गेल पलमी। ऐसो पूछणी म्हेंदरा ने ठा पड़ी नीं। पछा में कुआ बालका री आवाज आई। म्हेंदरा जाणियो ऐसा में तो कोई कुओ लाधै नीं। अबर ऐसा भूमिया। कुआ प आय नै टोरड़ा नै पाणी पावा मांडियो। पाणी रे घड़ा पड़ताना ईं टोरड़ी एकदम मूंडो फेर लीवो। म्हेंदरे कुआ वाळा नै पूछियो टोरड़ी पाणी क्यूं नीं पीयो?

"मन रा पाणी खारो है।

"ओ गाम कस्यो है?"

"बाड़मेर।"

"अवल कही। म्हूं बाढ़ रो भेद पार निकळियो।"

म्हेंदरा नै तो मूमल कुण्डा री उतावळ लाग री। झट टोरड़ी नै फेर ल्याया। उण सूं टोरड़ी न दवाई आ था तो कुण्डा पाव निकळी। करीब घा पे सूं कुण्डा रा पावणी लाग। मामा री वाणी कुड़ा ठा म्हेंदरे जाणियो, वो भा था तो कुण्ड। वठै कुण्डा वठै कुण्ड। वठै बणी कुण्डा।"

ऐसा दूध धाये पिया। बस न पाणी उमरकोट सूं बाड़मेर

बाड़मेर सूं पूगळ भटक न फिरतो फिरयो। पर्छ जो पैसो चूक गियो तो सूबके पूगला मे ई नीं। एकड़ फूट रियो पूगळ बैठो। म्हेंदरे पुगाड़ नै हैसो पाळियो "म्हूं दिसा भूल म्हेल रियो हूँ। थूं म्हारे भेड़ी साथ ऊंट रा काणा कर्या सूं दिसा बता जो म्हूं पाधरो गैले बैवूं।"

पुगाळियो ऊंट रै पर्छ साथ ऊ जो हाथ कर दिसा बतळावण लागियो। म्हेंदरे तो पकड़ पुगाळिया रो हाथ ऊंट रा लागणा पासल पे म्हांक टोरदी दौड़ाय दीधी। पुगाळिया ने किस्या 'हाको चीबो तो मार न्हांखूं'। म्हनें मनो बताओ था। पाणी पहिचाणी बरडी मास्तां ई बन उतार देवूं।"

पुगाळियो पैसो बताती थावे म्हेंदरो टोरदी ने खड़ियां जावे। सुरमा री बरखी मोकळी। पुगाळिया ने उतार म्हेंदरो भाग बहियो।

मूमल रा म्हेल में दीवो बळ रियो दीवो पोहर रात ढळगी। मूमल बाट नाळती नाखती सोयगी। उण दिन मूमल री बैन सूमल आयोड़ी। सहेलियां सागे सूमल जाग री। मेल में मरदाना कपड़ा पैरियोड़ा। बातां करती करती सूमल ई मूमल रै सागी सायगी मरदाना कपड़ा पैरियां ई ज। म्हेंदरा मूमल री मेडी चढ़िया। उतावळो मूमल रा ढोलिया कनै गियो। मगर पहला ई म्हेंदरा रै तो हजार बिच्छु साथ ई डंक मारिया। मूमल एक मरद रै साथै सायरी? इस चारी री मूमल? जिण मूमल सारू म्हूं प्राण देवूं। आ मूमल यमी? जिण मूमल सारू म्हूं धकार तो चोखा सूं भटकना आयो आ मूमल पागे पूरा भाखी मार्य छोम री। म्हेंदरा री आंगियां आर्गे ता काट्टा पीळा पाम गिया। मी ही आये देवणी आयो नीं जोवणी आयो। हाथ

)

मांयली नांवड़ी हाथ सूं छिटक नीचे पड़गी। ज्यूं आयो ज्यूं टोरड़ी पै सवार व्है गियो। म्हैंदरा रो तो मन फाट गियो। काळजो करच करच व्है टूट गियो। मूमल रा अणियारा मारियां धाव फिरै जिण रे मारे रीस सूं कोई उणउणा लाग। लोगन सब नीचा मूमल रो मूंडो नीं देखूं। मांयलो जीव कैवे मूमल मती वा नीं व्हैणी चावे पण सारे रो सारे विचार कैवे है जिण तरै नीं आंखियां देखी झूठी थोड़ी व्है।



मूमल री मुर्छा भांग गुमी। म्हैंदरा रे हाथ री नांवड़ी पड़ी। म्हारा मरी उठी म्हैंदरो कठै ?" घड़ी में देखियां घटीने देखियो। म्हैंदरो नीं। नीचे आंधी ऊंट रा पग ओळियोड़ा। पछतावण रा सागर में डूबगी। रातै म्हैंदरो आयो म्हारी नींद नीं आणी। म्हैंदर म्हनैं जगाई क्यूं नीं ? कठै ई नाराज तो नीं व्है गिया। पण आदमियां रो कांई भरोसो ? नाराज व्हैतां देर ई नीं लगावै। भांत भांत रा विचार करै। रात री बाट जोवै। रात नै वा ई बैठी रही चढ झरोखा पै सितारां रा तारां नै टेरिया ? "म्हनै हेलाडू घर चावै" री धुन सूं रोही गूंजगी। एक घड़ी व्हैणी दो घड़ा व्हैगी। मूमल जागती री। 'आय गियो हूं' रा आवाज नीं आई। मूमल जागती जागती थाक न पड़गी। म्हैंदरो नीं आयो। एक दिन दो दिन दस दिन, बीस दिन व्है गिया। मूमल पड़ी पड़ी झुरी जावो जिका है प्रीत करा जग कोय। व्है प्रीत कर पछताय रो है। पण दो आपणी करै ई प्रीत नीं करणी। म्हैंदरो जिणी रा पूरा जण्यो म्हैंदरो मूमली नीं चावै। म्हैंदरा वनै फसवा नीं चाय्यो।"

मूमल सोच कर कर मुळकी म्हैंरी । माथा में हेम वालियो ने महिमा म्हैं दियो । फीड़ा मैंमा मूमल मैंमो देखती रै । घरती सूं चाली नावे । पारसी मे माथा सूं बांध दीनी । पत्तर री सीसीयां नै काक नदी में ऊ पाय दीनी । मैंरी मे नी रंग न राम । ना ई एक घणी रात बावें न मूमल हागळा पै बड़ सितार बजावे । घणी सितार रा तार ई गावे नी मूमल रे मारे मारे रोवे । सितार पे मुमल म्हैंदरा मे माथा रा हेला पांड मोळ मा देवे ।

> थारा तो बिना रै म्हारा सोना राजा घरती सूं चाली
> थारी मूमल राघी रै उदास
> मूमल रो बुलावो रै
> मस्स हेताळ म्हैंदरा मरे माय ।

मूमल बाट नाळी घणी मारुी । नायक मिल न मीकियो । म्हैंदरे पाछो बंकायो 'म्हूं रूप रो लोभी कामना रो भीड़ो नी हूं । रूप मे प्यार नी कक चरित्र मे रूप । उण रात मे म्हूं म्हारी आंखिया नामियोड़ो उण साथे रे । म्हारे मारे मत पड़ ।"

समाचार सुण्यां मूमल रे घणां मीचसी घरती निमळ गी । घणी समवी म्हैंदरो मसूं नी कायो । मणमा मैं काम नी कामती को दोस माथा । मूमल री उणी अ बेठा उमरकोट चाली आप म्हारा म्हैंदरा रा मन रो वैम पाड़ । मूमल उमरकोट पूगी । म्हैंदरा मैं समाचार भेज्या । म्हैंदरे देख्यो हैंम रा हेत न ना पतवाणां । म्हैंदरे चाकर न मोलायो । चाकर माथा कूटतो कूटता मूमल रे डेरे पूगो 'म्हैंदराजी

नै पाछो नाव दख दियो ।"

ई" करता मूमल रा प्राण पखेरू उड़ गिया । पबर मागता ई म्हेंदरो पबर पाय न बठै पड़ गियो । पण मर्यो कोई ? म्हेंदरो गावा ढ़ाळवा नायियो मूमल मूमल करतो फिरै । समद में बतरी मेहरां रैन में बतरा नव माथा में बतरा बाळ बतरी दाम दिन में अमस नै पाए फरै ।

मूमल सोच कर कर दुबळी व्हैगी। माथा में तेल घालियां ने महीना व्है गिया। फीका नैणां मूमल गीतो देवती रै। आरसी सू आडी लागै। आरसी ने माथा सू ढांक दीवी। अतर री सीसीयां ने फाड नदी में ऊ बाय दीवी। मेंदी में भी रंग न राय। या ई एक बाजी रात आवै न मूमल झरोखा पै बठ सितार बजावै। जदै सितार रा तार ई गावै नी मूमल रै सारै सारै रोवै। सितार पै मूमल म्हैंदरा ने आवा रा हेला पाड बोल ना देवै।

थारा तो बिना रे म्हारा ढोला राजा आरसी सू आडी
थारी मूमल राणी रै उदास
मूमल रो बुलायो रे
अबस हेताळू म्हैंदरा थारे साथ।

मूमल बाट भाळी घणी भाळी। म्हैंदर फिर न बेकियो। म्हैंदरे पाछो कैवायो "म्हूं रूप रो लोभी नाममा रो कीड़ो नी हूं। रूप न प्यार री कद चरित में कर। पण रात ने म्हूं म्हारी आंखियां मूमल रा चरित देख लीनो। मूमल ने कै दीजो जिण साथे थारो मन लागियोड़ो उण साथे रै। म्हारा थारे मत पड़।

समाचार सुण्या मूमल रै घणां ओपमी अरती जिवक गी। जदै समझी म्हैंदरो वमु भी आयो। सपना में बात भी आवती जो दोस पावो। मूमल ही उठी न बैठ अमरकोट आगी आप म्हारा म्हैंदरा रा मन रो वैम काढू। मूमल अमरकोट पूगी। म्हैंदरा नै समाचार भेज्या। म्हैंदरे देख्यो ईण रा हेत न ता पतवाणा। म्हैंदरे चाकर ने सीताम्यो। चाकर आयो कूदता कूदता मूमल रै डेरे पूगो "म्हैंदराजी

शब्दार्थ

मेहर

		पृ
मेरवो=	ढोर	
दुर्गा रा १० हाथ=	दसविद्या सोपान। दुर्गा दास, पर्वता रूपमयी महामंडळ मडाग्रंथ। पंचलोह त्रयशित सोधी पहाड़ सगो भूप माया सगळी हाथ डंडा दुस्मण गुम गमारो पोती धूर	६
मानर=	पनामा म्हेमां में रैवा वाळा हीमरा	७
दादाला=	मोटी मोटी दाढ़ां वाळा	८
पीम्मा=	हीमिज़ो	
मयो=	मोटो दूजो शीमप बम्म हेवा मे	
दरबार रा हाथ=	पमीमर, ज्ञानमनामी दूदूद, हनुवन्ती गौपत पतूरनामी	९
तिमोरता हाथ=	तरबार मे तरबार सू पटवाला के तरबार मे कमान सू पटवार द तरबार न हाथ सू पटवार दे कमान री वांमो बम्मार हाथ रे	

बगड़ाव= – हुलाय

पगाईत=; – पगाड़ा में कुमती करणियो

पैहर री हाथल=बाहर री भुजा २१

मागणो

कुरीयो पवन= कुरजाँ री हवा ११

पमर बोलो= घमर घमर होई १२

गाडियां= छलांगां

रागड़ो= मी जवान

मोचरके= कुई

बड़ी=। रम लेर १७

बोरदिया= वड़ी पमाणा रं हाडिया

पेट= हुनी १८

पाटी = पग री पाटी १०

पोरा= फूतरा ११

पवन री(=पदी= पवन जाण्या री छपाया री बरतन

पोता है= इंडी मे डरी मर १२

बाई= बाटे

मोदो= वोतो १३

बीमो= तनो बारनो १५

बीयलिया मँदा कुर्दविपन्न हुवेन १७

बोमरा= धौबारा पांतु

बागाम= बाटो

बांधने पर बार मीं बैठा है तरवार
चमाचपियां री मुसकां बांधने ९
धरडाटियो सांप= बिना जहर रो छोटो सांप १०
फौड केशार नं= मारन आयबियो
पान= भीला रा गांव ११
टू भैया= भीला रा गांवा में पैसा में १ पैसा
देवावाला १२
गुजरधरा= गुजरात
घोड़ा री जिनस= श्याम शाहमाम कुमाम रेवाल, एबियां
मर्मक लूण कमाल तमचाम कुरकी चारस
कुरत चाड़ री कुरंत, कमपरी संगुरी संवड़ी
कमंट पलापट्टी मोतिया तोड़ री पलट
हिरण चाल
मोरमा= पाव रे बारे १४
ललमार= माम छिनोड़े १५
कोटड़ी के बींटो रे=कोटड़ी मे पेर है १७
फटूब= दुश्मन १७
मातावण= मरम १७
कुट्टी= बाम पुठी १८
दवामण= मायण
बम्पावरी= मिनावर की १९
दुम्मज जिमंद= मोटा मुकटा वाळो महेस २
भींमां= भींई एक जात है जो ज्यादा चालकी पठा
मारो काम करता

बबड़ाय= — हटाय
पताड़ह=} — पताड़ा में कुसती करणियो
नैहर री हापल=नाहर री भुजा २१

नागजी

कुरीयो पवन= कुरजांरी हवा ११
चमर चोली= चमर चमर होई १२
माडियां=; छजावां
ढागड़ो= मी जवान
भांभरके= गुई
बडी=। दम डेर १७
बांधणियां= बई बनाया रे हांडिया
रोज= हुणी १८
पाती = पत री पाटी १०
घोटा= पु वरा ११
चमन पी[मरदी=चमन छागणा रो दमगावा रो बरतन
तोवा के= दुप्टी मे कही कर १२
बाड़= वाटे
गावा= वोवो १३
बोबो= छानो मारणो १४
बीवड़िया मंवा मु=विषनुन् एरेन १०
बोगरा= बोवारा घांगू
कागाम= बाटो

माळ= भाषा री पल्लो
माळो= खेत में रुखाळी करबा नै कबाड़ा माथै बैठबा
छोला री जगा ४०
धीव= रेत
४१

मोभा सपावरण बेळ

बेळू= धीवरी रो दूजो नाम ४२
मामा मासहुना नामा=भीख करता मागा
परकाव= दुनिया भला
मीना रो पोरसो= स्वर्ण पुरुष
मातुरी= पतळो
बाल= इच्छा ४६
पूनासियो= ढीगयो ५२
पतराम= चित्र री नाई ५३
बिसरी मोसड़= बहुरीसी परी
पूरलियो= छोटो पाटो ४५
बिमल गियो= पूस री नाई खिलखियो
माचळी= रेत री माचरो, जो पुजारिया पैरता करै।
जिण रै माड़ो नीं थ्यो डोरी सूं कमर पे
बांधै
२६
धर्मी रोट= धर्मी भेळ ६५
नी दु बा= बावरी कोल
६६

)

घासो डामी

७

हैठाणां= बरसां में ७१

रोहड़ रै= बंद करदे

माला सूं= मरम सूं ७४

हीया= लोवा

बोहियां म हेकम ७८

री वाणिज= बोहिया में मांयरी हाथां में कमायां री कोहिम ८२

पनाम= बीम

पनड़ी= रथ री मूमरियां

परेवो= कबूतर

बापोड़ो= कड़ ८३

बगड़ियां= मड़गड़ाया

बागो= सहायो ८७

हणो= जाळ ८८

तोव बालेमा= टूट जावेला ९१

पीड़= घोड़ा रै सूम री आवाज

तनर= दुनिया

थाभल लोवजी

९२

नर बकरा= मूछ हीरयो

मूरां= मूरां रा वैद

बलावरी= मांड पाणी रा तळावां में पाणी करै, एक वैद ९३

दुरगीयां= भूगर री कमोड़

हबकर= मरण ९४
मोम म्हालिया= मोम म्हालियो
काली कीच= काला मैं मेला कर
धेह= नाहर सूवर रै रैवा री जगा ९५
डोफर= घाव मारणो
मचकियो= लचकियो ९६
धुड़क्यो= लोपड़ायो ९७
खेव रैणो= मरणो
टूंक= सूवर रो मुंडा रा मायली हिस्सो ९८
रपट= लपक
चोटो= दंत रै लागणी चोटें
मूआंरी घूम= मांसरी घूमो ओह री डीक मांयने पोमोड़ी
डीक बणाय
घरावणा= तारीफ ९९
चू चियोड़ी= लाल चूं चियोड़ी १००
कीरयां= घाटी रो मूमको १०१
तरव= घूण
वीजलियां= बिजली
दीठंप रो मोलो=बीहोस वहे न पड़या लागे
धराक तिवरियो=उत्तर दिसा मैं बीजली चमके १०२
घसंगा रो काढ़ियो=घूरां रो
मैडा= मैडका
विदमो= चमकणो १०३

१०४

धाड़= पेट मे जोर रो दुखे

हे पीड़ी= पीढ़ा सू विकळ १०५

देवरे धोकवा= मंदिर में दरसण करवा १०८

नेतण= दही बिलोवाने मंवाणी खींचवा री रस्सी

मूमल

१२०

मीरवा= बाद म्हाकनो १२२

दाखो= नाम १२७

चामवा=पाणी री थाह लेणो ११०

विलम्बी= लिपटयोड़ी

विमासी= हेला कीमी १११

वाथडियो= हाथ

सीप री= चमकरी

चीतन= कड़ री एक जात रो ११९

द ल= देव १४०

पावटे= मूबे

धमकार=	मरण	९४
चांम न्हाखिया=	छोड़ न्हाकियो	
काली मींच=	काला नै भेळा कर	
पेहू=	नाहर सूवर रे रैवा री जगा	९५
डोकर=	डाल मारणो	
मसकियो=	मसकियो	९६
सुरणतो=	संभळतो	९७
खेत रैणो=	मरणो	
दूंत=	सूवर री मूंछा रो आगलो हिस्सो	९८
रपट=	लपक	
डोटो=	पेट रै लाकड़ी ठोकै	
सूळांरी सूंब=	भालरी सूवां लोह री नोक भालने पोयोड़ी नोक जमाय	
सरावणा=	तारीफ	९९
घूंमियोड़ी=	ध्यान घूंमियोड़ी	१००
पीपळा=	तारां रो झुमको	१ १
सरव=	पूरा	
बीभळिया=	विव्हल	
सीतंब रो झोलो=बैठोस जो न पकड़्या जावे		
उतराध झिमरियो=उत्तर दिसा में बीजळी चमके		१०२
भरया रो सकियो=पूरा रो		
केहरा=	सेवरा	
विवसो=	चमकणो	१०३

१०४

काढ़= पेट रै जोर रो दुखो

ई पीढ़ी= पीढ़ा सू बिचळ १०५

देवरे बोकणा= मंदिर में सरणम करणा १०८

नेतरा= दही बिलोवाने मंथाणी खीचणा री रस्सी

मूमल

१२०

मीरणा= बात म्हारली १२२

हाथो= काम १२७

बावणा=पाणी री बाढ़ मेली ११०

बिलमी= लिपटयोड़ी

बिमाणी= देया बीणी १११

बांवटियो= हाथ

चीर री= चमकती

खीमत= ऊट री एक चाल व्है ११६

डूथ= देय १४०

पावटे= मूरै

शुभ कामना



राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली,
१ मार्च १९५८

राजेन्द्र प्रसाद

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

के छप चुके हुये महत्त्वपूर्ण

प्रकाशन

अन्तर्ध्वनि हिन्दी गद्य गीत	३)
[illegible] गुलाब हिन्दी गद्य गीत	२)
राजस्थान का हृदय राजस्थानी दोहे	१)
मांझल रात राजस्थानी बातें	२)
मूमल राजस्थानी बातें	४)
कै रे चकवा बात राजस्थानी बातें	२)
हुंकारो दो सा राजस्थानी में बच्चों की बातें	॥)
राजस्थानी लोक गीत	६)
राजस्थानी दूहा संग्रह	२)
गिर ऊंचा ऊंचा गढ़ां	२)
राजस्थानी हरजस	३)
[illegible] चरित	३)
रवि ठाकुर विरचित [illegible]	१॥)
[illegible] विरचित [illegible]	३)
[illegible] री [illegible]	)
हिन्दुस्तान के हम चार [illegible] के संपादन तथा भारत राजस्थान और [illegible] के सांस्कृतिक [illegible] एवं [illegible] का विवेचनापूर्ण अध्ययन	३)

प्राप्ति स्थान

राजस्थानी संस्कृति परिषद्

१६४ ए. डी., बनीपार्क,

जयपुर

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत
के कुछ चुने हुये महत्त्वपूर्ण

प्रकाशन

[illegible] हिन्दी पद्य गीत १)
स्वन्त सुवास हिन्दी पद्य गीत २)
राजस्थान का हृदय राजस्थानी दोहे १)
मांझल रात राजस्थानी बातें २)
मूमल राजस्थानी बातें २)
के रे चकवा बात राजस्थानी बातें २)
हुंकारो दो सा राजस्थानी में बच्चों री बातें ।।।)
राजस्थानी लोक गीत १)
राजस्थानी [illegible] संग्रह २)
गिर ऊंचा ऊंचा गढ़ां २)
राजस्थानी हरजस १)
[illegible] चरित ३)
कवि [illegible] विरचित कृष्ण विलास १।।।)
[illegible] विरचित [illegible] रत्नमालिका २)
[illegible] रो [illegible] गीतमोद)
हिन्दुकुश के उस पार रानी मार्शिया की रूस यात्रा के संस्मरण तथा भारत राजस्थान और रूस के सांस्कृतिक सम्पर्क एवं समन्वय का गौरवपूर्ण अध्ययन ५)

प्राप्ति स्थान

राजस्थानी संस्कृति परिषद
१६४ ए. डी., बनीपार्क
जयपुर

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

के कुछ छप चुके महत्वपूर्ण

प्रकाशन

अन्तर्ध्वनि (हिन्दी गद्य गीत)	३)
रजस्वला गुलाब (हिन्दी गद्य गीत)	५)
राजस्थान का हृदय (राजस्थानी दोहे)	१)
मांझल रात (राजस्थानी बातें)	५)
मूमल (राजस्थानी बातें)	५)
कै रे चकवा बात (राजस्थानी बातें)	५)
टूंकारो री बात (राजस्थानी में बच्चों की बातें)	।।।)
राजस्थानी लोक गीत	६)
राजस्थानी दुहा संग्रह	५)
गिर ऊंचा ऊंचा गढ़ां	५)
राजस्थानी हरजस	३)
करणी चरित्र	३)
कवि जीवन् विरचित कुमार विलास	।।।)
जयोत्यानार्थ विरचित ज्योतिष कल्पलतिका	२)
हाडी रावण री बगसामी वीरभोग	)
हिन्दूकुश के उस पार (रानी साहिबा की रूस यात्रा के संस्मरण तथा भारत राजस्थान और रूस के सांस्कृतिक सम्पर्क एवं समन्वय का गवेषणापूर्ण अध्ययन)	६)

प्राप्ति स्थान

राजस्थानी संस्कृति परिषद

१६४ ए. डी., बनीपार्क,

जयपुर

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

के कुछ चुने हुये महत्त्वपूर्ण

प्रकाशन

प्राप्ति स्थान

राजस्थानी संस्कृति परिषद

१६४ ए. डी., बनीपार्क,

जयपुर